मिथिलाक विभूति

म.म. मुरलीधर झा

म.म. मुरलीधर झा

लेखक

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

मैथिली अकादमी, पटना

Scanned by CamScanner

मिथिलाक विभूति

म० म० मुरलीधर झा

लेखक

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

मैथिली अकादमी

पटना

मैथिली अकादमी-प्रकाशन—४८

प्रकाशक :

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना-८००००१

© मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-८००००१

प्रथम संस्करण : १९८०

प्रति : ११००

मूल्य : { अजिल्द ६·००
सजिल्द ८·०० }

मुद्रक :

मुरलीधर प्रेस

पटना-८००००६

प्रकाशकीय

मैथिली अकादमीक एक योजना अछि प्राचीन साहित्यकार लोकनिक जीवनी लिखाय प्रकाशित करब। एहि योजनाक पहिल पुस्तक 'उमापति' प्रकाशित भ' चुकल अछि जकर लेखक थिकाह डा० रामदेव झा। द्वितीय पुस्तक 'म० म० मुरलीधर झा' आइ अपने लोकनिक हाथमे अछि। एकर लेखक थिकाह मैथिलीक प्रख्यात कवि पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। एकर अतिरिक्त एहि लेखकक लिखल कविवर जीवन झाक जीवनी सेहो 'जीवन झा-रचनावली'क भूमिकाक रूपमे प्रकाशित भ' चुकल अछि। यदि आत्मकथाके सेहो एहि कोटिमे राखी तँ एहि वर्षक आओर दू गोट प्रकाशन एत' उल्लेखनीय अछि, पहिल 'म० म० डा० सर गंगानाथ झाक आत्मकथा' ओ दोसर प्रो० हरिमोहन झाक जीवन-यात्रा। एहि प्रकारें मैथिली अकादमी एक वर्षक अभ्यन्तर पाँच-पाँच उत्कृष्ट साहित्यकारक जीवनी प्रकाशित क' रहल अछि जे निःसन्देह सन्तोषक विषय थिक।

प्रस्तुत पुस्तकमे विद्वान् लेखक अपना भरि पूर्ण चेष्टा कयलनि अछि जे म० म० मुरलीधर झाक सम्बन्धमे अधिकसँ अधिक तथ्य प्रकाशमे आबय। परन्तु दुर्भाग्यबश हिनका विषयमे एहि पुस्तकमे जे किछु लिखल जा सकल अछि से मुख्यतः 'मिथिलामोद'क स्रोतसँ। नीक होइत जे हिनकासँ सम्बद्ध विविध स्थानमे अध्ययन-यात्रा कय तथा सौभाग्यवश एखन धरि जीवित हिनक शिष्योपशिष्य ओ सम्बन्धी लोकनिसँ साक्षात्कार कय अपेक्षित तथ्यक सेहो संकलन कयल जाइत। किन्तु एहिमे स्वभावतः अधिक श्रम ओ साधन अपेक्षित छल। तथापि लेखक अल्प समय ओ साधनमे जतबा सूचना द' सकलाह अछि ताहि हेतु ओ धन्यवादार्ह थिकाह।

एहिमे लेखक अपन लेखनी अधिक नहि चलाय चरितनायकक पँघ-पँघ लेख 'मिथिलामोद'सँ उतारि-उतारि पाठकके हुनक विचारधारासँ साक्षात् परिचित करयबाक शैली अपनओलनि अछि, ओ तेँ स्वभावतः एहिमे किछु उद्धरण-बाहुल्य लक्षित होयत जे सामान्य पाठकके किछु खटकि

सकैत छनि। किन्तु जे चरित-नायकक भाव ओ भाषा प्रत्यक्षतः ओ प्रामाणिक रूपें जान' चाहै छथि तनिका हेतु ई दुर्लभ उद्धरण सभ अवश्य उपादेय अछि।

आशा जे मैथिलीक विद्वान् ओ सामान्य पाठक दूनू एहि पुस्तकके उपयोगी पओताह ओ जिज्ञासु लोकनि एकरा आधार बना क' चरितनायकक विषयमे आगाँ आओर अनुसन्धान करताह।

श्रीकान्त ठाकुर

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

लेखकीय

मैथिली अकादमी प्राचीन साहित्यकार लोकनिक जीवनी लिखबाय प्रकाशमे अनबाक स्तुत्य प्रयास आरम्भ कयलक अछि। सौभाग्यवश हमरहु एहिमे सहभागी होयबाक अवसर देल गेल, सेहो एक एहन मातृभाषाक हित-चिन्तकक जे स्वयं आइसँ ७४ वर्ष पूर्व एहि प्रकारक कार्यने प्रवृत्त भेल छलाह।

ई निर्विवाद जे महामहोपाध्याय पं० मुरलीधर झा एक युगप्रवर्त्तक ओ आधुनिक गद्यक प्रतिष्ठापकक रूपमे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे सुप्रतिष्ठित छथि। एहन विशाल व्यक्तित्वक सम्यक् अध्ययन अपेक्षित अछि। एहिठाम समय ओ स्थान परिसीमित रहलाक कारणेँ सङ्कोच करय पड़ल अछि।

एहि ग्रन्थमे जतयसँ जे उद्धरण देल गेल अछि ओकर वर्त्तनी (लेख शैली) अविकल रूपमे राखल गेल अछि, एहिसँ अतिरिक्त अपन मन्तव्य अकादमी द्वारा स्वीकृत वर्त्तनीमे अछि। आशा अछि जे एहि अल्प प्रयासहुसँ हिनका व्यक्तित्व-पर जे प्रकाश पड़ि सकल अछि, भविष्यमे साहित्य अध्येता लोकनिक हेतु उपयोगी भ' सकत। तखन अल्पज्ञसँ त्रुटि तँ अश्वयम्भावी अछिए। तदर्थ "क्षमासारा हि साधवः"क अतिरिक्त विकल्पो नहिं।

सर्वप्रथम अकादमीक अध्यक्ष श्रद्धेय श्रीयुत श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालङ्कार' जी, मान्य श्रीयुत उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' ओ प्रकाशन उपसमितिक सदस्य लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे एहन सेवाक अवसर देलनि।

तदुत्तर साधन जुटयबामे आयुष्मान् डॉ० श्री रामदेव झा जे सहयोग कयलनि तदर्थ अनेकशः आशीर्वाद। वृक्ष रोपनिहारकेँ फलान्वित वृक्षकेँ देखि जे आनन्द होइत छनि तकर भागी हमहु छी। अन्तमे प्रेसक हेतु पाण्डुलिपि प्रस्तुत कयनिहार किशोर छात्र श्री मनोजानन्द चौधरीक प्रति शतशः शुभकामना।

संयोगक बात जे एहि ग्रन्थक चरितनायक श्रावणी पूर्णिमेसँ 'मिथिला-मोद'क प्रकाशन आरम्भ कयने छलाह आ हमरो ई ग्रन्थ ओही तिथिकेँ सम्पन्न करबाक सुयोग भेल। किमधिकं विज्ञेषु।

विनीत

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

श्रावणी पूर्णा, १३८७ साल
८ अगस्त १९७९ ई०

ऋषिनाथ झा

म० म० मुरलीधर झा

वंश-परिवार—

ब्राह्मणक पंजी व्यवस्थाक अनुसारेँ करमहे नरुआर मूलक वत्सगोत्रीय पं० होरिल झा झंझारपुर निकटस्थ भराम नामक गामक निवासी छलाह। पहिने ई गाम दरभंगा जिलामे पड़ैत छल, सम्प्रति मधुबनी जिलामे चल गेल अछि। पं० होरिल झाक बालक लक्ष्मी नारायण पाँजिक पं० चानन झा छलथिन। कहल जाइछ जे चानन झा बिकौआ भलमानुस छलाह जनिका नओ गोट विवाह छलनि। पहिल विवाह बछौर परगन्नाक अन्तर्गत राजनगरसँ अढ़ाइ कोस पूर्वोत्तर कोणमे स्थित श्यामसिद्धप नामक गामक निवासी पं० फकीरन झाक कन्यासँ भेल छलनि। पं० फकीरन झा सुभ्यस्त, सुखी सम्पन्न लोक छलाह। ताहि दिन कन्यादानीकेँ अपना ओहि ठाम बसा लेब समाजिक मर्यादा ओ प्रतिष्ठाक विषय मानल जाइत छल। तेँ पं० फकीरन झा सेहो किछु जथा-जाल द' अपना कन्याकेँ एतहि अर्थात अपना गाम श्यामसिद्धपहिमे बसा लेने छलाह।

हमर चरितनायक पुण्यश्लोक महामहोपाध्याय पं० मुरलीधर झा पं० चानन झाक एही धर्मपत्नीसँ उत्पन्न अपना पिताक द्वितीय पुत्र छलाह। ई सहोदर तीन भाँइ रहथि, ज्येष्ठ पं० सोनेलाल झा ओ कनिष्ठ पं० सुन्दर झा छलथिन। पं० सोनेलाल झाकेँ एकमात्र पुत्र पं० उपेन्द्रनाथ झा एम० ए० वी० एल० जे मिथिलामोदक व्यवस्थापक ओ मिथिलामोदक संस्थापक म० म० प० मुरलीधरझाक दहिना हाथ छलथिन। एतय स्मरणीय जे १९३६ ई०मे मिथिलामोदक पुनः प्रकाशन एही पं० उपेन्द्रनाथ झाक सम्पादकत्व ओ व्यवस्थापकत्वमे होअय लागल छल। ई लोकमे चुनचुन बाबू नामेँ प्रसिद्ध छलाह। चुनचुन बाबू भाँइमे एकसरे रहथि तथा महेश्वरी देवी, गुंजेश्वरी देवी ओ मुल्लरि देवी नामक तीनि गोट सहोदर बहिन छलथिन। चुनचुन बाबूकेँ एकमात्र बालक श्री अमरनाथ झा छथिन ओ तीनि गोट कन्या श्रीमती मोहिनी देवी, श्रीमती अम्बे देवी ओ श्रीमती आशा देवी छथिन।

म० म० जीक कनिष्ठ भाय पं० सुन्दर झाकेँ एकमात्र बालक पं०

शत्रुघ्न झा आ शत्रुघ्न झाकें एकमात्र बालक श्री मोहन झा ओ चारिगोट कन्या—भगवती देवी, कुन्ती देवी, दमयन्ती देवी ओ द्रौपदी देवी छथिन।

हमर चरितनायक म० म० जीक विवाह दरिहरे रजनपूरा मूलक सौराठ निवासी पं० गोवर्द्धन झाक कन्यासँ छलनि। यद्यपि म० म० जीकें तीन गोट विवाह सौराठ, ठाढ़ी ओ तेसर कोइलख, किन्तु सन्तति केवल सौराठहिक पत्नीमे भेलनि। ओ म० म० जीकें पुत्रशोकक दुःख सहन करय पड़ल छलनि जे १९१५ ई० आश्विन मासक मिथिलामोदक १०८ म उद्गारमे प्रकाशित "विक्षिप्त करुणा" शीर्षक पद्यसँ प्रमाणित होइत अछि, किन्तु हिनक जीवनक अन्तिम कालमे एकमात्र बारह वर्षय पुत्र पं० श्यामानन्द झा ओ दुइ गोट कन्या—अहल्या देवी ओ सुशीला देवी छलथिन।

श्यामानन्द झा समाजमे गण्यमान्य व्यक्ति, डाक्टर साहेब नामें ख्यात ओ सामाजिक उत्थान कार्यमे जीवन भरि लागल रहलथिन। हिनका ग्रामक समीप बाबूबरहीमे बाबू श्री जगदीश नन्दन सिंह (मधुबनी) द्वारा स्थापित हाइ इंगलिश स्कूलक प्रबन्धकारिणी समितिक सचिव पदपर रहि शिक्षाक क्षेत्रमे पछुआयल एहि क्षेत्रमे विद्याक प्रचार-प्रसारमे पूर्ण योगदान करैत रहलाह। हिनका पाँचगोट पुत्र छथिन सर्वश्री—सच्चिदानन्द झा, अच्युतानन्द झा, विनोदानन्द झा, यशोदानन्द झा ओ चन्द्रानन्द झा। श्यामानन्द झाक विवाह मङरपट्टी (मगदपट्टी) निवासी पं० नेहनाथ मिश्रक तेसर कन्याक संग १९३९ ई० मे भेल छलनि।

म० म० जीकें जे कन्या छलथिन अहल्या देवी तनिक विवाह कोइलख छलनि जाहिमे श्री भीमनाथ झा नामक एक दौहित्र ओ श्रीमती पार्वती देवी नामक एक दौहित्री छथिन जनिक विवाह नवटोल भेल छनि तथा दोसर कन्या सुशीला देवीक विवाह सुगौना छलनि जाहिमे श्री धरणीधर नारायण सिंह एम० ए० दौहित्र ओ श्रीमती मालती देवी (बी० ए०) नामक एक दौहित्री छथिन जनिक विवाह नाहर भेल छनि।

शिक्षा-दीक्षा—

हमर चरितनायक म० म० मुरलीधर झाक जन्म १८६९ ई० मे भेल छलनि। पितृभूमि भराम रहितहु हिनक पालन-पोषण सब किछु अपन मातृक श्यामसिद्धपहिमे भेल छलनि। ताहि समयमे ने एहि रूपें आधुनिक शिक्षाक

प्रचारे-प्रसारे छलैक ने आइ-कालिह जकाँ गामेगाम प्राथमिक पाठशालाक व्यवस्था। अतएव हिनका विद्यारम्भ भेलाक बाद प्राथमिक अक्षरादिक ज्ञान अपन पारिवारिके परिवेशमे कराओल गेलनि। छलाह ई जन्मतः परम संस्कारी तेँ ताहि दिनुक शिक्षा-प्रणालीक अनुसार 'शिशुबोध', 'अमरकोष', 'तर्कसंग्रह' आदि अभ्यास क' लेवामे हिनका विशेष समय नहि लगलनि। बिनु व्याकरणक प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कयने कोनो शास्त्रमे प्रवेश कठिन होइत छैक, किन्तु पाणिनीय व्याकरणक प्राथमिक ग्रन्थ 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' पढ़ओनिहार ओहि परोपट्टामे केयो नहि छलाह तेँ अगत्या हिनका 'मुग्धबोध' नामक व्याकरणक ग्रन्थ पढ़ि प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करय पड़लनि। ओहि समय अपना पंचकोसीमे प्रख्यात विद्वान पं० विद्यानाथ झा ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता गामहिमे छलथिन। वालक मुरलीधरक मेधा ओ ज्ञानप्राप्तिक पिपासा देखि मुग्ध रहैत छलाह। तेँ अतिशय स्नेहसँ ज्योतिषक ग्रन्थ सब पढ़व' लगलथिन, हुनके आग्रहसँ ई ज्योतिष शास्त्र पढ़व आरम्भो कयलनि। बड़ अल्प समयमे ज्योतिषक प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्तक' लेलनि। जिज्ञासु स्वभावक छलाहे, लोकक मुहसँ सुनल छलनि जे काशी विद्याक केन्द्र थिकैक। ओ नगरी जगन्माता श्री १०८ अन्नपूर्णाक थिकनि। ओहिठाम सबकेँ कोनहु ने कोनहु रूपेँ भरण-पोषणादिक व्यवस्था लागिए जाइत छैक। एही आशा ओ विश्वासक संवल ल' ई गाम छोड़ि, काशी जाय पढ़बाक संकल्प कयलनि। मातामह पं० फकीरन झा अपना दौहित्रक एहन उत्साह देखि आ पं० विद्यानाथ झासँ हिनक अप्रतिम प्रतिभाक प्रशंसा सुनि अतिशय प्रसन्न भेलथिन आ जावत धरि काशीमे कतहु सुव्यवथा नहि भ' जाइत छनि तावत धरि गामसँ खर्च वर्चक प्रवन्ध क' देवाक हेतु उद्यत भ' गेलथिन। ओहि समय मधुवनीसँ काशीक रेलक भाड़ा सावा दू टाका छलैक। ई किछु चूड़ा चाउर तथा दस टा टाका ल' गामसँ काशीक यात्रा कयलनि। सुसंयोगवश रानीकोठामे जाइत देरी आवासक व्यवस्था भ' गेलनि।

काशीमे ओहि समय म० म० पं० सुधाकर द्विवेदीक पूर्ण ख्याति छलनि। द्विवेदीजी गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेजमे ज्योतिषशास्त्रक प्राध्यापकक पदपर कार्यरत छलाह। साधारणतः मैथिल छात्र अन्यदेशीय पण्डितक लग थोड़ गोटे जाइत छलाह। हमर चरितनायक म० म० द्विवेदीजीक दर्शन कयलनि ओ अपन आन्तरिक अभिलाषा कहि सुनओलथिन। म० म० द्विवेदीजी हिनक परीक्षा लेबाक उद्देश्यसँ दू चारि गोट प्रश्न पुछैत गेलथिन ओ हिनकासँ तुरत

तुरत सब प्रश्नक उत्तर पाबि;' हिनक प्रत्युत्पन्नमतित्व देखि सहर्ष अपन शिष्य बनाय लेबाक हेतु प्रस्तुत भ' गेलथिन। एहन सुबोध शिष्यकें पाबि ओहो अपनाकें कृतार्थ बुझलनि तथा हमर चरितनायको म० म० द्विवेदीजी सदृश प्रख्यात ओ सुयोग्य गुरुकें पाबि अपनाकें धन्य-धन्य बुझय लगलाह।

कहल गेल अछि—"वंशो द्विधा, विद्यया जन्मना च" अर्थात् वंश दुइ प्रकारें चलैत छैक—विद्यासँ ओ जन्मसँ। पंचपिताक परिगणन करैत नीतिकार प्रथम विद्यादाताक गणना कयने छथि—"विद्यादाता, जन्मदाता, कन्यादाता तथैव च। अन्नदाता, भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः।" हमर चरितनायक अपना गुरुक विद्यावंशकें पूर्ण समुज्ज्वल बनओलनि। अपना गुरुएक समान महामहोपाध्याय पदवीसँ विभूषित, हुनके समान योग्य तथा यशस्वी भेलाह। स्व० अच्युतानन्द दत्त लिखने छथि जे जहिना म० म० पं० रामावतार शर्मा अपन अलौकिक प्रतिभाक प्रसादात् अपन गुरु पं० शिवकुमार शास्त्रीकें कृतकृत्य कयलनि तहिना इहो।

पहिने काशीमे पढ़निहार मैथिल छात्र लोकनिक ध्यान संस्कृत कॉलेजक परीक्षा दिस आकर्षित नहि भेल छलनि। म० म० पं० मुरलीधर झा समयक प्रवाहकें नीक जकाँ चिन्हनिहार छलाह तथा विचार-स्वातन्त्र्यक प्रबल पक्षपाती सेहो। अतः अपना गुरुवरक आदेश मानि संस्कृत कॉलेजक छात्रवृत्ति लेबाक हेतु प्रस्तुत भ' गेलाह। ताहिमे हिनक गुरु पूर्ण प्रयत्नशील भ' हिनका छात्रवृत्ति प्रदान करओलथिन।

कहल जाइत अछि जे मणिकर्णिका घाटक राजकरसँ उक्त संस्कृत कॉलेजक खर्चा चलाओल जाइत छलैक जाहि कॉलेजसँ ई छात्रवृत्ति पबैत छलाह। एही कारणें बहुतो मैथिल छात्र ओ किछु ईर्ष्यालु पण्डितो लोकनि हिनक उपहास करैत हिनकासँ यदा कदा पूछल करथिन—कहू, भोजनमे मणिकर्णिका घाटक धूआँक सुगन्ध रहैत छैक वा नहि ? परन्तु ई ओहि उपहासक व्यर्थता देखि बरोबरि ओकर उपेक्षा करैत छात्रवृत्ति पबैत रहलाह। सात वर्ष धरि मन एकाग्र क' गंभीर अध्ययन कयलाक बाद ज्यौतिष शास्त्रमे आचार्यक उपाधि प्राप्त कयलनि। यद्यपि हिनक अध्ययनक विषय ज्यौतिष छलनि तथापि ओहि संग ई साहित्यशास्त्रोक अनुशीलनमे लागल रहैत छलाह जाहि दिस हिनक स्वाभाविक अभिरुचि छलनि।

ज्यौतिष शास्त्रक ई उद्भट विद्वान भेलाह तकर कारण छल जे ई

प्राच्य एवं पाश्चात्य सिद्धान्त तथा फलित ग्रन्थक सम्यक् रूपें अध्ययन कयने छलाह। शास्त्रीय ज्ञानकें मुख्य ओ परीक्षोत्तीर्णताकें गौण मानैत छलाह। प्रश्नोत्तरमालामे एकटा प्रश्न अछि—"को गुरुरधिगततत्त्वः" तकर उत्तर कहल गेल अछि—"शिष्यहितायोद्यतः सततम्"—हिनका एहने अधिगत-तत्त्व गुरु भेटल छलथिन। दोसर कहल गेल अछि—"गुरुशुश्रूषया विद्या" एहि मूल मंत्रकें ई गसिया क' धयने छलाह। एक दिस सर्वगुणसम्पन्न गुरु आ दोसर दिस दिव्य-प्रतिभासम्पन्न शिष्य ई मणिकाञ्चनसंयोग हिनक प्रतिभाकें आरो विशेष रूपें चमका देलकनि। एही प्रसादें ई कृतविद्य होइतहि सर्वारम्भ पुरश्चर्यार्गा, अद्भुतसागर ओ बृहत्संहिता सदृश ग्रन्थक संशोधन क' अपन प्रकाण्ड पांडित्यक परिचय लोकक समक्ष उपस्थित कयलनि।

विद्याध्ययन सम्पन्न कयलाक बाद अल्पे वेतनपर ई नगवामे एक पाठ-शालामे अध्यापनक कार्य स्वीकार क' लेलनि। महर्षि पतञ्जलिक कहल छनि—"चतुर्भिश्च प्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति—आगमकालेन, स्वाध्याय-कालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेनवेति" अर्थात् विद्या चारि प्रकारें उपयोगी होइत अछि—आगमसँ, स्वाध्यायसँ, प्रवचन सँ ओ व्यवहारसँ। अतः आगम ओ स्वाध्यायक बाद प्रवचनक अवसर हाथसँ जाय देब उचित नहि बुझलनि। वेतन तँ प्रासंगिक वस्तु थीक, एतय तँ "व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यम्" सिद्धान्तकें अपनओलनि। ओहि समयमे यद्यपि हिनका आर्थिक कष्ट उठाबय पड़लनि, किन्तु से होइतो कहियो धैर्यक त्याग नहि कयलनि ओ कर्त्तव्यपथसँ विचलित नहि भेलाह।

जखन महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी संस्कृत कॉलेजक ज्यौतिषक प्रथमाध्यापकक पद त्यागि अंग्रेजी कॉलेजमे गणितक अध्यापक नियुक्त भ' गेलाह तँ महिनाथपुर ग्राम निवासी पं० दीनानाथ मिश्र जे संस्कृत कॉलेजमे ज्यौतिषक द्वितीयाध्यापक छलाह, ज्यौतिषक प्रथमाध्यापक अर्थात् द्विवेदीजीक पदपर प्रोन्नत क' देल गेलाह। परिणामतः द्वितियाध्यापकक पद रिक्त भ' गेलैक। ओहि समयमे उक्त कॉलेजक प्रिंसिपल छलाह डॉ० भेनिस महोदय। म० म० द्विवेदीजी प्रायः अपन प्रिय ओ मेधावी शिष्य पं० मुरलीधर झाक प्रतिभा ओ गंभीर शास्त्रीय ज्ञानक प्रशंसा बहुधा करैत रहैत छलथिन जाहि कारणे प्रिंसिपल महोदय पूर्वहिसँ हिनका प्रतिभासँ प्रभावित छलथिन। द्वितीया-ध्यापकक स्थान रिक्त भेलापर ओ स्वयं हिनकर जिज्ञासा कयलथिन आ बिनु कोनो आवेदन पत्र आमन्त्रित कयने हिनका ज्यौतिषक द्वितीयाध्यापकक

पदपर नियुक्त क' लेलथिन । ई ससम्मान उक्त पदपर कार्यभार ग्रहण क' लेलनि । ओहि पदपर रहैत अपन अनुपम वैदुष्य तथा कार्यक्षमताक प्रसादात् प्रथमाध्यापकक पद धरिकेँ समलंकृत कयलनि । पछाति महामहोपाध्याय पदसँ सेहो विभूषित भेलाह ।

हिनक पांडित्यक सौरभ काश्मीरक महाराजक कान धरि पहुँचि गेल छलनि । हिनका प्रति हृदयमे अत्यन्त आदरभाव जागृत होयबाक कारणेँ काश्मीरक नरेश हिनका बजबाय सम्मानपूर्वक सहस्र मुद्रा बिदाइ कयने छलथिन । म० म० जी जे काश्मीर यात्रा कयने छलाह ओ यात्रा वृत्तान्त लिखि मिथिला मोदक अनेक अंकमे क्रमशः प्रकाशित करओने छलाह । ओहि यात्रा वृत्तान्तकेँ पढ़लासँ ज्ञात होइत अछि जे हिनक सारस्वत ब्राह्मण एक शिष्य काश्मीरमे ससम्मान पंडितक पदपर प्रतिष्ठित छलथिन हुनके माध्यमसँ काश्मीर नरेश हिनक विद्या वैदुष्यसँ परिचित भेल छलथिन । ओहि यात्रा वृत्तान्तकेँ पढ़लासँ ईहो ज्ञात होइत अछि जे किछु किछु क' अँग्रेजीक व्यवसाय सेहो अपन छात्रावस्थामे कयने छलाह जकर छाप हिनक लेख आदिमे यदा-कदा यत्रतत्र परिलक्षित होइत अछि ।

यद्यपि म० म० जी राज दरभंगा द्वारा संचालित धोत परीक्षामे अनेक प्रकारक संशोधनक पक्षपाती छलाह आ से संशोधन नहि भेलाक कारणेँ ओहि परीक्षाक कटु आलोचना सेहो कतेक ठाम कयने छथि तथापि महाराजाधिराज स्व० रमेश्वर सिंह हिनका बजबाय धोती दय सम्मानित कयने छलथिन । संगहि 'मिथिलामोद'क हेतु १०० टाका सेहो दैत छलथिन ।

व्यक्तित्व ओ कृतित्व—

ज्ञातव्य थिक जे महामहोपाध्याय मुरलीधर झा जखन संस्कृत काँलेजमे द्वितीयाध्यापकक पदपर नियुक्त भेलाह तखन हिनकर सबसँ आत्मीय भ' गेल छलथिन पं० दीनानाथ मिश्र । मिश्रजी हिनकासँ वरिष्ठ ओ श्रेष्ठ छल-थिन । जाहि समय ई छात्र छलाह ताहि समयमे मिश्रजी ओही कालेजमे प्राध्यापक छलाह अतः गुरुवर्गक श्रेणीमे छलथिन, तथापि हिनका संग अनुजमित्रवत् मानि व्यवहार करैत छलथिन । उक्त मिश्रजीक सत्परामर्श ओ आग्रह, काशीस्थ मैथिल विद्वान लोकनिक सहमति ओ प्रोत्साहन तथा अपन प्रिय शिष्य कुमर बाजितपुर निवासी मैथिली भाषाक ख्यातनामा कवि पं०

कुशेश्वर कुमरक उत्साह ओ आयोजनसँ प्रेरित भ' म० म० जी एक "मैथिल विद्वज्जन समिति" नामक संस्थाक संगठन काशीमे कयलनि। एहि "मैथिल विद्वज्जन समिति"क माध्यमसँ काशीसँ 'मिथिलामोद' नामक हिन्दी मैथिली मिश्रित मासिक पत्रक संचालन, सम्पादन ओ प्रकाशन आरम्भ कयलनि। ई पत्र मैथिलीक दोसर मासिक पत्र छल। एहिसँ पूर्व विद्या वाचस्पति पं० मधुसूदन झा ओ पं० रामभद्र झा एम० ए०, एल० एल० बी०क सत्प्रयाससँ १९०५ ई० सँ 'मैथिल हित साधन' जयपुरसँ प्रकाशित होअय लागल छल जे किछुए वर्ष प्रकाशित भ' अकाले काल-कवलित भ' गेल।

हमर चरितनायक म० म० जी तेहन मुलग्नमे काशीमे पायर रखलनि जे काशी ए हिनक सम्पूर्ण कर्मक्षेत्र बनि गेलनि। काशीमे रहि सहस्रशः छात्रकेँ विद्यादान क' ऋषि-ऋणसँ मुक्ति पओलनि। अनुशासन पालनमे जेहने छात्रक प्रति कठोर छलाह तेहने अपनो प्रति। तेँ हिनक छात्र हिनकासँ जहिना धबाइत रहैत छलथिन तहिना ओ लोकनि आचरण ओ अध्ययनमे सावधानो रहैत छलाह। हिनक शिष्य-परम्परामे अनेक ज्योतिषशास्त्रक दुर्धर्ष विद्वान् भेलथिन जे मिथिला ओ अन्यान्यो देशमे हिनकर कीर्तिपताका फहरबैत रहलथिन। स्व० अच्युतानन्द दत्त लिखने छथि "गुरुजी अछि जे ज्योतिष ओ कर्मकाण्ड विषयक अनेक ग्रन्थक टीका कयने छथि। जाहि समय हिनक मृत्यु भेलनि ताहि समयमे ई 'विद्यापति-पदावली'क सम्पादन करैत छलाह जकर कार्य समाप्तप्राय छलनि, केवल भूमिका ओ ऐतिहासिक आलोचनाक किछु अंश लिखब अवशिष्ट छलनि।" दत्तजीक कथन छनि जे विद्यापति प्रेसक अधिपतिक उत्साहसँ ई कार्य भ' रहल छल। ने जानि ओ सम्पादित पाण्डुलिपि कतरा लग रहल जे प्रकाशमे नहि आबि सकल।

धार्मिकताक ओ सनातन धर्मक प्रति हिनका हृदयमे अविचल श्रद्धा छलनि। ई श्री १०८ महावीरजीक अनन्य उपासक छलाह जकर फलस्वरूप मरबाक समयमे ई बारंबार श्री १०८ महावीर जीक नाम कीर्त्तन करैत रहलाह। मरबासँ तीन चारि वर्ष पूर्व अपन गाम श्यामसिंहपुमे एक प्राचीन पोखरिक जीर्णोद्धार कराय ओकरा मोहार पर एक श्री १०८ महावीर जीक मन्दिर बनबाय काशीसँ मूर्त्ति ल' जाय स्थापित कयलनि आ एहि प्रकारेँ देवऋणसँ मुक्ति प्राप्त कयलनि। ई किंचित श्यामल वर्ण, शरीरेँ हृष्टपुष्ट, बुद्धिएँ अत्यन्त मेधावी, विचारेँ प्रगतिशील, प्रत्युत्पन्नमति ओ परम हास्यप्रिय लोक छलाह। धैर्यक मात्रा हिनकामे कतेक छलनि से एहीसँ अनुमान

कयल जा सकैत अछि जे अपन दुइ गोट पुत्ररत्नक अकालेमे कालकवलित भेलो उत्तर अपना जीवनमे कयल संकल्प सभक पूर्त्तिमे कनेको विचलित नहि भेलाह। दूरदर्शी ई केहन छलाह तकर उदाहरण दैत स्व० दत्तजी लिखने छथि जे मृत्युसँ तीन वर्ष पूर्व मासिक वेतनक तृतीयांश १०९ रु० मासिक पेन्शन पबैत काशीमे रहि अपना बासापर विद्यादान करैत मातृभाषाक सेवामे लागल रहैत छलाह, किन्तु मृत्युसँ किछुए दिन पूर्व अपना पेन्शनक आधा भाग ६००० रु० मूल्यपर सरकारक हाथेँ बेचि लेने छलाह।

मृत्युसँ किछु दिन पूर्व सपरिवार त्रिवेणी संगममे स्नानार्थ प्रयाग गेलाह। जखन प्रयागमे छलाह तँ अपन भातिज चुनचुन बाबूकेँ अनेक बेरि कहलथिन जे जँ हमर एतय देहान्त भ' जाय तँ शवकेँ काशी ल' जाय दाहसंस्कार करब। तत्काल तँ लोककेँ अनन्वित लगलैक, परन्तु ओही दिन अर्थात् ६ दिसम्बर १९२९ केँ जखन ई इह लीला समाप्त क' लेलनि तखन सब स्तम्भित ओ विस्मित रहि गेलाह। एतावता ई अनुमान कयल जाइछ जे ज्यौतिषक गणनानुसार हिनका अपना मृत्युक आभास पूर्वहि भेटि गेल छलनि। हिनक अन्तिम इच्छाक पूर्तिक हेतु मोटरसँ हिनक शव काशी आनल गेलनि ओ मणिकर्णिका घाटपर और्ध्वदैहिक संस्कार सम्पन्न कयल गेलनि। ताहि समय हिनका लग बारह वर्षक अनुपनीत एकमात्र पुत्र श्यामानन्द झा छलथिन। मृत्युक समय ई साठि वर्ष पूर्ण क' चुकल छलाह। "कलौ षष्टिः परंवयः" क अनुसार पूर्णायु तँ कहल जायत, किन्तु 'साठा तँ पाठा' लोकोक्तिक अनुसार परमायु नहि मानल जायत जे मैथिलीक हेतु परम दुर्भाग्यक विषय भेल। कारण म० म० झा जीक सबसँ पैघ अवदान मातृभाषा मैथिलीकेँ प्राप्त छैक। हिनक समस्त कृतिक अवलोकन कयला उत्तर केयो ई मानबाक हेतु प्रस्तुत भ' जयताह जे कवीश्वर चन्दा झा यदि आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छथि तँ महामहोपाध्याय मुरलीधर झा आधुनिक गद्यकेँ प्रतिष्ठापित करनिहार थिकाह। मैथिली साहित्यक इतिहासकार हिनका प्रति न्याय नहि क' उपेक्षित छोड़ि देने छथिन। यदि ई दीर्घायु होइतथि तँ मातृभाषाक संगहि समाजक कत बड़ उपकार होइतैक तकर आकलन अनुमानसँ नहि कयल जाय सकैत अछि।

हिनक मृत्युक समाचार प्रकाशित भेल तकर स्वरूप निम्नांकित अछि—

शोक! महाशोक!!

"सूचित करैत हृदय विदीर्ण होइछ जे आब म० म० पं० मुरलीधर झा

एहि असार संसारमे नहि छथि। ता० ६ दिसम्बरकेँ प्रयागमे अपन मानव लीला सम्वरण कैलन्हि। मोटर द्वारा हुनक शव काशी पहुँचाय अन्त्येष्टि भेलैन्हि। महामहोपाध्यायजी कतटा मैथिलक गौरव, मिथिला भाषाक भारतेन्दु और सनातन धर्मक एकान्त पक्षपाती छलाह, लिखबाक प्रयोजन नहि। हम शीघ्र हुनक पूर्ण सचित्र जीवनी प्रकाश करबाक चेष्टा कै रहल छी। 'मिथिला'क ऊपर हुनक असीम कृपा रहै छलैन्हि। शोक जे आब हमरा लोकनिकेँ यथार्थ गुरुक अभाव भय गेल एवं आगाँक मार्ग अन्धकारमय भै गेल। परमात्मा हुनका आत्माकेँ शान्ति एवं हुनक सन्तप्त परिवारकेँ धैर्य प्रदान करथून्ह। एक-एक कय क' मिथिलाक नक्षत्रगण अस्त भै रहल छथि, यैह विशेष शोचनीय, किन्तु परमात्माक विधानमे बाधा के देत ?"[1]

उपरिलिखित समाचारमे घोषित—"हम शीघ्र हुनक पूर्ण सचित्र जीवनी प्रकाश करबाक चेष्टा कै रहल छी" सर्वांशत पूर्ण नहि भऽ सकलनि। स्व० अच्युतानन्द दत्त लिखित ओ 'मिथिला'मे प्रकाशित जीवनीक प्रसङ्ग सम्पादकक टिप्पणीए एकर प्रमाण अछि। सम्पादक स्व० बाबू भोला-लाल दास लिखने छथि—

> "महामहोपाध्याय जीक एक उत्तम जीवनी प्रकाशित करबाक हेतु हम अद्यापि धैर्य धारण कैल, हुनक ब्लाक यद्यपि किछु दिन पूर्वहिसँ तैयार छल तथापि ओकरा अही कारणेँ प्रकाशित नहि करैत छलहुँ। पं० श्री बलदेव मिश्र, ज्यौ० आ० काशीक पठाओल जीवनी अपूर्ण जकाँ छल, अतः पुनर्वार लिखबाक हेतु हुनका आग्रह कैलिऐन्ह। उक्त पण्डितजीसँ विदित भेल जे दोसर जीवनी प्रस्तुत कय पठऔने छथि, किन्तु दुर्भाग्यवश हमरा नहि पहुँचल, अतः पूर्वक जीवनी तथा आनोठामसँ मिलाय लेखक महाशय हमरा आग्रहेँ ई जीवनी प्रस्तुत कैने छथि। "अभावे शालिचूर्णं वा" क स्मरण करैत हम एकरा सचित्र प्रकाशित करै छी तथा हुनक विशाल शिष्यमंडलीसँ करबद्ध अनुरोध करै छिऐन्ह जे ओ लोकनि मातृभाषा प्रेमक थोड़बो अनुकरण अपना महान गुरुक करथु।"[2]

---

१. मिथिला मासिक पत्रिका, अग्रहण १३३७ साल, वर्ष १ अंक ८ पृ० ३६१।
२. मिथिला पृ० ४९२।

एहिठाम एक विषयक उल्लेख अनावश्यक नहि कहल जायत जे म० म० पं० मुरलीधर झा ज्योतिषी छलाह। ओहि समयमे मातृभाषाक सेवामे प्रवृत्त होइत देखि हिनक अपन गुरुवर म० म० द्विवेदीजी पूर्ण प्रोत्साहित कयने छलथिन। समय समय पर लेखो लिखि क' दैत छलथिन। स्मर्त्तव्य जे ओहो ज्योतिषीए छलाह। 'मोद' युगमे मातृभाषाक सेवा करबाक हेतु क्षेत्रमे जतेक विद्वान अवतीर्ण भेलाह ताहिमे ज्योतिषीक संख्या सर्वाधिक छनि। किछु नामोल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत। यथा—पं० कुशेश्वर कुमर, कविवर सीताराम झा, ज्योतिषाचार्य पं० बलदेव मिश्र, पं० बुद्धिनाथ झा, पं० उमाकान्त झा, पं० षड़ानन झा, पं० प्रताप नारायण झा, पं० मधुकान्त झा, पं० अनूप मिश्र, पं० बबुआजी मिश्र, पं० हरी झा, पं० मुरलीधर ठाकुर पं० गंगाधर मिश्र आदि मिथिलामोदक स्थायी लेखक छलाह। हिनका लोकनिक गद्य-पद्यात्मक पर्याप्त रचना 'मिथिला मोद'मे प्राप्त होइत अछि।

म० म० झा जीक मृत्युपर श्री वैद्यनाथ मिश्र विद्यार्थी अर्थात् कविवर श्री यात्रीजी, कविवर सीताराम झा ओ पं० कुशेश्वर कुमर द्वारा रचित शोक-श्रद्धांजलि प्रकाशित भेल छल जे सब निम्नांकित अछि :—

"जाहि महाप्रभु पण्डितराजक कीर्त्ति सुगन्धि सदा गमकै अछि।
पुण्य प्रताप कृपाणक धार समान सदा चमचम चमकै अछि॥
से "मुरलीधर" भूतलमे नहिँ ई यदि कौखन ध्यान अबै अछि।
तौं पुनि देखि दशा निज देशक जानथि ईश्वर कोंढ़ फटै अछि॥

× × ×

जैखन नन्दनवन गेला मुरलीधर सन नाथ
मिथिला मैथिल मैथिली तैखन भेल अनाथ

तैखन भेल अनाथ आब भेटत की कैने।
अछि क्रोधित भै काल-व्याल मिथिलाकेँ धैने॥

हमरा सबहिक पूर्णकोश खाली तौं तैखन।
एहन एहन नररत्न, ताहि सौं चलला जैखन॥

अपने गेलहुँ जखन, रहल नहि बुध जनसमितिक लाली।
देवधामकेँ कैल अलंकृत मिथिला भेली खाली॥

—विद्यार्थी श्री वैद्यनाथ मिश्र

हे ! सद्भूप-रमेश-पूजितपदे ! आराध्य श्यामे ! अहाँ
कैलौं श्रीमति ! पक्षपात सहसा ई देवतामे अहाँ ।
स्वर्गाधीश बनाय भूपवरकें तुष्टा धरामे अहाँ ।
भैयो सम्मुख छी महेशि ! मिथिलावासीक वामे अहाँ ॥

श्री कामेश्वर सिंह भूपबल सौं ओ शोक जा गेल हा !
ता ई दोसर वज्रपात सहसा विद्वर्गमे भेल हा !
सन्तोषी शशिनाथ झा सन सुधी कें शून्य संसार कें
विद्याभाजन संग लै चल कतै गेला सदाचार कें ॥

ने जानी हम हाय ! दोष हमरामे जानि कै कोन ई
छीटै चीरल कांच घाव परमे दुर्दैव हा ! मैन ई ।
हा ! कष्टै पर कष्ट सन्तति सहै देखी अहाँ नेने ई
अम्बा मैं भुवनेशि ! बैसलि रही चाही अहाँकें न ई ॥

जे सत्काव्य-पुराण-ज्यौतिष-कला-तत्त्वार्थवेत्ता छला
श्रौत-स्मार्त्त-समुत्थ-संशयतमोवर्गादि-भेत्ता छला ।
साक्षात् श्री मुरलीधरोपम गुरु जे दिग्विजेता छला
लै गेलौं तनिको सुरालय अहाँ जे लोकनेता छला ॥

हा! भै गेल सुचक्रवाकगणकें ई आइ पूसी निशा
अम्बे ! भेल अमा चकोरगण कें शून्या दशोटा दिशा ।
तारामण्डल कान्तिहीन सबटा देखी विना चन्द्रमा
हा ! हा ! देखि पड़ै समस्त जनता भूमिस्थ मीनोपमा ॥

सायं वारिजवृन्दमे कुमुदमे भै गेल हा ! प्रात ई
श्यामे ! सङ्गहि सङ्ग अद्भुत महा भै गेल की बात ई ।
ने सूझै अछि पन्थ जायब कतै ? हा ! धीर कोना धरू
किंकर्तव्यविमूढ़ मूढ़मति छी हा ! दैव हम् की करू ॥

हा ! के राखत प्रेम तुल्य अपना सौं उच्च ओ नीच में
कै वीरासन ढुण्ढिराजहि जकाँ विद्वत्सभा बीचमे ।
सद्वाक्यामृत सौं प्रसन्न करते के आब विदवर्ग कें
श्यामे ! शीघ्र सुधारु ई विधि विया ब्रह्माक दुः सर्गकें ॥

—गुरुवर-पदवियोग-शोकाकुल सीताराम झा ।

तजि असार संसार, स्वयं सुरपुर चलि गेलहु ।
मिथिला भाषा अचल प्रेम संगहि लै गेलहु ॥
के मिथिला-साहित्य-मर्मकें आब विचारत
मिथिला भाषा हेतु लोककें के ललकारत ॥
शोकहुमे नहि शोक लेश अपनेमे देखल
गुरुवर ! "मैथिल मुकुट" छलहुँ, ई कहत न के खल ॥
गुणवर्णन के कै सकैछ अपनेक दयानिधि !
भेल अचानक वज्रपात मिथिलापर हा ! विधि ॥
के मिथिला-प्राचीन-रीति पर युक्ति जनावत ?
पँघ पँघ जन निकट, अपन प्रतिभा चमकावत ॥
सुमिरि सुमिरि ओ रूप, रहै धीरज नहि मनमे ।
कैनहु कोटि उपाय बढ़ै चिन्ता छन छनमे
थरथर काँपै लेखनी लिखि न सकै किछु बात ।
अहाँ । सनातन धर्मपर भेल कुठाराघात ॥[1]

—गुरुशोकाकुल सम्पादक 'कुमर' ।

उपरिलिखित शोक-श्रद्धांजलि पढ़लासँ म० म० झाजीक व्यक्तित्वपर अनेक प्रकाश पड़ैत अछि। एहि आलोकमे हिनक व्यक्तित्वक मूल्यांकन करबामे समीक्षककें पूर्ण सहायता प्राप्त भ' सकैत छनि ।

हमर चरितनायक अपना युगक एक प्रगतिशील विचारक, प्राचीनताक रक्षा करैत आधुनिकताक प्रबल समर्थक, निर्भीक स्वभावक, सनातन धर्मक कट्टर अनुयायी, प्रत्युत्पन्नमति ओ मातृभाषाक अनन्य सेवक छलाह। सामाजिक प्रत्येक गतिविधिपर दृष्टि राखनिहार ओहि समयमे हिनक समान दोसर केओ नहि छलाह। मातृभाषाक हेतु जे छटपटाहटि हिनकामे छलनि, यदि दू चारि गोटे हिनका जोड़क आरो रहितथि तँ आइ जाहि दुर्दशाक पाँकमे फँसल मैथिलीकेँ देखि रहल छी तकरासँ भिन्न किछु चित्र सभक समक्ष रहैत ।

आरम्भमे ई राष्ट्रभाषा हिन्दीक पोषके छलाह। हिनक अपन गुरु म० म० पं० सुधाकर द्विवेदीक भाषा मुख्यतः हिन्दिए छलनि; दोसर काशी नगरीक निवासी सभक सम्पर्क-भाषा हिन्दिए; तेसर जाहिठाम ई अध्यापक

1. मिथिला, पृ० ३८८, ३८९ ।

छलाह ततय अध्यापनक माध्यम सेहो हिन्दिए छलैक, एहि सब कारणें हिन्दीक अनिवार्यता छलनिहें, संगहि 'मिथिलामोद'मे यदा-कदा म० म० द्विवेदी जी लेख लिखि क' देथिन जकरा प्रकाशित करैत छलाह से हिन्दीएमे संभव छलनि। परन्तु मातृभाषाक प्रति समर्पित जीवन ओ दृढ़ अनुरागक कारणें जखन भागलपुर हिन्दी साहित्य-सम्मेलनक मंचसँ श्री जीवनाथ शर्मा नामक एक व्यक्ति मैथिली भाषाक निन्दा कयने छलथिन, जकर प्रतिक्रिया स्वरूप पं० त्रिलोचन झा प्रभृति उक्त अधिवेशनक बहिष्कार कयने छलाह, से सुनि म० म० झाजी अपन 'मिथिलामोद'मे ओकर घोर प्रतिवाद कयने छलाह तथा ओहि दिनसँ हिन्दीक कट्टर विरोधी भ' गेलाह से आजीवन रहि गेलाह। मोदमे जे हिन्दीक रचना छपैत छल से सर्वदाक हेतु बन्द क' देल गेल। मन्दार मधुसूदनमे जे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेल छलैक ताहिमे एक प्रस्ताव पारित करओलनि जे मैं० म० सभाक कोनो कार्यवाही हिन्दीमे नहि हो। जखन प्रो० राधाकृष्ण झा हिन्दीमे भाषण करबाक हेतु ठाढ़ भेलाह तँ हुनका भाषण करबासँ रोकि देल गेलनि जाहि कारणें ओ जीवनभरि मैथिलीक विरोधिए रहि गेलाह।

ई तँ सर्वविदिते अछि जे म० म० झाजी जाहि युगमे अवतीर्ण भेल छलाह से सामन्तवादी युग छल। मिथिलाक हेतु सर्वशक्तिमान मिथिलेशे छलाह, हुनक रुचि अथवा इच्छाक प्रतिकूल एको शब्द बाजब दुस्साहसे मानल जाइत छल। किन्तु म० म० झाजी उचित कथा बजबामे अथवा लिखबामे ककरो रोच नहि रखैत छलाह। एहि स्पष्टवादिताक कारणें हुनका अनेक कष्ट सहय पड़लनि, संघर्षरत रहय पड़लनि, परन्तु "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" एहि नीतिक अनुसरण करैत समाजक हेतु, धर्मक हेतु, मातृभूमि ओ मातृभाषाक हेतु "न ब्रूयात सत्यमप्रियम्" केँ कहियो नहि माललनि। हुनक एहि स्पष्ट-वादिता ओ निर्भीकताक उदाहरण हुनक लेख सबमे पर्याप्त मात्रमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

ई ककरहुसँ अविदित नहि जे राज दरभंगा द्वारा समय-समयपर धौत परीक्षा आयोजित होइत छल। ओहिमे उत्तीर्ण विद्वान मिथिलामे विशेष रूपें आदरणीय मानल जाइत छलाह। देशक गण्यमान्य लोक धन-धान्य सम्पन्न लोक श्राद्धादि कर्ममे गुणी लोकनिकेँ आमन्त्रित करैत छलथिन। ताहिमे विशेष रूपें लब्धधौतप्रतिष्ठ विद्वानहिक पुछारि होइत छलनि। परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तिकेँ मिथिलेश प्रमाणपत्रक संग एक जोड़ धोती दैत

छलथिन। जे प्रथम स्थान प्राप्त करैत छलाह तनिका दोशाला देल जाइत छलनि।

ई पूर्वमे कहि चुकल छी जे महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह बजबाय म० म० झाजीकें धोती द' सम्मानित कयने छलथिन, परन्तु ओहि धौत परीक्षाक प्रसंग हिनक दृष्टिकोण केहन छलनि से निम्नांकित उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि। म० म० झाजी लिखने छथि ·

"अपन देशमें जे क्यो धोतीवाला गुणिजन छथि ओ लोकनि 'मुनिजन मानसहंस' होइत अपन अपन उपस्थिति दय कृतकृत्य आशीर्वचन दैये रहल छथि, बहुतो गुणिजन धौतवस्त्रहि कों पाबि कल्याण कहि रहल छथि। आब रहलाह केवल बिनु धोतीक, नहिंओं गुणिजन तैयो गुणिजन कहैबा लय आखरि करैत महाबली लोकनि, ओहो लोकनि; मङ्गल गाबिये रहल छथि किन्तु 'श्री गणेशाय नमः कहि ग्रन्थो देखैत छथि, 'कारी-लाल'सँ तँ पश्चात् आँकल जैताह। आइकालिह जाहि घर मध्य कहियो दीप नहिं ताहु घरमें प्रकाश !!! उचिते थीक।

"ज्योतिषीओ लोकनि की मङ्गलक हाबरि लेबामें ककरहुसँ थोड़ किन्तु आनक आँकनिहार केहन ! हिनका लोकनिक केहन ! ग्रन्थक व्यवस्थापको की वेह शिकाह ? ओ लोकनि ! बिजौबानी, झाड़फूक, वैद्य, कविराज, डाक्टर हकीम ·· नटुआ पमरिया धरि जतबा पोलकय ओतबहु आदरक भाजन नहिं होइ—इहो बाजन कियैक रोकल रहत। सुधास्रावी श्रीमन्मिथिलेश महाराजकुमारक कोरबाहीओ कय दृष्टि समक्ष होएब तँ वक्ष्यमाण प्रश्नक उत्तर मासाभ्यन्तरहिमें पौलासँ प्रतिवर्ष दुइ 'युग्मवस्त्र' दय प्रायः यावच्छक्य बहुतो समाचारपत्र मध्य नामो उल्लेखित करायब। किन्तु उत्तम श्रेणी वाला कों—। मध्यम श्रेणीमें एक वर्षमात्र उपर उक्त पारितोषिक। अधम श्रेणीअहुमें एकमात्र। जे क्यो शुद्ध संस्कृतमें उत्तर करथि से उ० श्रे०—। विशुद्ध मिथिलाभाषामें मध्य० श्रे०। अशुद्ध संस्कृतहुमें उत्तर यथार्थ अध; श्रेणी।

"त्रिस्कन्ध ज्योतिषशास्त्रमें, ३० दिन समय। १० दिन जातक, १० दिन संहिता ओ १० दिन सिद्धान्त। प्रति स्कन्धमें पूर्णाङ्क १००। उत्तीर्णाङ्क ५० सँ ऊपर। १० दिनमें जाहि जाहि स्कन्धक जे जे ग्रन्थ प्रचरित अछि ताहि ताहि स्कन्धक ताहि ताहि ग्रन्थक ओ ग्रन्थकर्त्ताक उद्देश्य बा स्पष्ट करक दिक अक्षर देवनागर स्पष्ट हो। ई आदर मैथिल प्रतिष्ठितक हेतु कयल गेल अछि अर्थात्

जे वयो दश वर्षसँ उपर बाला शास्त्राध्यापक छथि ताहिसँ एहनका महाशय लोकनि घर बैसथु की "कारी-लाल" मे जाथु किन्तु हड़बड़ाथि जनु । हुनकहु लोकनिक हेतु उद्योग कय रहल छी यदि आबहु विचारि विचारि पढ़थि, नहि तँ जतेक परिश्रम धोती लेबा मे पड़ैत होयतन्हि से बेह लोकनि जनैत होयताह किन्तु आँकऽबाला 'स्वयमसिद्धः परान् साधयति !!! ओ ! असिद्ध नहिं निषिद्धो । जँ से नहि तँ कतेको उत्तम उत्तम ज्योतिषी लोकनिक नामो नहिं चोर बनोल उत्तीर्ण—कहू ईकोना हो। तखन कहब येह जे गुरु गुड़, चेला चीनी, होओ—एहिसँ उत्तम येह जे कनखौ डाँड़मे बान्हि कूदथु अधिके पौताह ।

"ओ ज्यौतिषी लोकनि ! कतबौ छटपटायब श्रीमान् मिथिलेश महाराज-कुमारक जय गाबि गाबि कुदैत रहू । जँ एतेकक मनोरथ पूर्ण भय जेतैक तँ डाली झारि ब्रह्माहुक पूजा होयबे करत—

'मिथिला मोद' दिशिसँ ज्योतिष शास्त्रमे एकेटा—

"ज्यौतिषशास्त्र काँ वेदसँ कोना सम्बन्ध ?"

एहि प्रश्नक उत्तरमे युक्ति ओ आर्ष प्रमाण स्वीकृत होएत । तीनू स्कन्धक व्युत्पत्ति देखल जाएत । केवल 'यज्ञकर्मप्रवृत्ताः" सँ काज नहिं चलत । उत्तर देखनिहार असिद्ध नहिं जगत्प्रसिद्ध रहताह । उत्तर लिखबाक काल निरीक्षक (देखयबाला) उत्तरकर्त्ताक परिश्रम, बुद्धि ओ धर्म । एहि मध्य ककरो चलाकी काज नहिं करत। से कयल जायत तँ देश भरि नामी तँ उभयथा किन्तु धोती नहिं—।

"ओ धोतीबाला ! वा बिनु धोतीबाला ! थोड़ेक दिनधरि अपन 'सिलेट-पेनसिल' कैं स्थिर राखू । श्रीमान् मिथिलेश-महाराजकुमारक जन्मलग्नादि हेतु जनु छटपटाइ । दान होयबे करतन्हि स्वस्त्ययनो कतेक होइतहि होएतन्हि, थोड़ेक दिन अपन राजयोगक भोग अपनहि करू—केवल 'चिरंजीवतु सः' ई कहैत जाउ । जँ सतरञ्जक खेड़ाक निर्वाह होइत छैक तँ अपनहु लोकनिक होयते कोनो चिन्ता नहिं । धोती-सोती किछु नहिं थिक एतवा अवश्य जे 'मिथिला-देशमध्य' आदर नहिं होइत अछि । एहि दुखैं की देशत्याग करू वा सबहि विचारि एहि शास्त्रक पठन-पाठनक ह्रास करैत जाउ । यदि व्यवस्थासँ रहैत जायब सर्वत्र आदरे, से नहि रखलासँ जे दशा होमय बुझ से की आइओ काल्हि देखौनहि बुझल जायत, स्पष्ट (खुलासा) अछि ।

एहि उपर कथाक ध्वनि ई नहिं थिक जे धोती विद्वानक परिचायक नहिं थिक, किन्तु एहि परीचयसँ लाभ की ? पूर्व समयमे धोतीक अवसरमे

दरभंगा जाय जे क्यो परिक्षामध्य उत्तीर्ण नहिं भय गाँम आवथि तनिका घरक पनिभरनीओं पंडित नहिं बुझन्हि ओ जे क्यो उत्तीर्ण होथि तनिका मिथिला देशभरि जतय कतहु काज (उपनयन यागादिक) होइक निमन्त्रण दैन्हि ततय बिदाइ लय कृतकृत्य अपन शास्त्रक यथाकथंचित् व्यवसायो रखने रहथि। आइ काल्हि ! श्री ५ मान्क ओतय एहि विद्या दिशि दयादृष्टि थोड़, कियैक तँ स्वयं सर्वविद्याप्रवीण। अरे ! ककरा कहू अपनहु दिशि देखैत छी तँ एक सेर माँछक खोँचड़िक हेतु नारक टालहिक आडम्बर !!! विनु जड़िक 'अमरलत्ती वा जड़िमोथी,' छुवितहि उतान ! वहुतो तँ एहने छी ककरा कहू ? अस्तु। तथापि 'कठिया लाड़नि' खीरिअहि मे पूर्व व्यवहार कयल जाइत छल आब सुपक्व ओ परिपक्व विद्यहु मे प्रयुक्त कयल जाय ई उचित नहिं।

"एही शास्त्र सभैक परीक्षा श्री १०८ मान् सम्राट भारतीयानेक राजाधिराजक ओतय होइत अछि। बड़ौदा, वुन्दी, जयपुर इत्यादि अनेक स्थलमध्य येह लेखपरीक्षा वा कतहु मुखपरीक्षा किन्तु एहि प्रकारक शुष्क पारितोषिक ओ शास्त्रनियमावली कतहु नहिं। अश्चर्य ! प्रायः के नहिं ई जनैत होएत जे हमर श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर समान संस्कृत विद्यारसिक ओ मर्मज्ञाता अन्य वेहटा। तखनहु येह दशा !!! अति क्षुद्र ई विवेक उक्त श्रीमान्क समीप कियैक नहिं उपस्थित होइत अछि जे एहि कठिनातिकठिन परीक्षा लय हम कोन अपूर्व पारितोषिक दैत छिऐक जाहिसँ एहि दीन पण्डित लोकनिक उपजीवनमे सहायक होइक। देखैत तँ छी पौने दूइ टाकाक पीअर धोती। ताहिसँ आगाँ—जे अपना शास्त्रमे सर्वोत्कृष्ट भेलाह तनिका २०वा २५ टाकाक दोशाला। ताहुसँ आगाँ—"दैवी विचित्रा गतिः" कयने हम धोतिहवा पण्डित थिकहुँ मुँह बौने छी जे हो दशा ७मा वर्ष दुई टाका वा चारि टाका कतहु भेल तँ भेल नहिं तँ ओहो नहिं। हाहा ! केहन विचार ! की अधिक शास्त्रक मर्मज्ञाता भेलाक येह परिणाम ? यदि वा श्रीमान्क बुझने क्यो पण्डिते नहि तखन तँ इहो 'भण्डारा' बन्दे कयल जाइत सेह उत्तम छल। श्रीमान्क ओतय जे पण्डित लोकनि छथि से लोकनि तँ 'जीजी' कहि अपन जीवन बचबैत छथि। भला एहि दान सँ के दरिद्र भेल अछि वा दान ग्रहण कय के महाराज भेल अछि ? जे हो। श्रीमान्क विद्यानुरूप विचार क्यो नहिं कहि सकैत अछि। सर्वथा श्रीमान् काँ उत्तम यशस्कर ओ फलप्रद येह होयतन्हि जे संस्कृत विद्याक 'टाइटिल'—

परीक्षा जाहि-जाहि स्थलमे (यथा —कलकत्ता, काशी ओ पंजाब एहि स्थान सभहि मध्य) होइत छैक तत्तय अपना नामपर किछु पारितोषिक राखि देल जाइत।

"अथवा बहुतो पण्डित लोकनि जे क्यो परीक्षा देताह से लोकनि अपन अपन घरक काज त्यागि दिन-राति परिश्रम करताह, शास्त्रक स्नेह छुटिओ गेल छन्हि तथापि स्नेहव्यय करताह। एहि स्थल मे विचार करबाक थिक यदि 'बराहिलिये' करितथि तैयो २ वा ३ टाकासँ न्यून मासिक तँ नहि होयतन्हि तखन घरक काज त्यागने जे हानि होयतन्हि ओतबा ओतबा जे क्यो मिथिलाक पण्डित छथि सभैक उपर 'पाण्डित्यकर' (Learning tax) लगा देल जाय। जाहिसँ आगाँ ने क्यो पढ़ताह, ने ई असमञ्जस महोपद्रव होएत। अहह ! देखू त जे मरि पछड़ि उगैत डूबैत पार भय गेलाह तँ विषय ओहने जे—दुइ गोआर जाड़ मास मे कोनो नदीक एहि पार ओ ओहि पार महीसि चरबैत छलाह ओ नदी अथाह छलैक, एक गोटे उच्च स्वरेँ बजलाह जे 'ओ दोस्त एन्नी आउ एन्नी, एकटा एकान्तो करब'। दोसर जे गोआर छलाह से पण्डितजी लोकनिक दशाकेँ पबैत नदी पार उतरि समीप जाय पुछलन्हि जे कहू की एकान्ती करब - ओ कहलथिन जे "ओ दोस्त ! आइ राति पसरमे महैं कोन्नी खोलबै" आब कहू एहने की दोसर ? यदि धौतवस्त्रार्थं नियमावलीक अनुसार उत्तीर्णता निष्पक्षपात हो त ई धोती एहि लोक मे उपकारक की परलोक मे ? नियमावली विज्ञापन करैत अछि जे ई धोती स्वकुलरीत्यनुसार आगामी…। भला व्यवस्थापक महानुभाव क्षमा करथु हमरा बहुत विनय करैक अछि। जाहि महक प्रथम जिज्ञासा जे 'नियमावलीओ' स्वकुलरीत्यनुसारे की अभिनव ? सेहो रहो। द्वितीय—एहन लेख-परीक्षा ककर अनुसार ? इहो रहो। तृतिय —उक्त शास्त्र सभहि मे ग्रन्थक व्यवस्था ककरा योग्यता कैं गबैत अछि ? इहो गती होओ। चारिम — प्रश्न दय संख्या (नम्बर)क विभाग ककरा वंश कैं गनैत अछि ? एवं कतेक लिखू – अनर्थानर्थं !!! हम कथमपि ई विश्वास नहि करैत छी जे परम करुणावरुणालय श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुर एहि परम असमञ्जस स्वच्छन्द-पाण्डित्य परित्रायक नियम पर कनेको दृष्टि देलन्हि अछि। ओ ! उपर उक्त विषयक व्यवस्थापक पण्डित जी !

"यदि पथि विपथे वा वर्त्तयामः स पन्थाः"

एहि 'उदयनाचार्य'क श्लोकक प्रथम चरणक अंतिम भागक आचरण करैत

छी किन्तु ओकरे आदि भाग—

"वयमिह पदविद्यां तर्कमान्वीक्षिकीं वा"

एकर की अर्थ ? आबहु अपना चित्तकें धिक्कारू—जे राजद्वारक केहन आज्ञा, केहन कार्य ओ ताहि कार्यक की परिणाम इत्यादि किछु नहिं विचारि जहाँ श्रीमान्क इङ्गित-(इसारा)—भेल की शीघ्र—(चट)—व्यवस्था रगड़ि प्रस्तुत कय दैत छी ? आइ कालिह सूची-पत्र देखि ग्रन्थ नाम राखब ओहने होइत छैक—जे रेखागणित, प्रश्न (१) जाहिमे पूर्णाङ्क १८। भला कहू तँ रेखागणित स्वकुलरीत्यामुसार की वाह्य ? रेखागणित कँ अध्याय ? किछु नहिं ! ताहिमे एक प्रश्न की बुझि राखल गेल ? जाहि मध्य पूर्णाङ्क देबामें मुक्तहस्त १८। लघुजातक ओ बृहज्जातक एहि दुनूमें परीक्षा भेलो ताकँ ओ केशवी ओ श्रीपति एहि दुनूक गुरुताकें तौलि अंकन कयल अछि। अपनेक समीप में ज्योतिषी यदि नहिं आबि सकैत छथि तखन तँ ज्योतिष शास्त्रक नामो अधलाहे या यदि छलाह तँ कोन कुल,—ई नहिं बुझि पड़ैत अछि। ओ महाशय ! ई विषय तँ बुझले छल जे नियमावली बनबहि पड़त तखन तँ उचित छल जे कलकत्ता, काशी, बड़ोदा, जयपुर इत्यादि स्थलक नियम कँ देखि समय, ग्रन्थ, विषय ओ परिश्रम विचारि तकर पारितोषिकहुक दिशि किछु दृष्टि दय नियमकँ हृदयमें अनितहुँ। श्रीमान् महाराज बहादुरक कोना ई अभिप्राय होयतन्हि जे प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित होओ ओ अप्रतिष्ठित प्रतिष्ठित होओ। तखन के एहन विचारक थिकाह जनिक विचारँ उत्तीर्ण ओ अनुत्तीर्ण दुनूक नाम छपि प्रकाशित कयल जाइत अछि। की अनुत्तीर्ण भेलासँ पुनः ताहि शास्त्रक व्यवसाय कयल जायत ? श्रीमान्,मिथिलेश महाराज बहादुरहिक पिता वैकुण्ठवासी महाराज बहादुरक समयमें 'नवानी'क 'मुक्तेश्वर झा' ज्योतिषी राज पुरस्कृत छलाह। हुनक भाय 'लाल झा' ज्योतिषी धोतीक नाम सुनि परीक्षा देलन्हि किछु दिन गड़बड़ भेलन्हि अतएव पुनः दरभंगहिसँ काशी आबि परिश्रम कय देश जाय परीक्षा देलन्हि ओ उत्तीर्ण भेलाह। ताहि दिन एहने महिमा छलैक। आब की, किछु नहिं।

"परिणाम लोकमे येह होइत अछि जे बिनु बुझनहि कतेको महानुभाव 'धोती' नाम धरि बुझैत (अकचि दकचि शास्त्र पढ़ि एम्हर ओम्हर घूमि टहलि समाजमे अपन प्रतिष्ठा बचबैत 'यथा कथंचित' कुल मर्यादाक व्यवहार पालनहि दिशि लागल लोकमें पंडितजी, ज्योतिषीजी इत्यादि नामसँ प्रसिद्ध रहैत छथि किन्तु) अपन योग्यताकें नहि बुझि ऊँचापरक फल लेबै लय बाँओन सन

भेल 'दरभंगा' प्रतिष्ठाहिक हेतु अबैत छथि। ओ वस्तुतः उत्तीर्ण कोना होयताह; जनु होथि। ओहो महापुरुष लोकमें बाजि देथु जे छपि जैतन्हि तँ कोनो चिन्ता नहि, परन्तु लोकमें अपन प्रतिष्ठा बनल देखलक की भण्डा फुजल। आब 'धोती' होइन्हि वा नहिँ विशेष एतबा जे कात करौट माङि चाङि स्वच्छ "धोती, त्यौनी" रखैत छलाह अछि सेहो बन्द—तँ आब कहक थिक जे 'धोती लेब कहाबै की देब, एहिसँ पंडितजीक प्रतिष्ठा की अप्रतिष्ठा। एखनहुँ धरि तादृश महानुभाव छथि जनिका अनुग्रह कय 'धोती' देबाक विचार भेल, वजलाह जे हम 'सूतल धोती' नहिँ लेब। अरे ओ विस्मृतशास्त्र ! जागल धोती नहिँ होएत। ओ ! अहाँकें ओ शास्त्र नहिँ अबैत अछि जाहि लोभेँ पुछल जाइत जे 'तब की की लेतैक' कोदारि लेब, खुरपी लेब ? ओ अभागल ! 'राज्ञा प्रीत्यार्ऽपितं च यत्' इहो बिसरल ! अधिक की नवमक अष्टम भय हुनको गलग्रहे भेलिअन्हि ! धन्य महातमा थिकहुँ।

"एहि धोतीक विषयमें लिखब निवृत्त नहिँ होइत अछि तथापि आब थोड़ेक विज्ञप्ति कय समाप्त करैत छी। हमर श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर सब किछु कय सकैत छथि अतएव की तँ उक्त शास्त्र सभँक ताहि ताहि ग्रन्थक उत्तीर्णतामे प्रतिवर्ष 'बड़ोदा' जकाँ किछु किछु पारितोषिक टाका नियत कय देथि सर्वथा उत्तम। एहिसँ अवश्य मिथिलामें विद्याक उन्नति होएत। अथ यदि ई टाका देब असह्य देखल जाय तँ एतबौ हो कि जे क्यो उक्त शास्त्र मध्य उत्तीर्ण होथि से भारताद्यधिपति श्री १०८ मान् सम्राट्हुक ओतय प्रतिष्ठित बुझल जाथि। एहि दूनूमें किछु नहिँ भय धोती व्यर्थ देल जाइत अछि। एहिसँ उत्तम येह जे तीर्थादिकमें अनेक 'भिखमङ्गा' अप्रयोजक भेल पड़ल रहैत अछि ओकरा सभक ओतय ई 'धोती' बाँटल जाय अधिक फलप्रद होतत ई विषय के नहिँ बुझत ? एकटा और राज॰ पण्डित धोतीक व्यवस्थापक लोकनिक ओतय प्रार्थना करैत छी जे अपने लोकनि श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर काँ ईश्वर विशेषतः मिथिला देशक बुझि अपनाकें तदाज्ञाकारी ब्रह्मादिक देव समान जानि मिथिलास्थ जन साधारणमें विद्याव्यवसायादि सृष्टिक अनवसरमें ध्वंस जनु कय दी। एहन अनीति कार्य कयने देश देशान्तरमें हाहाकारातिरिक्त और कोनो टा लाभ नहिँ, अधिक की।[1]........."

---

1. मिथिलामोद उदय २५ सँ २७ पृ० २४ सँ ३२।

एहि उद्धरणमे जाहि प्रकारक व्यंग्यओ तिक्ख भाषाक प्रयोग कयल गेल अछि से म० म० जीक स्पष्टवादिताक प्रमाण उपस्थित करैत अछि। एतबे नहि, एही धौत परीक्षाक प्रसंग एक दोसर उद्धरणपर दृष्टिपात कयल जाय। म० म० झाजी उक्त परीक्षाक विरोधी छलाह तकर कारण छल ओहू समयमे जे परीक्षार्थी परीक्षकक चाटुकारितामे निपुण होइत छलाह ओ उत्तीर्णता सुविधापूर्वक प्राप्त क' लैत छलाह। एहि तथ्यक उद्‌घाटन निम्नांकित उद्धरणसँ होइत अछि—

"सुनलाँ गेल अछि जे धौत परीक्षा होएत ? पुनः के एहि प्रस्तावकेँ चलौलक ? करूणानिधान ! जँ श्रीमान् काँ विद्वानक आदर करैक हो तँ अनेक आन प्रकार छैक, जँ अनादरहिक इच्छा हो तँ के बाँचि सकत, वस्तुतः नहिँ, परीक्षा देनिहारकेँ प्राणान्तिक परिश्रम ओ कतेको परीक्षक ४ मास पहिनहिसँ सेवा शुश्रूषा लेबै लगैत छथि, तखन तँ कलम उनटि टेढ़ सोझ ओ सोझ टेढ़ भै अशुद्धकेँ शुद्ध तथा शुद्धकेँ अशुद्ध देखबैत अछि। श्रीमन् ! धौत परीक्षाक नियमावलीमेँ अजीर्ण जीर्ण ग्रन्थ सब छैक, जाहिमेँ लेख, ततै फल बहुधा टेढ़ सोझ, अधिक लिखब व्यर्थ, तथापि एतबा प्रार्थना जे धौत परीक्षा जनु होओ।

"एहि हमर अनुरोधपर कतेको पण्डितजी लोकनि गारि पढ़ताह से पढ़थु किन्तु ओ व्यर्थ परिश्रमी एतेक छथि जे हुनका लोकनिकेँ अपन उपकारापकार नहिँ सुझैत छन्हि।

"जँ धौत परीक्षामेँ ई नियत कैल जाइक जे धौत परीक्षामेँ जाहि क्रमैँ उत्तीर्ण होथि ताही क्रमैँ श्रीमानक आश्रयमध्य जे कोनो स्थान रिक्त हो ताहिमेँ वेह लोकनि नियत कैल जाथि, तँ किछुओ भला जीवनाशा रहतैक, वा वर्षमेँ पाँचो टाका वर्ष भिक्षे होइक, ई सब किछु नहिँ भै धौत परीक्षासँ श्रीमान् काँ की लाभ ओ उत्तीर्ण व्यक्ति काँ कोन फल एहिपर ध्यान देबाक थिक।

धौत परीक्षा सुनि जे एखन रति जगौअलि तथा ग्रन्थक धाङनि होएत ताहिसँ उत्तम तँ ई होएत जे जे क्यौ बुद्धिमान पण्डित महोदय कोनो ग्रन्थ अभिनव बनाय श्रीमानक ओतै अर्पण करितथि, ओ ग्रन्थ सब पण्डित मण्डलीसँ देखल जाइत ओ तदनुसार ताहि पण्डितक आदारार्थ किछु पारितोषिक देल जैतन्हि तँ एक ग्रन्थक प्रचार दोसर ग्रन्थ निर्माताकेँ यशोलाभ तथा किछु

द्रव्यलाभो, तेपर श्रीमान्क नामसँ ग्रन्थ सब छपैत ताहिसँ श्रीमान्क अचल कीर्त्ति ओ परमपुण्य इत्यादि अनेक देशक उपकार होइत।

"धन्य थिकाह पार्श्ववर्त्ती पण्डितजी लोकनि जे कनेको विचार नहि कै भारी प्रस्ताव उठाए झट अनुमोदन समर्थन कै प्रकाशित कराए दैत छथि। जँ हम अनुचित बजैत होइ तँ हमर कान पकड़ल जाए; भला येहु पण्डित जे टाका दिशि टकटकी लगौने डरेँ उचितो कथा नहि बाजब? जँ आइ हमर श्रीमान् राजर्षि, तपस्वी, विद्वान्, विवेकी आदि सकल गुण गरिष्ठ छथि तखनहु जँ आन उचित वक्तव्य नुकौनहि रहब तँ कोन दिनमे काज आओत।

हम आशा करैत छी जे यथावसर अवश्य हमर अभ्यर्थना सुनल जाएत ओ तकर समुचित विचारो कैल जाएत।[1]

—श्री मुरलीधर झा"

ओहि सामन्तवादी युगमे एना बोईंवा छोड़ा क' स्पष्ट बजनिहार केहन प्रगतिशील ओ निर्भीक भ' सकैत छथि, केहन दुस्साहसी ई छलाह से सहज अनुमान कयल जाय सकैत अछि।

ई तँ भेल हिनक निर्भीकताक उदाहरण। एहि प्रसंग विशेष जिज्ञासुकेँ हिनक लिखल महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक "जीवनिका" पढ़बाक चाहिअनि जे क्रमशः मि० मोद मे प्रकाशित छनि।

ई कट्टर सनातनधर्मावलम्बी छलाह। धर्मक प्रसंग समाजमे जतय कतहु उपेक्षा, अनादर, अवहेलना वा ह्रास दृष्टिगोचर होइनि तकर तुरन्त 'नोटिस' लेब आ कड़गर छड़ीक प्रहारसँ तकर 'खबरि' लेबामे ने घबाइत छलाह ने पछुआइत छलाह। मिथिलेश रमेश्वर सिंह गंगाक सम्पूर्ण धाराकेँ जे पंजाब दिस ल' गेल छल तकरा तोड़बओलनि आ एहु धारामे किछु अंश जल प्रवाहित करओलनि जाहि हेतु भारतधर्म महामण्डल मिथिलेशकेँ 'अपर भगीरथ' क उपाधि देने छलनि। ताहि हेतु मिथिलेशक अशेष गुण कीर्तन कयने छथि। गंगा तँ सनातन धर्मक अधारशिला थिकीह। 'गो, गंगा, गायत्री' एहि तीनूक अभावमे सनातन धर्म की?

१९१५ ई० क गप्प थिक जे मिथिलेश राजनगरमे कोटि गायत्री हवन

1. 'मि० मोद', उद्गार ९६, पृ० १८-१९।

करबओने छलाह। यज्ञकर्मक विशुद्धताक दिस 'मिथिलेश'क ध्यानाकर्षण करैत म० म० झाजी लिखने छथि—

"आइकाल्हि अपन मिथिलाक प्रायः सब गाममे पढ़ल लिखल लोक मध्य अधिक घोल भै रहल अछि जे श्री५ मान् मिथिलेशक ड्योढ़ी राजनगरमे गायत्री मन्त्रक एक कोटि हवन होएत, जकर दक्षिणा प्रतिदिन पुरश्चरण कैनिहार लोकनिकें अधिके देल जैतन्हि। ई अनुष्ठान १५ दिन धरि आश्विन वदि पड़ीबसँ होएत। औ लोकनि! हमरा बुझने ई काज भेलासँ सम्प्रति अत्यन्त दीना मिथिलाक बड़े उपकार होएत।

"कतेक दिनसँ सुनैत छलहुँ जे इन्द्रपूजामध्य "धौत परीक्षा" होएत, जाहि लै अनेको नवीन पण्डितजी लोकनि राति-दिन शास्त्र चिन्ता करैत छलाह जे परीक्षा दै धोती पहिरब किन्तु ताहि धोतीसँ एतेक उपकार नहिं जतेक एखन एहि हवने होएत; देखू जे मैथिल पण्डितगण (प्रायः २०० लोक) क कतेको दिन धरि परिवार पालन भै जाएत। दोसर उपकार ई अछि जे सम्प्रति कतेक पण्डितहुकें मातृका, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, भूतशुद्धि ओ पीठविन्यास मानसपूजाक तँ कथा कोन जे ब्राह्मणक सर्वस्व वेदमाता गायत्री मात्रक नाम सुनलासँ माथ दुखाइत छन्हि। भाव कहताह जे एहि सबहिकें कलियुगमें सामर्थ्य नहिं छैक तें जप तप करब व्यर्थ थिक।

"औ बाबू लोकनि!...... पाठक! कथा बुझि राखू जे एहि गायत्रीक अनुष्ठानक ढोल जकाँ घोल भेलासँ कतेक छोटको पण्डित महोदय लोकनि गायत्री पंचाङ्गकें गंगास्तव ओ स्तवराज जकाँ कंठस्थकें उक्त काजमें उद्यत होएताह तखन भाग्यवश होइन्हि वा नहिं किन्तु एतबाटा कहब जे यदि अनुष्ठानाध्यक्ष महाशय दही ओ तरकारीक दिशि तकलन्हि तँ 'गोब्राह्मणी' उठत। ई अधिकार हुनके देल जाइन्हि जे निष्पक्षपाती होथि, जाहिसँ श्रीमान्‌क व्यय सार्थक हो ओ मिथिलाक दरिद्र सुयोग्य पुत्र लोकनि सन्तुष्ट होथि।

"हमरा जनैत श्रीमान्‌कें उक्त अनुष्ठानसँ कोनो विशेष कामना नहिं, किन्तु मिथिलाक सुपुत्र सबकें सीदित देखि कोनहुँ प्रकारें पालन करबाक इच्छहिसँ (कार्यक्षम लोकनिकें बिनु काज करौने कोन रूपें देल जाएत? एकरा विचारि) अपन देशक हित चिन्ता करैत सज्जन सुशील पंडित लोकनिक द्वारा मैथिलोन्नतिक हेतु ई बड़पैघ खाम्ह गाड़ल गेल अछि (ई खाम्ह नहिं,

ई वस्तुतः कोटि पत(की थिक) अनुष्ठातृगणकें एतबा सावधानता राखैक थिकन्हि जे संकल्प-भेलासँ ताहि रूपें काज करी जाहिसँ यजमानक मनोरथ सिद्ध होइन्हि, जे भेने अनेको यजमान एहू घोर कलियुगमे अवश्य भेटि जैताह अन्यथा यजमानक कोन कथा जे संचितो धनकें बिढ़ाए 'रौदाएल मैने' बनल रहब।

"सबसँ विचित्र कथा तँ ई अछि जे आठो आना वा एक टाका लै हमरा लोकनि अनका हेतु देवतागणकें प्रसन्न करैत छी, हा। ताही ठाम ई विश्वास किएक नहिं जे अपनहि हेतु कोनो पुरश्चरण कै देवगणकें प्रसन्न कै कार्यसाधन करब।

"ईश्वरक कृपासँ यदि श्रीमान्‌क ई गायत्रीक सदनुष्ठान समाप्त भेल तँ मिथिला पुनि पूर्वक गौरव लाभ करतिहि जाहिसँ अतिशीघ्र मैथिल जाति उन्नति शिखरपर चढ़ै, ई कोनो आश्चर्य नहिं थिक। मोदानुमोदि गण! एतबा तँ अपने लोकनि कैं अवश्य मानै पड़त जे आइ काल्हि अपन मिथिलामें अनुष्ठान कैनिहार लोकनि बहुत थोड़ गोटै छथि; ई सुनि बहुत गोटै कहि उठताह जे ई अहाँक कहब बड़ अनर्गल होइछ, से कहथु, किन्तु हम एतबा कहबे करब जे साम्प्रतिक विद्वान् लोकनि केवल अर्थ मात्र कहबाक पण्डित होइत छथि क्रियाक नहिं, कारण एखन एहन प्रायः क्यो पण्डितजी भेटताह जे अपन धर्म जानि उग्र पुरश्चरण सविधि करैत होथि, जे कैलासँ तीनू लोकमें सुख भेटतन्हि, तथापि जे क्यो किछु करितहु छथि से बहुधा देखौए।

"एहि अनुष्ठानसँ एखन एतबै फल होएत जे बहुत लोक अनुष्ठानक परिपाटी ओ गायत्रीक पंचाङ्ग जानत, जाहिसँ व्रत ओ अनुष्ठानक क्रम बुझि जाएत; तावता एहन अभ्यास कराबएवाला आइ श्री ५ मान मिथिलेश बहादुरे छथि। परमेश्वर हुनक मनोरथ पूर्ण करथुन्ह।[1]"

वस्तुतः कोनो कार्य सविधि भेलहि उत्तर फलप्रद होइत अछि। कहलो गेल अछि—"नादक्षिण्ये निहिता काचित् क्रिया फलवती भवेत्"। सम्प्रति जे उपनयनादि संस्कार समाजमे होइत अछि ताहिमे मण्डपक व्यवस्थामे कतेक तत्पर रहैत जाइत छी आ भोज भातक हेतु कतेक अपस्यांत रहैत छी ओ लाउडस्पीकरक ध्वनिमे वैदिक मन्त्रक केहन दुर्गति होइत अछि से ककरोसँ अविदित नहि अछि।

1. मि० मोद, उद्‌गार १०७, पृ० २१-२४।

एहि ठाम प्रसंगतः एक हास्य कथा (जे वस्तुतः विचार कयला उत्तर परम कारुणिक बुझायत) कहि देब अप्रासंगिक नहि होयत । एक बटुक वर्गसँ लगातार बीस दिन अनुपस्थित रहि गेल जाहि कारणें ओकर नाम कटि गेलैक। जखन पुनः वर्गमे उपस्थित भेल तँ कहलिऐक— औ ! अहाँ कत' एतेक दिन जा क' बैसि गेलहुँ जे नामो कटा गेल ? ओ उत्तर देलक—'हमर उपलैन छल"। हम पुछलिऐक—गायत्री आयल ? ओ चकित होइत कहलक —कथी गायत्री ? हम कहलिऐक—उपनयन कालमे धोतीसँ मूड़ी झाँपि क' गुरु कानमे किछु कहबो कयलनि ! मुस्कुराइत ओ दहिन पाँखुड़कें कानमे सटबैत कहलक—हँ, हमर गुरु बाबा भेलथिन, हुनका मुहमे दाँत नहि छनि, तें किदन किदन जे कानमे कहलनि से हवा हमरा कानमे केना फुसफुस लागय जे शब्द नहि बुझलिऐक, खाली कानमे गुदगुदी लाग' लागल। वर्गभरिक छात्र ओहि बटुकक ओ मुद्रा देखि भभाक' हँसि पड़ल।

कहबाक तात्पर्य जें ओहि उपनीत ब्रह्मचारीक संस्कारमे परिवर्त्तनक आशा कोना कयल जा सकैत अछि जे गायत्री मन्त्रक कोन कथा गायत्री शब्द पर्यन्तक ज्ञान नहि प्राप्त क' सकल। तखन पुनि दोषारोपण ओहि संस्कारपर जे ई सब फूसि फटक थिक। आजुक राजनीतिक चक्रवातमे अन्तर्जातीय विवाहकें प्रोत्साहन द' वर्णसंकरक संख्यामे वृद्धिक हेतु आन्दोलन कयल जा रहल अछि, प्रलोभन देल जा रहल अछि। अस्तु।

म० म० झाजी उक्त गायत्री हवनकें विशुद्ध रूपसँ सम्पादित करयबाक हेतु एक भाग हवन करओनिहारकें तँ दोसर दिस हवन कयनिहारकें सचेत करैत अपनो श्रद्धा ओ विश्वासक दृढ़ता प्रकट कयने छथि।

स्मर्त्तव्य जे ओहि समय आर्यसमाजी द्वारा वेदमंत्र सभक नवीन अर्थ कयल जाइत छल ओ सनातन धर्मपर प्रहार सेहो। आर्यसमाजक हेतु म० म० झाजी 'अजसमाजी' नामकरण कयने छलाह। 'अजसमाजी' शब्दमे जे व्यंग्य अछि से स्वयं ऊह्य थिक। एखनहु लटर पटर सम्बन्धक हेतु फल्लाँ सब 'छगरागोत्र'क थिक से पूर्ण प्रचलित अछि।

जखन काशीमे हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु महामना पंडित मदन मोहन मालवीय झण्डा उठओलनि तँ ओहि झण्डापर मिथिलेश रमेश्वर सिंह ओहिना आरूढ़ छलाह जेना महाभारतक युद्धमे अर्जुनक झण्डापर महावीरजी आसीन छलथिन। मालवीयजीक संग सम्पूर्ण भारतक राजा-महाराजक कोतय भिक्षाक झोरी ल' मिथिलेश कोना घूमैत रहलाह तकर पूर्ण 'दस्तावेज'

मि० मोदक 'फाइल'मे उपलब्ध अछि, परन्तु कार्य सम्पादित भ' गेलाक बाद मिथिलेशक नाम कोना कात क' देल गेल से सबसँ विदिते अछि। काशीस्थ मैथिल विद्वान लोकनिके आशा छलनि जे भारत धर्म महामण्डलक अध्यक्ष मिथिलेश एहि हेतु एतेक बेहाल छथि तेँ अवश्य एहि द्वारा पुनः सनातनधर्मक प्रतिष्ठामे वृद्धि होयत, परन्तु विश्वविद्यालयक स्थापनाक बाद जे ओकर आधुनिक स्वरूप भेल से देखि मैथिल पंडित विस्मित रहि गेलाह। ओहि प्रसंग म० म० झाजीक विचार निम्नांकित अछि। लेखक शीर्षक थिक—'सनातन धर्मपर अभिघात', ओहिमे कहल गेल अछि—

"थोड़ेक दिन पूर्व कोखन चित्तमे होइत छल जे जहिना भ्रमसँ अशुद्धि होइत छैक तहिना भ्रमसँ शुद्धिओ किएक नहि होइछ। एही रूपेँ विचारैत छी जे धर्मपर वा ब्राह्मणपर जहिना धक्का देल जाइछ तहिना अधर्म ओ अब्राह्मणहुपर किएक अभिघात नहिँ? तावता येह बुझैत छी जे सम्प्रति अवर्णक आदर सर्वत्र, अविद्या, अनाचार, असंस्कार, अधर्म, असत्, अशुभ, अमङ्गल इत्यादि अनेक।

"हिन्दू 'युनिवर्सिटी'क नव नव नियम ओ नव नव विचार, संभव जे प्राचीने हो, किन्तु अत्रत्य विद्वन्मण्डलीमे नवीने भासित, कारण ई मण्डली कतेको वर्षसँ प्राचीन पद्धतिक अनुसार पठन पाठनमे लागल समय बितबैत अबैछ। 'युनिवर्सिटी' ओ थोड़ेके दिनसँ लोक बुझै लागल अछि। इलाहाबाद, कलकत्ता, पंजाब, मद्रास प्राचीनो भेल किन्तु एहि लोककेँ ताहिसँ ततेक सम्बन्ध नहिँ, जतेक 'हिन्दू युनिवर्सिटी' लोकक आँखि खोललक अछि। उक्त 'युनिवर्सिटी'केँ जतेक धोआइ नहि ततेक (धोवियाक) सुसकारी जकाँ आडम्बर आकाश लागल जाइत अछि। लोकोत्तर नियमादि अद्भुते अद्भुत सब देखैत सुनल जे धर्म विभाग!!! अर्थतः हिन्दू-धर्मविभाग। जैखन 'हिन्दू' पद राखल गेल तैखन झगड़ा। यवन सब जाहि समयमेँ भारतवर्षपर आक्रमण कैलक तखन सर्वथा पराजित एहि लोककेँ 'हिन्दू' नीच पदेँ व्यवहार करै लागल ओ अपने एहि लोकसँ ओही रूपेँ तुरुष्क (तुड़क) कहाबय लागल किन्तु समयक महिमा जे ताहि यवनक अत्याचारसँ हमरा सबहिक सब लुप्ते जकाँ भै गेल! किन्तु हुँनकहि सबहिसँ आइ मिलि सर्वभक्षी उड़ैवाला पक्षीक संग सब उड़ैत अछि, अस्तु।

प्रकृत विषय ई जे 'युनिवर्सिटी'मेँ २५ व्यक्ति विशुद्ध पाश्चत्य शिक्षा सम्पन्न त गोटेक शुद्ध पण्डितो कतहु कतहु। एहि दशामेँ पण्डितक विचारक प्रभाव

कतेक, वा जतबे संस्कृत विद्याक आदर ओतबे बहुत, तावतेः यदि अब्राह्मणो धर्म विभागक नेता अध्यक्ष भै उपदेशक निश्चित भेल होथि तें चित्र नहिं, परन्तु ध्यान देबाक थिक जे भारतवर्षमे प्रख्यात ब्रह्मर्षि समान श्रीमान् मिथिलेश महाराजाधिराजकैं आगाँ कै श्रीयुत मालवीयजी धर्मरक्षादिक हेतु भारतवर्षक प्रत्येक नगर, राजधानी, धनी मानी ग्रामसँ धन संचय कै सनातन विद्यापीठ काशीमे उक्त 'युनिवर्सिटी' कैं 'विश्वविद्यालय' नामसँ ख्यात कैल, जकर कर्णधार स्वतंत्र भारतवर्षी भूपाल लोकनि ओ अपने सबहिक गुप्त-संरक्षक रहि बड़ा भारी कार्यक्रम, नियम, नियमावली, भवन, प्रासाद, छात्रावास, प्रोफेसर, अध्यापक, मास्टर, टीचर, रजिस्ट्रार, क्लर्क अनेक शिक्षा-विभाग, अनेक विषय, अनेक सदस्य इत्यादिसँ वस्तुतः 'हिन्दू यूनिवर्सिटी' एक अनुपम कार्य, काशीकैं चमका देलक, अत्रत्य लोक चकित होबै लागल, एकर सौरभे देश देशान्तर सर्वत्र पसरल, पढ़ैबाला सब विन्न-विन्न करैत उपस्थित होबै लागल, दूरवीक्षण द्वारा ताहि-ताहि विषयक अध्यापकगण नियुक्त होबै लगलाह, ताहि-ताहि विषय सबहिक विवेचनाक हेतु अत्रत्य ओ अन्यत्रहुक सदस्य लोकनि नियत भै 'मीटिङ' क शोभा बढ़ावै लगलाह। पाश्चात्य विषयज्ञगण जे लोकनि छथि हुनका सबहिक हेतु तँ कोनो अभिनव ई सब नहि, किन्तु अत्रत्य पण्डितोजी लोकनि 'मेम्बर' नियत भै जाए लगलाह, एहि मण्डलीमे बहुतहुकैं सब अभिनवे बुझना जाइत छलन्हि, परन्तु कार्यक्रम देखैत बुझैत सब शनैः शनैः अवगत होइत गेलन्हि।

सर्वथा निश्चय बुझल गेल तथा उचितो जे जकर राज तकर काज, पाश्चात्य शिक्षा दीक्षासँ भरल जनतामे ई दीन पण्डित मण्डली हंस मण्डलीक बक पंक्तिए जकाँ भासित होबै लगलाह। 'सिल्ली तौलि बखारीमे ओ किनारमे फेंकल अगौं बाभनक घर' एतबो बहुत थिक। जँ बकपंक्ति दिशि एकोटा हंस अपन चोंच चाङुर सावधान कै झपटै दपटै तँ बकपंक्तिक नामो कतहु रहत? किन्तु खगेशक अनुग्रहसँ सरोवर शोभार्थ पालल छथि, बकपंक्ति निःसृत हंसायमान एक महाशय बकराज भै जाहि समय नियत कैल गेलाह ताहि अवसरमे हंसहिक भ्रान्ति अपना चित्तमे रखलन्हि। जखन हंसक हेतु मुक्ता, विद्रुम, कमल, कुमुद, कह्लारादि अगाध जलसंचारी रोहु, भुन्नी प्रभृतिसँ शोभायमान सरोवर तथा दोसर दिशि घोंघा, सितुआ, भेंट, घेंचुल, कुम्भी, पोठी, चल्हवा, ईंचा, इत्यादि क्षुद्र कर्दम पानिसँ भभकैत डाबर। एहना स्थितिमे हंसायमान बकाधीश अधीर भै घेंट नमराए तकलन्हि किन्तु

खत्ता खुत्तीमे मुक्ता विद्रुमादिक चर्चा कोन, अतएव विषण भै पाँखि झाड़लन्हि ओ बकपंक्तिकैं प्रोत्साहितकै डाबरसँ सबकैं लै उड़ैत रहैत बैसताह कतै, इहो ईंचा-पोठी तँ संयोगवश ओहीमे, तावता सहथु अपमान, रहथु विद्यमान, तेहन अपनहि मँहक अभिमान चलल जे खगेशो अपन पाँखि सोझ साझ कै हंसमण्डली ओ बकपंक्ति, एहि दूनू दिशि लोल घुमौलन्हि, अर्थतः व्यर्थ धर्म विभागक झगड़ा उपस्थित भेल, कोना नहिं हो, एकटा परम बकपक्ष समर्थक वाणीभक्त हंस खगेशक संचालनकैं उदासीनतासँ देखि छोदक्षेम करैत छलाह अतएव खगेश तादृश पक्षाभिहनन कैल जे बकपंक्तिए हीँ हीँ कै पृथक् भै गेलि। एहि अकान उड्डीन प्रोड्डीनकैं देखि पक्षिराज चलैत छथि जे हमरा शरभ, शार्दूलक भय तँ लेशो नहिं, जतेक हंसक प्रयोजन होएत तत्क्षण भेटि जाएत, ततै ई बकपंक्ति की हीँ हीँ कै रहलि अछि, जे मन अबैक, जतै इच्छा होइक, जाओ, अस्तु, जाइत अछि। परन्तु पलुआ बकगणकैं कोन उपाय, अपनहिमे लोलमारिकैं विराजैत छथि, अतिरिक्त कतेक एहनो सुदृढ़, सुधैर्य बकाभास छथि जे हंसमण्डलीक कोन कथा वस्तुतः गरुड़हुकैं किछु उपस्थित नहिकै स्वतन्त्र छथि तथापि बनौआ हंसमंडली दिशि नहिँ ताकि अपन बकपंक्तिअहिक आदर कै बको कहैबामे संकुचित नहि होइत छथि इत्यादि गूढ़ालंकार।

"तात्पर्य ई जे जनिका केवल पाश्चात्य विद्यामात्रक आश्रयपर देखौआ (वस्त्राडम्बर, गाड़ी, घोड़ा, मोटर, साइकिल, मेज, मोढ़ा, आलमारी, बूट, हैट) भाग्य चमकैत होइत छन्हि हुनक ढिठाइ संसारसँ उपर, कारण जे जज, मजिस्ट्रेट, कमिश्नर, गवर्नर ओ वायसरायअरि अपन (राय) सम्मति देवैवाला भै जाइत छथि, तखन जँ दोसर लोक मानी तँ ब्रह्मा, विष्णु......; अन्यथा ओहो किछु नहिं, साधारण संस्कृत विद्या तँ किछु नहिं, थोड़ेक शब्दरूप, धातुरूप, सन्धि, समास, कारक भेल, वाक्य जोड़ै आबि गेल, अपन अपन कोर्सक रघुवंश, माघादि नोट भोंट देखि जानि लेल, तखन पण्डिते की, किच्छु नहिँ जे हम बुझैत छी, करैत छी ओ सुनैत छी सैह यथार्थ ई धारणा एकदा अद्भुत भारतवर्षमे भै गेल अछि, यैह धारणा देशकैं घोर अन्धकारमे फेंकैक हेतु संनद्ध अछि।

"जेना विश्वविद्यालयक हेतु धन एकत्र भेल से सबकैं ज्ञाते अछि, लोककैं विश्वास छलैक जे एकर कार्य अवश्य श्लाघ्य होयत किन्तु चलल वेह धारणा,

जाहिसँ पाश्चात्य शिक्षा दीक्षाक तरङ्ग उछिलै लागल किन्तु प्राच्य विद्या कोना ताहि पथपर लगले चढ़त, बड़े बड़े ऋषि, महर्षिक कैल वस्तु, से एम्० ए० बी० ए० 'कोर्स' जकाँ नहि भै सकइछ, एकरा हेतु वेह पुरना बाट छैक, किन्तु मोटर दौड़ाबैबालाकेँ 'पैदल' खड़ुर, कोना 'नीक' लगतन्हि, तखन शस्य शोभाक मनोरथो जनु करी, किन्तु से नहि, विनु देखलो हमर देखले अछि, की देखल अछि, थोड़ेक गीताक पाठ कैने कैक श्लोक अभ्यस्त, सुन्दरकाण्ड, वाल्मीकि,हितोप-देश, पंचतन्त्र अयच बेरि पड़लापर छक्कीरतो छछलवैत छी; लज्जा ककरा आगू, कारण पूर्व कहि गेल छी, परन्तु ई सबहि गोटै जानि राखू जे महाधृष्ट नग्न, उन्मत्त नृत्यादि देखि जीवितक कोन कथा जे मृत शरीरकअंग प्रत्यंगदेखि विचारि संकुचित नहि होइछ ओ लोकनि एहन प्राचीन हितोपोदेश ओ पंचतंत्रमे अश्लील विषय सबकेँ लोलिआए कात करैत छथि, तावता रस-मंजरी, वात्स्यायन कामसूत्र ई सब तँ ताहि महोदयक बुझने उन्मैत्त प्रलाप!!!तँ चलाउ अपने चरखा काटि लिअ सूत। एहने एहन भिट्टरो उठत।

एतेक दिन यैह पाश्चात्य शिक्षा दीक्षासँ रङ्गल बावूलोकनि कहैत छलाह जे संस्कृत विद्या अकिंचित्कर,संस्कृत-वाणी मृत भाषा ओ संस्कृत विद्वान किछु नहि........इत्यादि, अर्थत: जे थिक से अंग्रेजी, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी वेष, अंग्रेजी भाव इत्यादि तकैत तकैत अंग्रेजी खान ओ अंग्रेजी पान धरि पहुँचि गेलाह किन्तु आइ कोन कुकुरमाछी लगलन्हि अछि जे पुनः घरमुहाँ पड़ाए स्वदेशक बनल वस्तु हथोड़ि रहल छथि, ओ बावू लोकनि ! अपने सवहि सबकेँ बिसरि गेलहुँ, चालि चलन खाएव प्यूब......सब बदलि गेल तखन अपनेक कोमल करकमल ओ दुर्बल आँखिक समक्ष कोना की देशक वस्तु भेटत ओ सुझत। सम्प्रति जन्मना जे रही, किन्तु कर्मणा एके गोटै दिन-भरि रंगरूप वदलैत सब बनि जाउ, पुरना धरम भरम थिक, जे चाही से कहू, सनातन जाथु, आब 'आज'क चरखा औंटल जाइछ, ओकरे सूत्र पहिरि जे पण्डित गैह सब, अतःपर पुनि कहिओ।[1]"

इतिहासक अ, आ, इ, ई, जननिहार पर्यन्त ई जनैत होयताह जे १९म शताब्दक अन्तिम चरणमे भारतवर्षमे राजनैतिक नवीन चेतनाक उदय भेलैक। १८८५ ई० मे कांग्रेसक स्थापनाक किछुए दिन वादसँ विभिन्न जातीय सभाक संगठन आरम्भ भ' चुकल छलैक। 'संघे शक्ति ! कलौ युगे' ई नीतिवाक्य प्रबुद्धवर्गक हेतु मूलमन्त्र वनि गेल छल। जातीय संगठनक माध्यमसँ राष्ट्रीय

1. मि० मोद, उद्गार १५७' पृ० ४-८।

संगठनक भूमिका बनि रहल छलैक। व्यक्तिएक समष्टि समाज थीक। अतः व्यक्ति यदि आत्मोन्नतिमे लागि जाय तँ स्वतः समाज उन्नत भ' जायत ई धारणा उच्चतम शिक्षासम्पन्न म० म० डॉ० सर गङ्गानाथ झा सदृश विज्ञके छलनि।[1] आत्मोन्नतिक सुविधा प्राप्त करबाक हेतु जातीय संगठन सहायक होयत ई विश्वास समाजमे जागि गेल छलैक। एही पृष्ठभूमिमे 'क्षत्रिय महासभा', 'गोपजातीय महासभा' आदिक संगठन भेलाक पश्चात् २५ वर्षक बाद 'मैथिल महासभा'क संगठन भेल जकर प्रथम अधिवेशन मधुबनीमे १९१० ई० मे भेल छल। ध्यातव्य थिक जे हमर चरितनायक ओहि समय एक पत्रकारक रूपमे समाजक प्रहरी भेल ठाढ़ छलाह। एक सजग पत्रकारकें, एक निष्काम समाजसुधारककें सर्वात्मना विचार करय पड़ैत छैक। हिनक सामाजिक ओ राजनीतिक चेतना ततेक प्रबुद्ध छलनि जे मैथिल महासभाक संकीर्ण परिवेशक ई घोर बिरोधी छलाह। हिनक विचारानुकूल यदि ओहि समयमे मैं० म० सभाक द्वार सभक हेतु फुजल रहितैक तँ आइ जे मैथिलीक समक्ष संकट छैक, स्वाधीन भारतमे पश्चात्पद भेल अछि से नहि रहैत। यद्यपि मैथिल जाति ब्राह्मणक हेतु म० म० झाजी अरनहु प्रयोग कयने छथि, तथापि मैथिल महासभा 'मैथिल' शब्दकें विशेषणसँ संज्ञा बना देलक। मिथिला सन गौरवशाली इतिहासक गौरव ब्राह्मणक अतिरिक्त बड़ थोड़ जातिकें होइत छैक। एकर भाषा एकर सांस्कृतिक संरक्षणसँ मिथिलावासी सब समाने रूपें लाभान्वित होयत एहि नग्न सत्यहुकें आइ स्वीकार करबामे लोक नाकर-नूकर करैत अछि। यदि ओही समयसँ मिथिलेशक नेतृत्त्वमे सब जातिकें मिलाय संगठन कयल गेल रहैत तँ आइ राजनीतिमे नेतृत्व विहीन ई क्षेत्र नहि रहैत।

मैथिल महासभाक आजीवन सभापति छलाह मिथिलेश रमेश्वर सिंह। ओहि युगक अपना नेताकें मार्गदर्शनक हेतु दोसर अर्थमे आँखि फोलि देबाक हेतु पत्रकारकें सजग रहब उचिते, उचिते नहि कर्त्तव्यो। म० म० झाजी एहि उत्तरदायित्वक निर्वाह कोना कयलन्हि तकर एक उदाहरण नीचाँ उद्धृत अछि—

"श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज वहादुर।

विद्यमान परम विद्वान् श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुरक यथार्थ उपमा हुनकहिमे देल जा सकैछ।

---

1. मिथिलाक अधोगतिक निदानक समीक्षा।

एहि उक्त महाराज बहादुरक जेठ भाय स्वर्गवासी महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर वस्तुतः जन्महिसँ महाराज छलाह अतएव हुनक आकार विकार दर्प ···· इत्यादि सब तेहने छलन्हि अर्थात् हुनक आकार देखि प्रायः लोकके भय होइत छलैक, यद्यपि ककरहु तेहन दण्ड देने छलथिन्ह ई नहि सुनला गेल अछि तथापि एकटा ई अकृत्रिम विलक्षण गुण छलन्हि; विकार तेहने छलन्हि जे भारतवर्षमे जे पहिल 'कांग्रेस' भेल तकर अधिवेशनक हेतु जँ आइ काल्हि विद्यमान 'इलाहाबाद'क वगीचा सहित कोठी नहि कीनल जाइत तँ नहि होइत; दर्प तेहने छलन्हि जे हुनका अध्यक्षतामे पँचो लोक वयो उच्चस्वरसँ हँसताह वा बजताह से नहि होइत छलन्हि। संस्कृत विद्याक ततेकटा ज्ञाता नहि छलाह किन्तु संस्कृत विद्याक पंडित (विशेषतः परदेशागत विदेशीय पंडित) लोकनिक आदर सत्कार उत्तम रूपे होइत छलन्हि, गान विद्यामे ततेक निपुण नहि छलाह किन्तु संगीत शास्त्रज्ञ लोकक शरण स्थान छलाह; प्रायः आवहु 'आनन्दवाग'मे जाय देखल जाय तँ साक्षात् हुनके उपयोगमे आबयवाला अनेक वाद्य-यन्त्र सब ओहने राखल अछि, जे आब ओहन सितार, बीणा बनि नहि सकैछ ·······इत्यादि राजकीय ठाट वाट सबहिक स्नेह तेहने छलन्हि, कहाँ धरि कहू, देश देशान्तरक जानवर, चिड़ै-चुनमुनी, फल, गाछ, माछ, काछु··· सबहिकेँ रखबाक स्पृहा छलन्हि जे सब हुनका सममे दरभङ्गामध्य भरल छल।

"ई सब गुण रहिओ पश्चात् सबहिकाँ ज्ञात भेल जे अन्तःशरीरमे हुनका तेहन रोग छलन्हि जाहिसँ बहुतकाल ओ भीतरसँ प्रसन्न नहि रहैत छलाह; शरीर स्थूल छलन्हि तथा भोक्तो छलाह, तैं सर्वसाधारणकेँ नहि बुझि पड़ैक, किन्तु जँ से नहि छलन्हि तँ की जानि राज सुप्रबन्धार्थ कतेको कागजपत्र लिखि गेलाह जे ताहि समयमे अनका खेड़ि बुझना गेल होइक।

"गो, वेद ओ ब्राह्मणमे श्रद्धा पूर्ण छलन्हि, विशेष गुणी मात्रक आदर करैत छलाह अर्यतः जाहि विषयक जे गुण देखबैत छलन्हि तकरा महाराजीय पारितोपिक भेटैत छलैक; अथच 'कौनसिल'मे प्रजाहितार्थं बजबामे कनेको भयभीत नहि होइत छलाह इत्यादि अनेक गुण गौरव छलन्हि ओ तथापि बद्ध-मुष्टिके लोक बजैत छल। और जे हो, किन्तु हुनका समयमे कतेको देशीय पण्डित लोकनि रहैत छलाह जाहिमे ककरहु मासिक वेतन ३० टाकासँ अधिक नहि भेटैत छलन्हि; आइ काल्हि पण्डित लोकनि ताहि समयसँ किछु अधिक

मासिक वेतन पाबिओ अप्रसन्न रहैत छथि, तावता देशीय पण्डितक (मासिक वेतन) बिगड़ल संस्था पूर्वहिक थिकनि, अस्तु।

"विद्यमान श्रीमान् मिथिलेश जन्मतः 'बाबूजी' अत्यन्त प्रसन्न वदन, सौम्य प्रकृति, अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धि, विलक्षण-स्मरण-शक्तिमान् तथा अंग्रेजीक शिक्षामे तँ पूर्ण, किन्तु संस्कृत विद्याक तेहन रसिक जे आइ काल्हि तँ हुनका महापंडितो कही तँ थोड़ेक बुझना जाइछ। जाहि समयमे हिनक जेठ उक्त महाराज बहादुर अपन दरभंगा राज सिंहासनपर बैसलाह ताही समयसँ हिनक चित्त वत्सपुर (बछौर प्रगन्ना) दिशि झुकल, ता ई भागलपुर, छपरा इत्यादि नगर सबमे कतेको वर्षधरि 'गंवर्नमेण्ट'क शासन-विभाग दिशि प्रायः 'ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट'क काज करैत छलाह। ओ कार्य ताहि चतुरतासँ सम्पादन कैलन्हि जे राजा प्रजा सब प्रसन्न रहैत छलन्हि। हिनक गम्भीरता कहाँ धरि कहू जे एक मूर्ख परम उजड्ड ब्राह्मण प्रायः 'इजलास'हिपर अपन परम दण्ड पाबै योग्य नीचता एहि त्वं निहार हमर श्रीमान्हिक उपर कैलक; किन्तु तकरा किछु नहि दण्ड दै अपन उदार चरितक यशोगान लोकालोक धरि स्थिर रखलन्हि। तावता ई जनु क्यौ बुझौ जे अपन अनादर सहन करैत छलाह, कारण तखन धरि भागलपुरक बाबू 'तेजनारायण'क तथा छपराक विषयसँ तहुत गोटै परिचिते होएब। एना करैत करैत अपन ईप्सित बछौर प्रगन्ना लेबे कैलन्हि ओ शनैः अपन अधिकार करै लगलाह।

"बछौरमे एकटा ग्राम 'कोरहिआ' छैक ततहि एकटा कचहरी छलैक ताही ठाम साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा श्रीमती बड़ी महारानी साहेबाक कुक्षिसँ एक सुपुत्रक जन्म भेलन्हि। ताहि समयमे लोहनाक साधारणे ब्राह्मण पण्डित गूदर झाक प्राधान्य छलन्हि, हुनकहि द्वारा जे क्यो ताहि उत्सवमे उपस्थित भेल, सब पण्डित विद्यार्थी साधारण मूर्ख पर्यन्त अपन अपन भाग्यानुसार पाबि प्रसन्न भेल। तदितर जे क्यो पहुँचलाह ताहिमे कतेकहुक पाग, तौनी पर्यन्त हेड़ैलन्हि!! हूलिमे पूछै के के, किन्तु हमर श्री ६ गुरु ४ टाका ओ छोटका विद्यार्थी हमहुँ १ टाका पौने छी, ई स्मरण अछि। तथा इहो स्मरण अछि जे ताही नवजात अर्भक (नेना) कैं देखैक हेतु उक्त बड़ा महाराज साहेब रहिकासँ कोरहियाकैं प्रस्थान कैलन्हि, मध्यमे हरिनगरक प्रसिद्ध पण्डितवर हल्ली झाक ओतै होइत गेलाह (उक्त पण्डितजी तथा हुनक जेठ भाय पं० बबुनन्दन झा एहि दुनू गोटाक उपनयनक न्यौत पुरैक हेतु स्वयं बैकुण्ठ

वासी महाराज महेश्वर सिंह गेल छलाह ओ चुमाओनमे सेरमा ग्राम देलथिन्ह जे अद्यावधि छन्हिए।)

"अथ च यदि ओ जीबैत रहितथि तँ आइ काल्हि वेह दरभङ्गा राज सिंहासनक शोभा बढ़ाय आइ हमर श्रीमान्कँ कृतकृत्य कै अदभुत तपस्वी बनौने रहितथि। परन्तु राजसुखानुभव करबाक हुनक तपस्या नहिँ छलन्हि तँ ओ एक वा दू मास धरि जीवि परलोकगत भेलाह !!! अस्तु।

"ताहि समयमध्य श्रीमान्क अवस्था तेहन कर्कश, नवीन ओ प्रगल्भ छलन्हि जे किछुओ शोक प्रवेशक अवसर नहिँ। किन्तु ओ स्थान मंगलप्रद नहि अतएव मिर्जापुरक सटले बछौरहिमे 'करहिआ' नामसँ प्रसिद्ध पुरान धार कमला नदीसँ पूर्व भागमे एकटा ग्राम छलैक तकरहि अपन ड्योढ़ी बनैबाक व्याजसँ 'राजनगर' नाम कै प्रसिद्ध करौलनि तथा अपन गुण-गौरवक प्रभावसँ राजपदवीअहुकेँ प्राप्त कैलन्हि। एम्हर दैबात ताहि समयमे हमहूँ राजनगरक समीपहि पढ़ैत छलहुँ। जाहि समयमे श्रीमान् राजपदवी पाबि राजनगर आबि रहल छलाह, उत्सव देखबाक हेतु हमहूँ कतहु किनार कतारमे ठाढ छलहुँ, प्रत्युत इहो देखल जे पटोरक पाग बान्हल पहिरि श्रीमान् आब चुमाओन कराबै जाइत छथि। की ताहि समयमे दर्शक हमरा लोकनिकेँ भूखो पिआस लगैत छल। किछु शरीर रक्षार्थ एम्हर ओम्हर कै रातिमे विचित्र 'आतसबाजी' ओ दीपावली देखल।

"दीपावलीक हेतु जे आमक डारि काटि छाँटि खुट्टा सब बनि बनि गाड़ल गेल ताहिमे सँ दूटा खुट्टा लागि गेलैक !!! पुनः एकटा तँ सुखा गेलैक दोसर प्रायः आइ धरि होयबे कतैरक।

"एकटा नागोल कै प्रसिद्ध पक्का गोलाकृतिक छोटका कोठा छैक, तकर उत्तर भागमे थोड़ेक दूरपर ओ गाछ छैक। ताही गाछक समीपमे श्रीमान्क परम प्रेमास्पद म० म० सामवैदिकजीक डेरा छलन्हि, जतै कैकटा कटहरहुक गाछ छलैक। सामवैदिकजीकेँ निष्कपट आडम्बर रहित विद्वान् ओ विद्यार्थीपर अधिक अनुग्रह रहैत छलन्हि, तैँ वर्षमा दिनपर पतड़ा देखि जाचि देबाक हेतु हमहु जाइत छलहुँ, अतएव हमरा ई सब बुझल अछि तथा आनो कतेक विषय जानि संकोच कै लिखैत छी। ताहि समयमे बाबू बालाजी श्रोत्रिय (कनेक खोंड़) श्रीमान्क प्रियपात्र छलाह।

सुनैत छलहुँ श्रीमान्कैँ संस्कृतमे अक्षुब्ध बाजी एकर तथा नाना गूढ़ विषय सबहिक स्नेह पूर्ण छन्हि, विशेषतः पूजा, पाठ, जप, तप इत्यादिमे

पूर्ण चित्त लगैत छन्हि, ई सब तेहन साहस सँ करैत छलाह जे ककरहु सँ होएब असम्भव किन्तु कहिओ संगीत विद्या क रस नहिँ भेलन्हि ।

"झमिक ड्यौढ़ी "राजनगर" समीपी विद्वान्, चतुर लोक, पँच घरक दीन दरिद्रक आश्रय बुझि पड़ै लगलाह तथा सबहि क उपर श्रीमान् क प्रभाव पड़ै लागल । 'सतरंज'क स्नेह पूर्वहि सँ श्रीमान् कैँ छन्हि, यदर्थ थोड़ेक दिनधरि पिलखबाड़ क पं० कैलाश झा कैँ मासिक वृत्तिओ देल जाइत छलन्हि ।

"मैथिल ब्राह्मण मेँ सर्वप्रथम सुगौनाक बाबू खोजीन्द्र नारायण कैँ आश्रय दै राजा श्रीधर नारायण क बचल बड़ थोड़ 'जमीन्दारी' (जे हुनक पत्नी श्रीमती रानि साहिबा क अधीन छलन्हि, पश्चात् ओ अपन एकमात्र दौहित्र बा० श्री शशिधर नारायण झा क नामेँ 'रजिस्ट्री' करौलन्हि ओकर) क बीमा लै बिलायत धरि 'मोकद्दमा' चलाए ओ जीति उक्त बाबू खोजीन्द्रनारायण कैँ सुगौना मेँ स्थिर कैलन्हि, तखन उक्त बाबू (श्रीधर नारायण) असहाय एम्हर ओम्हर हटि गेलाह तावता एतबा कहब जे अपन आन्तरिक संकल्प कैँ पूर्ण करैक हेतु एकमात्र पुरुषवीर छथि । द्विपक्ष मेँ एक कैँ हानि तथा दोसर कैँ लाभ ई तँ होइतहि छैक, तखन की बाजल जाय " मनसि केवलं मज्जति" ।

"प्रायः वर्ष सत्रहेक भेल होएत जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर जी० सी० आइ० ई० गत भेलाह ओहि उपर उक्त श्रीमान् ताहि सिंहासन पर आरूढ़ भेलाह । भारत सरकार योग्यता देखि समस्त भारतवर्ष क धर्म सम्बन्धी विषयक नायक हिनकहि बनौलन्हि तथा अनो आन कार्यभार हिनका उपर देल गेलनि, जाहि सब कैँ हमर श्रीमान् बड़े नैपुण्य सँ संपादन करै लगलाह ओ अपन राजकाजहु कैँ सर्वथा अन्तर्दृष्टि सँ देखै लगलाह । वस्तुतः एतेकटा राज, एतेक कार्यभार, अपन नित्य ब्राह्मण्य संस्कार तथा अनेक सभा समिति क आधिपत्य, एहि सबहि कैँ सुप्रबन्ध सँ चलाएब हिनकहि सँ हो ।

"हमर श्रीमान् मिथिलेश कैँ प्रायः कहिओ मृगया (शिकार) व्यायाम (कुस्ती कसरति) गान, नाच, नृत्य, वाद्य, वस्त्राडम्बर इत्यादि ठाट बाटक आवेश नहिएँ, किन्तु सन्ध्या, गायत्री, जप, देवता पूजा, शास्त्रीय-तत्त्व विषय कैँ बुझब, निष्कपट विद्वान् सँ आलाप करब, तीर्थादि मेँ स्नानादि करब, बहुधा शास्त्रहि क विचार करब ओ देखब तथा सब किछु कै राज्य कैँ बढ़ाएब येहटा हिनक अपन मुख्य कर्त्तव्य छलन्हि ।

"बिनु राज्याधिकारी साक्षात् पुत्र नहि ई विचारि श्रीमान् केवल पुत्रार्थ द्वितीय विवाह कैलन्हि, जाहि पक्ष में अनुपम तपोबलहि क प्रभाव सँ श्रीमान् महाराज कुमार युगल तथा श्री मती ज्येष्ठा महाराजकुमारी छथि, जे देखि सुनि हमरा सबहि मङ्गलार्थ ईश्वर सँ प्रार्थी छी।

"वस्तुतः श्रीमान्क गुण वर्णन करी तकर लेश मात्र हमरा योग्यता नहि किन्तु 'मि० मोद' कैं पूर्ण करब अद्यावधि हमरहि कप्पार पर राखल अछि तखन जे अपन क्षुद्रा योग्यता अछि तदनुसार लिखि गेल छी ओ पुनि लिखितहु छी। आइकाल्हि समाचार-पत्र क सम्पादक क धृष्टता अवर्णनीय अछि, अर्थात् अपना जीव कैं तुच्छ बुझि जकरा जेना पावल, उचित हो वा अनुचित लिखि मारल।

"आहा! कतबो क्यो लिखो, परन्तु ताहि विषय दिशि दृष्टिपातो नहि करब, कुकुर भुकि रहल अछि दिग्गज अपन मार्ग धै जा रहल छथि ई चारिताार्थ्य हमर उक्त श्रीमानहि में होइछ। कतेको लोभीजन परम दयालु हमर श्रीमान् कैं कृपण कहैत छन्हि जाहि हेतु कतेक गोटा सँ व्यर्थ बजैत बजैत हमर कण्ठ दुखा जाइत अछि, 'कलकत्ता क अंग्रेजी वा संस्कृत विभाग में छात्रवृत्ति, जकर सुख प्रायः बंगाली भाइ करैत होथि, पुस्तकालय, 'लाइब्रेरी', विश्वविद्यालय में पाँच लाख इत्यादि कतेको लाख गना जाइत छी, किन्तु मिथिला क हेतु 'श्रीमती रमेश्वरी लता विद्यालय' छाड़ि और किछु नहि कहि अनेको हमरा सँ रुष्ट होइत छथि तनिका क्रोधैं हमहूँ कहैत छिऐन्हि जे करी धरी किछु नहि "हमरा श्रीमान् महाराज बहादुर किछु देथु" ई कोना हो; हमरा जनैत जे मूर्ख छथि से खेती करथु तथा अन्यान्ये से से काज करथु जाहिसँ उदरदेव क पूजा हो, जे क्यो पढ़ने छथि ओ लोकनि अपन पारिश्रमिक पारितोषिक पावि निर्वाह करथु, से सब किछु नहि जे भेटैत जाए से लैत जाइ; अपने अपन आत्महु कैं सन्तुष्ट नहि कैं सूद पर टाका लगवैत जाइ वा स्वच्छन्दे जे भेटल तकरा उड़बितहि जाइ तँ ई कि अनका बुतें नहि होएतैक? जाहि कोनहु रूपैं हो जँ श्रीमान् कैं राज्य छन्हि तँ ई गौरव हमर मैथिल जाति क नहि थिक? दिनानुदिन राज्य समृद्धि बढ़ल जाइछ ई देखि हमरा लोकनिक हृदय नहि जुड़ाइछ? 'मिथिलेश' कहि श्रीमान् सब देश में आदृत होइत छथि, ई आदर मैथिल क नहि थिक? वस्तुतः क्षुद्र हमरा विचारैं निश्चय होइछ जे जा धरि मैथिल जातिक एहन संकुचित हृदय रहतैक ता धरि श्रीमानहु

क त्रित ताहि जाति पर ओहने रहतन्हि, तथापि जतबौ श्रीमान् करैत जाइत छथि तकर प्रतिफल एम्हर सँ सम्पन्न होइछ ?

"सब सँ पैघ ई गुण क्तेकटा जे आन ककरो कतबो पैशुन्य करै, सुनबे नहिँ, जँ बहुत भेलतँ कनेक विचारि अनठा देल, परन्तु 'मिथिला मोद' पर सबहि क पैशुन्य चलितहि छन्हि से 'मोद'क अभाग्य क फल थिकन्हि।

"हमर श्रीमान् क आन्तरिक भक्ति ओ माला क फल देखू जे क्यो हिनक शत्रु स्थिर नहिं रहैछ, तँ जँ 'अजातशत्रु'ओ हिनका कही तँ अत्युक्ति नहिं। विचार करैक थिक जे समस्त भारत देशे गंगाजल सँ वंचित भै विद्यहु में रोह होबै पर भेल, तखन हमर श्रीमांने बद्धपरिकर भै सब ठाम राजधानी राजधानी जाय कोन रूपैं धन-संचय कैलन्हि ओ श्री १०८ गंगाजी क नहरिक उपाय करौलन्हिए,ई स्मरण करैत जाइत छी ? की ई अनकहु सँ होइत ? तँ पूर्वहि भेल रहैत। धन्य ई श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर।

"एना जा जीउब ता गबितहि जाएब ता मध्यहि में जे आवश्यक बूझि पड़ैछ से नहिं कहने नहिं रहि होइछ, तँ जँ एतेक सुनल जाए तँ विशेषतः इहो सुनल जाय —

"धर्मावतार! श्रीमान् क योग्यता कें प्राप्त करब असम्भव नहिं, वस्तुतः असाध्य। तावता मिथिला देशक उन्नति (जे प्रभुवरक अध्यक्ष में भै जँतैक तकरहि सँ आगाँ आगाँ चतुर लोक होएत तँ निबाहैत जाएत) कैल जाओ। जा धरि हमर भारत-सरकार हमर देश कें, हमर देशीय पण्डित कें, हमर देशीय व्यवहार ओ व्यवसाय कें, हमर देशीय भाषा, वेष तथा विशेषतः शिक्षा दिशि कृपादृष्टि नहिं देताह ता हमरा लोकनि कें सद्यः श्रीमान् सँ उपकार नहिं बुझल जाएत ओ श्रीमानो मिथिलेश कहाय आन सवहि क ओतै अनृणी किन्तु मिथिला क लेखैं बड़का ऋणी बनले रहब। की आन आन पंडित 'महामहोपाध्याय' पदवी पैबा योग्य नहिं जे अन्यदेशीय कतेक साधारणो एहि पदवी कें दूरि कै रहल अछि ? की एहि विषय में श्रीमान् कें बजबाक अधिकार नहिं! आन देशक लोक बी० ए०, एम० ए० धरि पढ़ि 'सरकारी' काज करैछ तथा हमरा मैथिल कें से कियैक नहिं ? हम तँ कहि सकैत छी जे सातु, मिरचाइ, लसुन,प्याजु खाइत (श्रीमान् सबहिक आश्रय पाबि) भारी मार्जारो (कवर्गत्वेन) आइ अनेक महल उठाय आनन्द करैत अछि ओ मैथिल 'मूस साहेब'क कोठा खसल, घर खसल, आब वस्तुतः

अपन खुरचालि सँ बिभरि मे नुकाय चाहैत छथि की येह हो ? लिखि गेलहुँ अछि जे श्रीमान् अजातशत्रु थिकहुँ तखनहुँ जँ समदर्शी भै नहि प्रवटित होएब तँ परीक्षा क दाउनिमे बहितहि रहब, तकरहु तँ वर्षमा दिन पर पखेब नोन, तेल देल जाइछ, एम्हर तँ किछु नहि, अस्तु। विचारैक थिक जे हमरा पर जे क्यौ क्यौ कर्मचारीगण वा थोड़ बहुत राजपंडितो लोकनि बघुआइत रहैतछथि से की हम विक्षिप्त छी जे बिनु बुझनहि बवरहु अनुचित कहैत छिऐन्हि ? ओ लोकनि अपन दर्प सबहिक उपर देखबैत छथि से टा हम नहि मानबैन्हि, उचित वजबे करब, किन्तु अवाच्य नहि।

"की जे क्यौ सप्तशती पाठ करत ताहि हेतु वा हवने करत ताहि हेतु 'भूतशुद्धि' मे परीक्षा कैल जाय ? भला श्रीमान् कें छाड़ि आन के छथि जनिका 'भूतशुद्धि' अवैत छन्हि ? संस्कृत वाक्य अभ्यस्त कैने नहि से (भूतशुद्धि) अवैत छैक। हा ! करुणानिधान ! जखन वस्तुतः भूतशुद्धि आबि जाएत तँ हमरा प्रयोजने ककर ? इत्यादि परीक्षा कैं की कहब ? पश्चात् एहि विषय मे थेह होइछ जे श्रीमान् कैं अवसरे नहि, बाजी तँ के बाजत, ता एम्हर जे चाही से कै लेल जाइछ, परन्तु सुवास तँ उड़ितहि अछि। भला एहन देशीय थोड़ बहुत अंगरेजी पढ़ि श्रीमान् क समीप मे कुर्सीपर अफड़ि वैसे ओ हमरा लोकनि म० म० पदवी पाबिओ ततै "सूजिआओल" (बूटमार) सेजहिपर वैसी ई अनादर सह्य होइछ ?

"जे क्यौ श्रीमान् क साक्षात् आश्रय मे रहत, तकरा तँ वस्तुत. दोसर उपाय नहि, से जँ मैथिल थिक तँ अन्यदेशीयापेक्षा ओकरा वेतनादि थोड़ देल जाइछ, तखन ओहो शून्य देवलासँ घेँट नमरवैछ, एम्हर हुनक कार्य देखैक हेतु दूरबीक्षण यन्त्र लागल रहैछ, जाहि सँ तस्कराद्युपाधि क 'सार्टिफिकेट' पाबि ओ बहिष्कृत कैल जाइछ, से नहि कैल जाय; किछु वेतन अधिक नहि तँ थोड़ो नहि देल जाइन्हि तथा रखबहि क दिन आँखि उनटाय देखाय लेल जाइन्हि जे 'अढ़ाइ आखर'क जाप कैने छथि कि नहि ? जे से कैने रहत तकर उपरका पपनी उनटैत पनटैत खसैत रहैत छैक। धिक्कार ताहि मैथिलाधाम कैं ! जे अपन अधम काज सँ सबहि कैं अश्रद्धाक डबरा मे दै सीदित करैछ।

"सर्वान्त्य मे येह प्रार्थना जे एतेकटा संस्कृत क मर्मज्ञाता भै भारत-सरकार सँ मैथिल पंडितक हेतु किछु नहि कैल जाइछ, प्रत्युत संस्कृत क

पंडित कैं वेतन ततेक अल्प देल जाइत छन्हि जे दिन-राति ओ लोकनि झँखैत समय कटैत रहैत छथि वा द्रव्य क हेतु एम्हर ओम्हर डेग उठबैत छथि, ई उचित नहिँ। जँ श्रीमान् क देने पेट नहिँ भरलैक ताहि दुरोदर कैं हटाइए देल जाय वा पेट भरै योग्य नहिँ दाना तँ चरो देल जाइक। जनिका श्रीमान् जनैत छथिन्हि जे उत्तम पंडति छथि तनिक अनादर नहिँ हो, श्रीमान् समदर्शी थिकहुँ, एखन एतबै आगाँ 'जेहन बनत पुनि तेहन बनाएव।'

श्रीमन्नभ्युदयोऽस्तु आगु मिथिलैं भाषा बजै छी क्षमा
हो, विज्ञप्ति करैत छी यदि कृपा दै आँखि घूमै समा।
की आश्चर्य ! विवेक हा ! नहिँ कहो ? तौँ की करी ? की मरी
जीवी वा नहिँ कण्ठ दाबि कहबे, दूरे करी नौकरी ॥

की ने नीच कहैछ ? ई कहु बुझू 'बव्भन् हटो' ने सुनी ?
हा ! विप्रध्वज ! मैथिलेश अपने विद्या विवेकी गुनी।
भैओ योग्य, अयोग्य आन थुकहा की देखि भाषा गढ़ै
पाछू कोन तुकाय मैथिल रहै डेगो न पावै बढ़ै ॥

हा ! हे नाथ ! दया करू, फलद की हो दीन कैं भूकने
देशे भागलपूर में प्रभुलगे 'छी छी' कथा कूट ने।
लै टाकौ कत खाय पीबि बदला दै गेल !! मिथ्या कथा ?
छी ने मैथिल क्यो ? कतै 'मिहिर' ! हा ! मोदैक माथैं व्यथा ?

हा नाथ ! आइ घरि एहन ने सुनाबी
पोथी लिखू, सब पढ़ाव क योग्य पाबी
सन्तोष हेतु किछु जीवन-दान टाका
बाजैछ लागल मुहैँ बुड़ि मोद पाँका ॥
विदेह, मिथिला, सीता, कौशिकी वाङ्मती नदी
नारायणी, वेत्रवती, गण्डकी, त्यागि कै मदी।
जरासन्धैं क नामें काँ विहारी बोध सोध लै
'अशोक'क शिलालेख पाबि गाबै वृथा बलै ॥

की ओ जनैछ मिथिला मिथिलेश गाथा
बाल्मीकि राखल कथा नहिँ राखि माथा।

व्यासो क भारत बुझै नहिँ, ताहि संग
हा ! नाथ ! मातृमिर्थिलाक करै छि भंग ॥[1]

—वैह मोदशमंरक्षक एक शोकाकुल ।"

जखन मैथिल महासभाक संगठन भइए रहल छल, प्रथमो अधिवेशन भेल नहि छलैक, सम्भावित सम्मेलनक तैयारीक प्रसंग रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगामे एक सभा पं० विन्ध्यनाथ झाक अध्यक्षतामे भेल छलैक तकर विवरण प्रकाशित करैत सम्पादकीय टिप्पणी दने छथि जे हिनक उदार दृष्टिकोणक परिचायक अछि । म० म० झाजी लिखने छथि—

"कतेको मैथिल महोदय लोकनिक ई विचार जे यदि "मैथिल-समाज-विचार-सभा" होइत अछि तँ ताहि मे (प्रतिष्ठितो रहथु तथापि) अन्य जातिक निवेश कियैक ? यद्यपि उक्त 'वकील साहेब' 'तिरहुतिया' कायस्थे थिकाह तैं सदा मैथिल ब्राह्मणक हितकारी ओ सत्कारके किन्तु प्रतिष्ठित बुद्धिमान जे क्यो सभा मे बजावल जैताह से आदरपूर्वके, तखन 'सतरंज' खेलैबाक काल खेड़ाक मुँह कोना बन्द कैल जाय ? प्रकृति विषय मे से भेलासँ किछु निन्दा वा स्तुति क सम्भावना, जहिसँ हुनकहुँ अनुचित ओ लोकहु कैं असमंजस जानि सभा सँ अरुचि इत्यादि । वा मिथिला मे जे होथि से (मैथिल) लै यदि विचार करी तँ आनो आन प्रतिष्ठित क्षत्रिय, वैश्य लोकनि कैं कियैक छोड़ि दी, हमरा जनैत तँ मिथिलास्थ महन्तो लोकनि अवश्य निमन्त्रित भै आबथि' ।"[2]

एहिसँ स्पष्ट अछि जे हमर चरितनायक एहन संगठन चाहैत छलाह जाहिसँ मिथिला, मैथिल, मैथिलीक संरक्षक सब जातिक लोक अपनाकैं मैथिल मानय; केवल जाति विशेषसँ सम्पूर्ण सामाजिक सुधार सम्भव नहि होयत ।

हिनकामे प्रत्युत्पन्नमतित्व केहन छलनि तकर पूर्ण परिचय तँ हिनक लिखित समस्त रचना ओ सम्पादित सम्पूर्ण 'फाइल'के धड्लासँ प्राप्त होइत अछि । एहि ठाम एकमात्र छोटसन उदाहरण अपना उक्तिक पुष्टिमे उपस्थित करैत छी ।

1—'मिथिला मोद' उद्‌गार १०९ ।
2—'मि० मोद' उद्‌गार ३९ पृ० ९ ।

बलवा ग्राम निवासी एक विश्वनाथ मिश्र छलाह। यदा-कदा किछु तुकबन्दी क' प्रकाशनार्थ ओ मिथिला मोदमे पठबैत छलथिन। हुनक लिखल दू गोट पद एक छन्द रौला आ दोसर छन्द हरिगीत शीर्षकसँ प्रकाशित कयलथिन। हरिगीतक पद देखल जाय—

"जेहन छलि ई हमर मिथिला तेहन नहिँ अछि आब रे।
पठन पाठन मित्रता तजि देलक बड़ गोट डाक रे॥
सब कुचालि निहारि मैथिल देथिन्हि सब काँ साप रे।"

एहि पदमे मात्र ई तीन चरण अछि। एकर चारिम चरणक पूर्त्ति करैत म० म० झाजी सम्पादकीय टिप्पणीमे लिखने छथि—

तीनि पैरक काव्य देखल बलिक बामन बाप रे।"[1]

यद्यपि म० म० झाजी कवि नहि छलाह ने कविक रूपमे हिनक ख्याति छनि तथापि छन्दबन्धसँ अनभिज्ञ नहि रहथि। अवसरपर छन्दोबद्ध रचना क' लैत छलाह तकर अनेक उदाहरण उद्धृतो भ' चुकल अछि। एतवा अवश्य जे छन्दोविधानमे हिनका सिद्धहस्तता नहि प्राप्त छलनि तथापि काज चलयवाक जोगर इहो काज क' लैत छलाह तकर प्रत्यक्ष उदाहरण हिनका द्वारा अनूदित हितोपदेशकेँ देखलासँ भेटैत अछि। स्थाली-पुलाकन्यायसँ एक मात्र उदाहरण एतय उपस्थित करैत छी। हितोपदेशक एक श्लोक अछि—

विनाऽप्यर्थैर्वीरः स्पृशति बहुमानोन्नतिपदं
समायुक्तोऽप्यर्थैः परिभवपदं याति कृपणः।
स्वभावादुद्भूतां गुणसमुदयावाप्तविषयां
द्युतिं सैंही किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते॥

एकर अनुवादक रूप देखल जाय—

"प्रभावी जे हो से धन जन बिनो उन्नति लहै
धनो राखै तैयो कृपण बहुधा क्लेशहि रहै।
स्वभावैं जे सिंहक प्रबलबलदर्पादिवहुता
कोना पावै कुक्कुर पहिरि गहनो से पुरुषता॥"[2]

१—'मि० मोद' उद्गार ६१, पृ० १३।
२—'मि० मोद' उद्गार ३२, पृ० ५१।

संस्कृतमे श्लोक शिखरिणी छन्दमे अछि। एकर लक्षण ग्रहण गेल अछि—

यदा पूर्वो ह्रस्वः कमलनयने षष्ठकपरा
स्ततो वर्णाः पञ्च प्रकृतिसुकुमाराङ्गि! लघवः
तयोऽन्ये चोपान्त्याः सुतनु जघनाभोगसुभगे!
रसै रुद्रैर्यस्यां भवति विरतिः सा शिखरिणी ॥

उपर्युक्त नियमानुसार सिंह शब्दक षष्ठी विभक्तिक चिह्न 'क' केँ तथा कुक्कुर शब्दक 'र' केँ छन्दोनुरोधेँ हलन्त पाठ कयने छथि। अस्तु।

म० म० झाजी स्त्रीशिक्षाक विरोधी नहि छलाह, परन्तु जाहि प्रकारक स्त्रीशिक्षा सम्प्रति समाजमे प्रचलित अछि तकर विरुद्ध छलाह। म० म० झाजी कट्टर सनातनी। सनातन धर्मक आधार वर्णाश्रमव्यवस्था। आश्रममे सबसँ मुख्य गार्हस्थ्य। गृहस्थीक आधार गृहिणी। गृहिणीक हेतु जाहि शिक्षाक आवश्यकता से अवश्य हो, किन्तु स्कूली शिक्षाक कारणेँ सम्प्रति समाज ओ परिवार कोना खण्डित भ' रहल अछि, टूटि रहल अछि, से सभक समक्ष अछि। म० म० झा जीक विचार एहि प्रसंग की छलनि से हुनक निम्नांकित अभिमतसँ जानल जाय सकैत अछि। ओ लिखने छथि—

"बहुतो हमर भव्य नव्यविद्य सुशिक्षित जनक चित्त मेँ परिताप होइत रहैत छन्हि जे स्त्रीगण मध्य शिक्षा अर्थात् किछु लेख पठनादि क व्यवहार आवश्यक थिक। जाहि बेत्रेक भिन्न-भिन्न स्थल मेँ रहैत पति पुत्रादिक ओतय स्नेहसूचक पत्र व्यवहार साक्षात् = अपन हाथेँ नहिँ भय स्नेह टटले मन बुझना जाइछ। ई विषय नवीन नहिं थिक किन्तु प्राचीन समय सँ चल अबैत पुराण इतिहासेँ बुझना जाइत अछि, जकर उल्लेख करब नवीन 'मोद'हु कँ पुराण करब सन होएत। थोड़ेक समय पूर्व भय गेल अछि, जाहि मेँ 'लखिमा' तादृशी पण्डिता भय गेलि छथि जे ओ पाण्डित्य! सम्प्रति दिनराति विद्याव्यवसायहि मेँ मग्न पुरुषहु क ओतय दुर्लभे, एतावता एहि शिक्षा क प्रचार अवश्य होमै बुझ। अस्तु।

"मोदामोदिजन! की अपने लोकनि ई बुझैत छी जे मिथिलातिरिक्त सुशिक्षित अनेक देश मेँ जाहि प्रकारेँ पाठशाला मेँ थोड़-थोड़ अवस्था क बालिका लोकनि जाय-जाय पढ़ैत छथि ताही रूपेँ मिथिलहु मेँ हो? होओ उत्तम थिक। किन्तु सङ्गहि इहो जनि राखू जे एकर चरम फल एतबे

होएत जे ई भेला सँ परम आनार्य आर्यमत क पोषण होइत आहा ! ओकर बेटी उढ़रि गेलैक वा गामहिँ गाम प्रचलित 'वगड़िया'— इत्यादि निवृत्त भय कलिमहिमा बढ़त ! से वढ़ौ, उचिते थिक।.........

"औ महापुरुष शिक्षाप्रचारक ! ई शिक्षा की परमार्थविधायक बुझैत छी ? किछु नहिँ प्रत्युन सर्वथा अधःपतन क मूल निश्चय जानू। औ लोकनि ! वाल्यावस्था सँ पढ़ि-पढ़ि लोक में प्रतिष्ठित कहबैत क्यो आर्य, क्यो जैन, क्यो तुलसी राम, क्यो क्यो वावा सिद्ध, एहिना बौआय-बौआय जीवनापवाहन करैत छी तखन थोड़ेक दिन एम्हर ओम्हर पढ़ि बालिका लोकनिक ज्ञान केहन होएतन्हि ? हमरा जनैत तँ उच्च कुलक बिनु पढ़लिये १० वर्ष अवस्थाक कन्या कैँ प्रायः जतवा अपन कुल, शील, श्रद्धा, भक्ति ओ स्नेह रहैत छन्हि पोथा पढ़िनिहार नीच कुल'क युवतीअहु कैँ ओ दुर्लभ।...............

"सर्वथा सबहि कौ उत्तम रूपैँ विचारि देखक थिक जे जाहि सँ धर्मरक्षा रहै ओ स्त्री पुरुषक सौमनस्य में हानि नहिँ हो एहन शिक्षा अवश्य करक थिक। (जाहि कुल में स्त्री सँ स्वामी ओ स्वामी सँ स्त्री सन्तुष्ट रहथि अवश्य सर्वदा ताहि कुल में कल्याण होइत अछि। मनु क वाक्य —

"सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥")

कन्या क माता कैँ उचित थिकन्हि जे कन्या कैँ वहुत उच्चस्वरैँ बाजब, स्वच्छन्द जहिँ तहिँ आङने आङन घूमब, निकृष्ट लोक सँ वहुधा सम्भाषण करब, थोड़बहि में रुष्ट भै जायब, उत्तमे वस्त्र पहिरब, उत्तमे भोजन करब इत्यादि सँ बचाय उत्तम भानस करब, घरक परिचर्या करब, नम्रभाव अर्थात् अपन श्रेष्ठ जनक ओतय धाड़ खसाय रहब ओ अपना आन कैँ चिन्हब इत्यादि शिक्षा अवश्य देथिन्ह। ई नहिँ देला सँ ताहि कन्याक श्वशुरालय उत्तम भेलन्हि तँ वड़ सुन्दर नहिँ तँ ओ अनेक कैँ दूरि नय अपने तँ कतेको जन्म धरि नरकभागिनी होइतहि छथि वरुक देखा देखी अनकहु अपने सन बनयबा पर होइत छथि, "फूटल भाँड़ सङ्ग जोहै"। ओहन कन्या लिखथु वा पढ़थु ओहनाक ओहनी रहैत छथि।"[1]

---

१ – 'मि० मोद' उद्गार २८ —२९, पृ० ७५ — ७८।

म० म० झा जी ओ मैथिली

मैथिली कँ म० म० झा जीक सबसँ विशेष अवदान प्राप्त भेल छैक। जँ मैथिली क प्रथम पत्रकार हिनका कहल जाय तँ असंगत नहि होयत। कारण यद्यपि, पहिल मैथिली पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' छल, ओकर नीति मुख्य रूप सँ मैथिली साहित्य क भण्डार कँ परिपूर्ण करब छलैक। समाज सुधार आदि विषय कें 'हितसाधन' व्यापक रूपें ग्रहण नहि कयने छल, दोसर ओकर जीवन ततेक छोट भेलैक जे ओहि छोट अवधिमे विशेष कयलो नहि जाय सकैत छलैक। 'मिथिलामोद'क सम्पादन क' म० म० झाजी, वस्तुतः हिन्दीकें जाहि रूपें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एक स्थिर आधार देलथिन, सैह काज कयने छथि। मैथिलीक गद्यक स्वरूपकें निखारि देनिहारमे ई अग्रगण्य मानल जयताह। मैथिली साहित्यक इतिहास-कार गम्भीरतासँ हिनक अध्ययन बिनु कयनहि हिनका प्रति अपन अभिमत प्रकट क' देने छथि। संस्कृताश्रित विकासशील गद्य लिखनिहारक श्रेणीमे राखि हिनका एक वर्गीय बनाय देने छथि।[1] जखन कि वस्तुतः हिनक भाषा विषयानुकूल शब्दविन्यासमे अपना समयमे अनुपम छनि। हँ, पं० त्रिलोचन झा ओ काली प्रसाद सिंह चौधरि हिनक अतिशय निकट प्रतीत होइत छथि। एहि हेतु 'मिथिलामोद'क सम्पूर्ण अध्ययन अपेक्षित अछि। म० म० झाजी कें आधुनिक गद्यक विभिन्न शैलीक प्रतिष्ठापक कहल जाइनि तँ अत्युक्ति नहि होयत।

मातृभाषा ओ मातृभूमिक जे हिनका हृदयमे प्रेम छलनि, मातृभाषाक विकासक हेतु जे आगि छलनि से अनकामे देखबामे नहि अबैत अछि। ई ओही समयसँ अनुभव करय लागल छलाह जे मातृभाषा शिक्षाक माध्यम हो। मातृभाषाक एक स्थिर स्वरूप हो। एही उद्देश्यसँ जखने मैथिलीक सेवाक क्षेत्रमे पादर रखलनि तखने एहि दिशामे प्रयत्नवान भेलाह। 'मि० मोद'क प्रथमे उद्गारसँ 'मिथिला भाषा विचार' नामसँ व्याकरण लिखि प्रकाशित करब आरम्भ कयलनि। भाषास्वरूपक प्रसंग हिनक अभिमत उद्धृत करब सर्वथा प्रासङ्गिक होयत। निम्नांकित उद्धरण द्रष्टव्य —

१—मै० सा० क इतिहास, डा० श्री दुर्गानाथ झा श्रीश, पृ० १३६।

Scanned by CamScanner

"श्रीयुत विज्ञ मिथिलाभाषाविचारक ! अपने लोकनि 'मि० मोद'क लेख कैं देखि ओ आन यथेच्छ लेख कैं विचारि विप्रतिखिन्न अर्थात् कोन भाषा लिखैक योग्य थिक एहि संशय में पड़ि नानाविध शङ्का ओ समाधान करैत होएब— यदर्थं दुइ चारि (२-४) उदाहरण हम देखबैत छी यथा "ओ ई कार्ज (?) कएलैन्हि, ओ ई काज कयलन्हि, ओ ई काज कैलन्हि, ओ एहि काजकैं कैलन्हि।" आब एतै विचारणीय जे कोन प्रयोग शुद्ध। ध्यान देबाक थिक जे जे क्यो वर्षमध्य २-४ चिट्ठी मात्र लिखैत छथि हुनका बुझने तँ जे आने लिखैत छथि वेह शुद्ध, यदि ताहि प्रयोग कैं मानी तँ उार जे देखा आएल छी चारिटा सेहो पहाड़ा मैं पड़ि पहाड़ भै जाएत जे कोनहु रूपैं नहिं बुझल जाय सकैत अछि, अय च यदि उच्चारण पर निर्भर होएब तँ "कएलैन्हि, कयलन्हि ओ कैलन्हि" एहि तीनू सँ एक विलक्षणे उच्चारण थिक जकरा हम कोनहुँ मातृकाक्षर में लिखि नहिं देखाय सकैत छी, एहना स्थिति में 'कैलन्हि' येह यदि 'मोद' में प्रयुक्त होइत अछि तथापि कएलैन्हि, कयलन्हि" एहि दुनू सँ जे बोध होइत सैह बुझल जाइत अछि विशेषता ई जे एक तँ अक्षरलाघव, दोसर (ध्यान दै विचार करू जे) संस्कृत शब्दोच्चारण में जे जे अक्षर जेना जेना उच्चारित होइत अछि ताहू मेँ कैक गोट अक्षर एहन अछि जकर उच्चारणक कण्ठादिस्थान निर्दिष्ट अछि ओ तथापि भेद अछि यथा 'ऋ'क दक्षिणात्यक उच्चारण में 'रू' बुझना जायत, 'ज्ञ' क 'द्न्य', मैथिल वर्ग में 'ग्यँ' ओ नवीन शिक्षित-समाज में यथार्थ 'ज्ञ' उच्चारित होइत अछि.......।

"प्रिय भाषास्नेहिजन ! अपने जनैत छी जे एहि नानाविध भाषाक मूल की ? अर्थात् सर्वत्र कोनहु समय शिक्षित समाज में संस्कृत (एकरहु कतेक गोटैं कहैत छथि जे संस्कृत वेह कहबैत अछि जकर संस्कार कैल गेल हो, एतावता बहुतो प्राचीन काल में वैदिक प्रयोगानुसारे आर्य जाति ब्राह्मण समाज में वाक्य प्रयुक्त होइत छल जो पाणिनि ओ पतञ्जलि प्रभृति ऋषि द्वारा किछु भेद पाबि वैदिक प्रयोगसँ भिन्न 'संस्कृत' एहि शब्दैं व्यवहृत लौकिक प्रयोग कहाबै लागल) क प्रचार छल, नीच जातिअहु में विशेषतः संस्कृतहि क किन्तु बिनु व्याकरणवेत्ता क प्रयोग लेख ओ उच्चारण दुनूमें विकृत भै (बिगड़ि) देश ओ व्यक्तिक कारणैं 'गौडी, मागधी, पैशाची ओ शौरसेनी इत्यादि शब्दैं व्यवहृत भै प्राकृत वा अभट कहाबै

Scanned by CamScanner

लागल। एहि प्राकृत क प्रचार बौद्ध ओ जैन प्रभृति वेदविरोधी (नास्तिक) क ओतै अधिक अछि ओ अन्ना लौकनिक ओतै केवल नाटक ग्रन्थ मध्य जतै कतहु स्त्रीपात्र तथा नीच पात्र क उक्ति रहैत छैक जाहि में देखना जाइत अछि। अस्तु - यथा यथा कलिकाल क जाल में बद्ध भै लोक ब्राह्मण्य धर्म सँ च्युत होमै लागल तथा 'सदाचार'क न्यूनता ओ नीच जातिक वृद्धि होइत प्राकृतक प्रयोग अधिक होमै लागल अर्थात् यवन राज्यारम्भ सँ पूर्व सर्वत्र आर्यावर्त्त देश में प्राकृतिक भाषाहिक प्रभाव छल, अनन्तर यावनी (मुसलमानी) भाषा मिश्रित होमै लागल।

"प्रिय भाषाविचारक! ताही समय में धर्मभीरु पण्डित जी लोकनि लिखि मारलन्हि जे "न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि" तथा वस्त्रधारणहु कहेतु "ऊर्ध्ववस्त्रमधोवस्त्रम्" इत्यादि नाना वचन प्रमाण रहलहु सन्ता तरह, वेरा, नीक......इत्यादि कतेको शब्द मिथिला-भाषहु में झिझड़ाएल। पश्चिम प्रान्त में यवन क अधिक प्रचार अतएव ताहि शब्द ओ वेषहुक प्रचार मिथिला देश सँ अधिक जे 'उर्दू' तथा यावनी शब्दें व्यवहृत भै मिथिला में निन्दित छल। वस्तुतः "वह जाता है, तुझे, मुझे, आओ, जाओ" इत्यादि उर्दू नहिं थिक किन्तु अद्यावधि कतेको महोदय लोकनि विद्यमान छथि जे उर्दूए कहैत छथि, अस्तु, पठित समाज में 'हिन्दी'कै प्रसिद्ध अछि। एहि हिन्दी क प्रचार ओ सुधार केहन भै गेल अछि ओ होइत जाइत अछि ई ककरहु सँ अविदित नहिं। एहनहु अवस्था में अनेक देशभाषा अछि जे अपन प्रबल प्रचारक कारणें आदृत भै रहल अछि परन्तु मिथिला 'जेहने देश तेहने वेष' कैं चरितार्थ कै दिनानुदिन ईर्ष्या बढ़ाय फुसिए नाक मारि रहल अछि। ओ महाशय! डोंड़ो डावरक काछु सतत काल लखड़ौअहि में अपन मूड़ी(घेंट) कैं नुकौने नहिं रहैत अछि यदि अपनहु लोकनि कनेक अनुग्रह कै विचार करब तँ कयो झपटि नहिं लेत-देखू—आवहु दछिनाहा पछिमाहा क बाजब –कैलन खैलन इत्यादि अछि जे मुखसंकोच-विकाश सँ कैलन्हि' खैलन्हि इत्यादि उच्चरित होइत अछि। उपर उक्त 'कै' तथा 'खै' में यथार्थ ऐकार क उच्चारण नहिं होइत अछि किन्तु दुनू गलफड़ कैं विस्तार कै विस्तृत कण्ठतालु सँ उच्चारण होइत अछि। देखू— 'हम जाइत छी' मिथिला, 'आमी जाइते छी' बंगला, 'म जान् छु' नेपालमें बाजल जाइत अछि किन्तु विचार कैला सँ स्पष्ट बुझना जायत जे वस्तुतः

एकहि शब्द सँ बनल वाक्यक अक्षर देश कोसक भेदेँ मुखक संकोच ओ विकाश सँ भिन्न भिन्न भाषा प्रतीत होइत अछि अर्थात् बंगालीक मुखमण्डलक नीचा भाग किछु उपर॰ भागक अपेक्षेँ बढ़ि उच्चारण कँल जाइत अछि, येह मुख्य कारण थिक जे अंग्रेजी शब्दक उच्चारण प्रायः अन्यदेशवासीक अपेक्षेँ बंगाली क शुद्ध होइत अछि। एवं नेपाल देशीय क नाक संकुचित, मुँह चढ़ल ओ मुखाग्र बढ़ल होइत छन्हि अतएव उच्चारणो तादृशे होइत अछि, यद्यपि 'काठमाण्डू'क लोक सुन्दर होइत अछि किन्तु तैँ यावत्पर्वतस्थ नेपालीय क लेखा नहिँ हो।

"किछु हो, मिथिला भाषा सम्प्रति ताहि अवस्था मेँ नहिँ अछि जे छाती तानि स्वतन्त्र रूप सँ चलै, से जँ देखैत छी तँ 'हिन्दी'अहि कँ कहब परन्तु हमर कतेको पंडितजी लोकनि यादृशे जन्मतः पढ़ल अपन संस्कृत क दुर्दशा कैने रहैत छथि तादृशे 'हिन्दी' अहुक।

"हंम पंडितजी सँ पुछैत छिऐन्हि जे 'वह खाता है' एहि 'हिन्दी' वाक्य मेँ 'है'क उच्चारण कोन रूपेँ कैल जाइत अछि ? यदि ताहि उच्चारण कँ अपने मानैत छी तँ 'कैल' एहि शब्द क आगाँ मिथिला-भाषाक श्राद्धार्थ 'वाछा' जनु लगाबी। बहुतो पंडितजी क बुझने 'ओ जे कहलन्हि' एहि वाक्य मेँ 'जे'क स्थान मेँ 'ये' होयब उचित तथा 'कहन'क स्थान 'कपन'।

"प्रिय मोदस्नेहीजन ! केवल 'कौमुदी' क शास्त्रार्थँ' एहि सभैक पटुता नहिँ भै सकैत अछि, एहि हेतु हेमचन्द्र कृत वालबोध, वररुचिकृत प्राकृत कौमुदी तथा प्राकृत प्रकाश तथा हिन्दी क अनेक अनेक पटु लोकक कैल व्याकरणक ग्रन्थ देख् तखन एहि सभैक विचार हृदय कँ स्पर्श करत अन्यथा ई भेँड़ा क लड़ाइ नहिँ थिकैक जे जतहि देखब सिंह रोपि देब।

यद्यपि हमरा यथार्थ अहङ्कार नहिँ अछि किन्तु काबुली ऊंट (जनिका पीठ पर लादल मेवा रहिओ खैबाक काल काँट) लोकनि सँ प्रार्थना वा नोदना जे आबहु अपनाकँ मनुष्य बूझि देश-भाषास्नेही होथु जाहिसँ संस्कृतहु क मर्म बुझना जैतन्हि जे भेलासँ सर्वत्र आदृत होयताह, से नहिँ कैला सँ पंडितक कप्पारमेँ भाषानभिज्ञता क कलंक झलकितहि रहत। शेष पुनः आगाँ--"[1]

1—'मि॰ मोद', उद॰ ४४, पृ॰ ४-८।

मैथिल महासभाक गठन प्रक्रियामे छल, प्रथम अधिवेशनक तैयारी चलि रहल छल। ताहि समय जे कार्यप्रस्ताव होइत छल से हिन्दीमे। म० म० झाजीक टिप्पणीपर दृष्टिपात कयल जाय—

"जनिक अनुरोधैं अपने मातृभूमिक केन्द्रस्थान में रहि 'हिन्दी' में कार्य-प्रस्ताव देखबैत छी से लोकनि की मातृ-भाषावंचित छथि? अथच यदि मातृभाषानिपुण भैओ मातृभाषा क अनादर देखबैत छी तँ एहि सँ केहन शिक्षा विचार ओ समाजशाधन (?) अपने लोकनिक हृदयगत अछि, ई नहिं बुझना जाइत अछि।..............

"क्यो अप्रसन्न जनु होइ। क्यो कतबो धनोपार्जन करब अपने अपन देखने आङुरहि क गणना में रहब। अथ यदि उदार भाव सँ जनसमुदाय देखि तादृश व्यवहार करब तँ अवश्य अपरिमित सुखसौरभ क अनुभव करैत यावद्ब्रह्मसृष्टिधरि पुण्यश्लोक मंडली में परिगणित होइत रहब। इति पुनः—।"[1]

मातृभाषाक प्रति उदासीनता ओ सामाजिक आचारविचारक ह्रास देखि हिनक हृदयमे कतेक ओ केहन उत्तेजना होइत छलनि तकर परिचय मैथिल महासभाक प्रथम अधिवेशमे देल हुनक वक्तृतासँ भेटैत अछि। एहि ठाम हुनक अविकल वक्तृता उद्धृत कयल जाय रहल अछि जे हुनक व्यक्तित्व पर पूर्ण प्रकाश दैत अछि।

"श्रीमत्यै मिथिलायै नमः

माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी।
काटक्षयतु कल्याणी कदम्बवनवासिनी॥

"अहोभाग्य! जे ई परमपुण्यप्राप्य श्री मन्मिमिथिलेश महाराज, श्रीमान् राजा, राजकुमार, बबुआन्, विद्वान्, श्रोत्रिय-योग्य प्रभृति मैथिल भूदेव, श्रीमान् महन्त, सन्त, साधु, क्षत्रिय, भूमिहार, कायस्थादि पर्यन्त मिथिलास्थ प्रायः, प्रधानतः सबहि आइ एहि सुलक्षण क्षणमध्य एकत्रित भै हमरा लोकनिक जन्मभूमि मिथिलाक उन्नति क विचार क हेतु तत्पर भेल छी।

"महोदय उन्नतिदर्शनाभिलाषिजन!

---

१ — 'मि० मोद' उद्० ३८ पृ०-१७।

Scanned by CamScanner

"येह उन्नति थिक, देखि लिअ।

"अनेकानेक धन्यवाद श्रीमान् देशसम्राट् सप्तम 'एडवर्ड', महोदय कें तथा 'गर्वनमेण्ट'कें जनिक शिक्षा संकेत पाबि परम धन्यवादाह ई मिथिला-सुपुत्र परमोत्साही हमर बन्धुगण आइ एहि अगणित गुणाधार हमरालोकनि में साक्षाद् विष्णुक अवतार श्रीमान् लोकनि क समक्ष अपनालोकनि क चरित्र गाथा क गान करैबा लैं सुखावसर प्राप्त करैलन्हि अछि।

"प्रिय बन्धुजन ! थोड़ेक कालधरि अपने लोकनि क ओतैं क्षमा-प्रार्थी छी। सम्प्रति मथिल जनसमुदायक उन्नति में बाधाकारक केवल शिक्षाक अभाव प्रधान देखना जाइछ। एतावता हम अपना में शिक्षालेशहु क अहङ्कार कैं नहिं राखि शिक्षा मात्रहि क हेतु एहि महेन्द्रोपम सभामध्य ठाढ़ छी। हम नहिं जनैत छी जे कोन हेतु लै मानव शरीर धैने अद्यावधि अपन ओ आन नहिं बुझैत छी। हा ! ई तुच्छ शरीर तखनहि यथार्थ यावत् 'अपन' ई कहनिहार एहि में विद्यमान छथि।

"की मिथिला क कोनो शरीरकृति नहिं छन्हि ? अथ यदि छन्हि तैं ताहि में 'अपन' अर्थात् 'मैथिल' एहि मिथिलाक प्राण कैं रक्षा कैनिहार शब्दक वक्ता सबहि गोट कैं उचित थिक जे जाहिसँ मिथिलाक सत्ता किछुओ दिन धरि बनल रहै से करैत जाइ।

"महोदयगण ! कोनो समय एहनो भै गेल अछि जाहि में धनधान्य क अपेक्षा अधिक सम्मान कैं लोक बुझैत छल अर्थात् ताहि समय में आधुनिक व्यर्थ ओ निन्द्य व्यवहारक प्रचार नहिं छल जाहि हेतु ईदृश जातीय महासभा कैल जाय। हँ, समाजमें दुर्व्यवहार क उद्घोष भेला सँ देशपालक महाराज पंडित लोकनि कैं सादर आह्वान कैं सुव्यवस्था बनबाय सर्वत्र सूचना देया दैत छलाह। औ पंडितजी लोकनि ! एतै 'सादर'क अर्थ ई जनु क्यो बुझी जे ताहि समय में राजा १५-२५ टाका सभा करैत छलाह, जाहि लोभैं पंडितजी लोकनि स्वच्छन्द कार्य कैं परस्पर विरोधक परिपोषक होथि, अस्तु, ई, एतबै ....।

"श्रीमन् प्रभुगण !

"मिथिला क बालशिक्षा कथन सँ बाहर विकृत भै गेल अछि, जाहि दुःशिक्षा कैं पाबि हमरा सन सन पढ़ैत पढ़ैत पाथर ओ लिखैत लिखैत लोढ़ा लोक

कौं कतहु आश्रय नहि भेटैत अछि। हम ज्योतिषी थिकहुँ, पतड़ा देखै नहि अबैत अछि, वैयाकरण थिकहुँ हमरा बुतेँ पुराण-पाठ नहि चलत इत्यादि, तखन उपदेश ककरा कहैत छैक, वक्तृता की ? अंगरेजी हमर पढ़ल थिक जे देब ? हमरा सँ शास्त्रार्थ करैबा क हो तँ वृत्त छी, येह, सब करैत धरैत आब बूढ़ भै गेलहुँ किन्तु लोकनिन्दा क नाक लगले अछि।

"श्रीमन् !

"लघुकौमुदी शिशुबोध आदि कैं शास्त्र पढ़निहार एहने एहन सुपठ लोकनि छी। भला आबहु से उपाय हो जाहि सँ जे संस्कृत पढ़थि वा अन्य विषय पढ़थि तनिका लोकनि कैँ किछु पूर्व मातृ-भाषा मेँ से से पुस्तक पढ़ावल जाइन्हि जाहि सँ किछु बोध भै जाइन्हि। यद्यपि मातृभाषा मेँ एखनधरि एहन एहन पुस्तक नहि प्रस्तुत अछि जकर नाम निर्देश कैल जाएत किन्तु 'मि० मोद' ओ 'मि० मिहिर'कैँ देखि जाहि जाहि सुलेखक कौं आशा होएतन्हि कार्यतः प्रस्तुते छथि।

"एतै प्रथमतः ई विचारल जाय जे 'मैथिल विचार सभा' एखन तँ पागहु परिचित होइत अछि। यदि उक्त सभा १०-१५ वर्ष विलम्ब कै होइत तँ मिथिला, जे गण्डकी, कौशिकी इत्यादि नदी सँ परिचित स्थान विशेष अछि—एतबहि परिचित होइतथि। खेदक विषय थिक जे जाहि जाहि देशमध्य ईदृश श्रीमान् लोकनि विराजमान छथि तनिक आश्रय पाबि हमरा लोकनिक मातृभाषा सुनितहि लोक कटाक्ष करै ? एहि विषय मेँ कतेको महानुभावक ई सिद्धान्त छन्हि जे 'हिन्दी' सार्वजनिक भाषा थिक। मातृभाषासँ की उन्नति भ' सकैत अछि।

"प्रिय हिन्दीप्रचारक मैथिल बान्धव !

"हम हिन्दीक विरोधी नहिं, किन्तु कोट पैण्टलून पहिरिओ पहिरि जँ एहन एहन गै हजूर ! हमरा मोकद्दमा होनागा ? हिन्दीक प्रयोग करथि तँ हिन्दी सेवकक 'देशी मुरगी बोल विलायेंती' ई उक्ति चरितार्थ जनु हो एकर येहटा उपाय छैक जे यावत सर्वसाधारण कौं ई बोध नहिं होयतैक जे की हिन्दी, ई कोना बाजी, एकरा नहिं जनला सँ हमरा कि हानि होइत अछि ओ जननिहार हमरा अपेक्षैँ ज केहन केहन चतुर लोक अछि.........तावत् हिन्दी क प्रचार नहिं, विशेषतः मिथिला भाषा मातृ-भाषा कैँ सत्यानाश कै 'हिन्दी'– प्रचारक

Scanned by CamScanner

महानुभाव लोकनि दीन-हीन हमर मैथिल वन्धु लोकनि काँ श्रीमान् महोदार क दरबार में 'उल्लूए' बनबैत रहताह ।

"कुलमूल पालक भलमानुस मान्यजन !

"थोड़ेक ध्यान देल जाय ! जाहि दिन सँ 'गोदमिया' गाछीक दाम देबै लागल, ताहि दिन सँ गाछी क केहन दुर्दशा भय गेल अछि ! जे क्यो गाछी बेचि लेलन्हि, आम फड़ला पर अपन नेना-भुटका कैं आन क प्रत्याशा !! कहल जाओ, केहन सन ? कतेक पुरुष सँ संचित अपनेक कुलमूल, जाहि बलैं अपने भलमानुस, (हम धर्कट) क्षमा कैल जाय, सहस्र सँ आरम्भ खीर क तीर धरि पहुँचाय देल । आबहु भाभट समेटल जाय । व्यर्थ एक सँ दूइ वा तीनि विवाह नहिं कैल जाय..........। कन्यादान.........बजितहि हृदय काँपै लगैत अछि। यद्यपि एहि विषय में हमरा बजबाक अधिकार नहिं अछि (ध्यांतव्य जे महामहोपाध्यायजी कें स्वयं तीनि गोट विवाह छलनि जकर उल्लेख कयल जाय चुकल अछि) तथापि क्षमा प्रार्थी, स्वार्थी नहिं भै यदि क्यो अपने क अनादर ओ अपमान पर प्राणपण करै, की तकर कनेको कथा नहिं सुनी ? ई बुद्धिमान क काज थिक ? कथमपि नहिं ।

"प्रिय मैथिल मान्य !

"बहुत द्रव्य अपने लोकनि देखल अछि । जँ एतेक नितान्त भेलहु पर नहिं सन्तोष भेल तँ आब अन्त्य में येह कहब जे कैल जाओ, किन्तु इहो जानि राखल जाय जे थोड़बहि दिन में कुलमूल क उच्छेदे भै जाएत, तखन बूझब, हमरा की ?

"भलमानुस भै कलमी आम बेचब, केरा वेचब, कटहर बेचब, धान ओ चाउर इत्यादि बेचब किन्तु दोकान नहिं करब ओ लोकमें बाजब जे हम-बनिञा थिकहुँ ?

"ओ बलाँ !

"बनिञा वेह थिक जे बेचब ओ खरीदब दुनू काँ किन्तु ओ अपना कुल कैं बढ़ाय 'अग्रवाल' वैश्य उठल जाइत अछि, अपने लोकनि बालकहुक विवाह क अरहना सामग्री ओकरहि ओतै बन्धक राखि कुल क मूलकैं सुखाय आगू में 'बाबू साहेब' कहबैत बैसैत जाइत छी । सहोदरे भाय थिकाह किन्तु

Scanned by CamScanner

विरोध भेलासँ आङनक बीचोबीच सँ टाट लगै, अपना मे कपर फोड़ौअलिओ होयै ओ मोकद्दमा के दरिद्र छीमहि कहाबी सेहो, हो बाबू ! ई तँ दयादी थिक, ई कोना होएतह जे ओहिना छाड़ि देबहु.........कहैत अपन क्रोधक आगाँ मैथिली स्वयम्बर क परशुराम की, दुर्वासहु कँ तुच्छ देखबैत छी, किन्तु 'संध्यावंदन' पंडित श्री सुरेश मिश्रक अनुग्रह सँ परोपकार क पुस्तक छपलहु उत्तर नहि करब : अरे ! ई सब कैने की होइत छैक, ई कहि अल्हा क जिल्द आगू राखि ढोलक बजै। कहू, हिन भूदेव सँ तँ भूत देवा देवी सैह पंध कियैक तँ गाँमहि गाँम कतेको ब्राह्मण देवता लोकनि उक्त देवता क घोड़ा बनैत छथि ओ हमरा लोकनि किछु पढ़लहु उत्तर उसलदहा गदहै बनल रहैत छी। आश्चर्य !!! हमरा लोकनि शास्त्रोक्त न्यास ध्यान करैत करैत कतेको वर्ष बिताओल, किछु नहि देखैत छी। ओ महात्मा बिनु परिश्रमहि सब किछु देखै लगैत छथि।

"अधिक व्यय (खर्च)क हेतुओ विशेषतः मैथिल में भलमानुसे थिकाह। श्रीमान् लोकनि क ओतै कोनहुना जहाँ सम्बन्ध भेलन्हि की देखू—हुनक व्यवहार—जाहि दरिद्र कैं 'दिल्लीवाला' जूताक कोन कथा, चमरो भेटब दुर्लभ, तनिका हाथ बिनु परिश्रम क टाका—आः ! तखन की जूता बनौनिहार कैं नहि बुझल रहैत छैक जे ई 'भलमानुस' लेताह, नहि तँ धोतिअहु क काज नहि पड़ितन्हि, डाँड़-धरि क जूता बनबैत। उपनयनक वर्णन की करू, कोइलख में भेले छल। एतै खेदक विषय जे जनिक उपनयन में प्रायः ६०:० धरि खर्च, से भलमानुसक उपनीत बालक पोखरि ओ धार कोन कथा, दूइ चारि शूद्रक संग डबरै डबरै घाली गिजथि !!! धिक्कार हमरालोकनि कैं जे जन्मभरि पढ़िओ देशीय दरबार में २) टाका भेटब दुर्लभ, जाहि हेतु देश देशान्तर में घुमैत घुमैत पराभव होइत अछि, एतेक परिश्रम सँ उपार्जित ताहि धन क कतहु सदुपयोग नहि तखन 'व्ययाधिक्य निवारण' कोना होएत। कनेक आओरो कतेक गोटै तँ इहो कहैत व्यय करबामे उच्छृंखल भै जाइत छथि जे ओ ! जोड़क दिन 'टुमटाम' कै पढ़ि वकील मुखतार अपना बेटा भातिजक एहन काज करताह तँ हमर बेटा भातिज की कतहु सँ दहाइत भसिआइत आयल अछि ? होओ, खेते 'मखमूल' राखब, तँ ई ५-७ गाम जैबारी नहि होएतैक ? की कैल जाय।

"सभासद महानुभाव !

"एहि दुर्निवार अपार अपन मैथिल व्यवहार पारावार में पतित हमरा लोकनि क अवलम्ब • केवल श्रीमान् महोदर सकलसुव्यवहार विधान करुणा निधान लोकनि सँ अलंकृत येह 'मैथिल जातीय सभा' जँ हो तँ उद्धृत हमरा लोकनि निश्चय कहि सकैत छी जे श्रीमान् लोकनिक यशोगान तीनू लोक में सर्वदा होइत रहै—इति शुभं भूयात् ।

—एक परिचिते श्री मुरलीधर झा"[1]

उपर उद्धृत वक्तृताकें पढ़ला उत्तर स्पष्ट होइत अछि जे सम्पूर्ण समाजक सुधारक हेतु एक समाज हित चिन्तककें जेना चिन्तन करबाक चाही, म० म० झाजी ओहिमे अग्रगण्य छलाह। एहि वक्तृतासँ तत्कालीन सामाजिक स्थितिओक चित्र स्पस्ट भ' जाइत अछि। अनेक हुनक भविष्यवाणी सेहो आइ सार्थक देखबामे आबि रहल अछि।

मातृभूमि ओ मतृभाषाक हेतु हिनका हृदयमे जरैत आगि एहिपर कनेको आघात भेलापर ज्वालामे परिणत भ' जाइत छलनि। ओहि भावावेशमे कठोरसँ कठोर ओ कटुसँ कटु बात लिखबामें हिनका कनेको रोच नहि रहैत छलनि ने बाजबामे स्तोभ होइत छलनि। बंगालक विभाजन भेल। एहि भूभागक विभिन्न संस्कृति ओ भाषाभाषीकें एक कड़ाममे जाति बौद्ध विहारक आधारपर एकर नाम बिहार राखल गेल। स्मर्त्तव्य थिक जे बौद्ध धर्मक विरोधमे मिथिला सब दिन अग्रगण्य रहल। जगद्गुरु शंकराचार्य दक्षिण भारतसँ चलि बौद्ध धर्मक मूलोत्पादनक हेतु मिथिला धरि अयलाह आ एतय कुमारिल भट्ट संग देलथिन। राजधर्म होइतो बौद्ध धर्म मिथिलामे सनातन धर्मकें नहि उखाड़ि सकल। उपनिषद्, पुराण, आदि काव्य रामायण आदि आर्ष ग्रन्थमे जाहि मिथिलाक प्राचीन ऐतिहासिक गौरव सुरक्षित आबि रहल अछि ताहि मिथिलाकें बौद्ध बिहारक संग जोड़ि एकर ऐतिहासिक महत्त्वकें धूमिल कयल गेल ताहि प्रसंग म० म० झाजीक विचार पढ़ि हिनक सजगताकें चीन्हल जाय सकैत अछि। एहि ठाम हिनक लिखल "कतै कानब" शीर्षक लेख उद्धृत कयल जाइत अछि—

"क्यो सुनैत छी ? हा हा !!! स्पष्ट देखि रहल छी जे सब देश, सब

१. 'मि० मोद', उद्गार ४१ पृ० १-५।

Scanned by CamScanner

जाति, सब धर्म ओ सब लोक अपन अपन अभ्युदयक स्पृहा राखि तकर उद्योग मे मग्न रहैत अछि ततँ भारत देशभरि-मध्य सूतल 'देश' देखि पड़ैछ तँ एक मिथिला !!! की एहि देश कैं से सामर्थ्य नहि ? की एहि देश क तादृश नेता नहि वा एहि देश मे विद्या नहि ? विवेक नहि ? धन नहि ? इत्यादि सामग्री नहि ? जाहिसँ एहि दीना मिथिलाक रक्षा हो ?

"प्रिय पाठकगण ! सावधान भै देखल जाय; क्षुद्र बुद्धि हम सामर्थ्य क की वर्णन करू ? जे सामर्थ्य समस्त-भारत देश कैं अपन यथार्थ धर्म पर राखि पूर्ण शिक्षा पर प्राप्त करा देऐ' तकर रक्षक मैथिले श्री ५ मान् मिथिलेश महाराज बहादुर, ब्राह्मण श्रेष्ठ श्रोत्रिय अनेक विद्या निधान ओ प्रचुर विवेक-सम्पत्ति युक्त इत्यादि तथा अन्यान्यो श्रीमान् राजा सबहि विद्यमान छथि, जनिका सबहि क द्वारा अनेक देश क अनेक लोक सन्तुष्ट भै रहल छथि। एहन एहन कल्पवृक्ष क तर रहैत मिथिला शिथिला थरथर कपैत ठाढ़ि नहि भै सकथि ? एहि हेतु कतँ कानब ओ के गुनत ?

"की आँखि पसारि नहि देखैत जाइत छी जे उक्त कल्पवृक्ष क काँच, डम्हा ओ पाकल सब फल कैं आन आन लोक स्वच्छन्द तोड़ि खाइत अछि ओ एम्हर मैथिल क दिशि पहरा पड़ैत रहैत अछि ? जँ कनाहो कोतर खसल पड़ल अभगला मैथिल उठौलक तँ डाँटनि दपटनि·········इत्यादि सब दशा होवै लगैत अछि !! कहाँ धरि कहल जाय प्रत्यक्ष देखैत छी जे कनहा, सड़लाहा, रसफट्टू, पिलुआहा··········फड़ कैं देखैक हेतु रखवारो रहैछ, ओहो आन देश क रहल तँ ततेक भय नहि बुझना जाइत अछि किन्तु पड़ोसिए अपन बहादुरी देखैबाक हेतु टक लगौने गुम्हड़ैत रहैछ। चमत्कार तँ ई जे जाहि रसवती भूमि कैं पावि उक्त कल्पवृक्ष सबहि फड़ल फुलाएल देखि पड़ैत छथि ताही परमैश्वर्यवती श्री १०८ मिथिला माता क परिष्कार मे लागल विनु वेतन क भृत्य कैं नियम कैल एक सड़ल फड़क खण्ड देबा मे बाधा होइछ ? हा ! हा !!

"औरो देखू—कल्पवृक्ष कहने अपने सबहि स्थावर बुझब, से अवश्य, कारण प्राचीन कल्पवृक्षक येह स्थिति छल परन्तु आइ काल्हि तँ "उनटे गाङ बहैछ" ? आगि ओ बायु गाछ क विरोधी बुझल जाइछ। विचार करू जे अपने 'भूतशुद्धि' धरि दाबा रखैत छी तँ तत्त्व पूजनो होएब, अतएव

शरीरावयव क अन्तिम आङ्कुर सब सँ जे जे तत्त्व बहराइछ, से जानि कोन आङ्कुर मुँह में देतु छी ? एतेक दूर धरि विचार मिथिलहि में ओ आबहु जँ तँ मैथिल वेह हगरे कल्पवृक्ष, एकर भाष्यो बुझा दैथि तँ सम्भव, ततै आगि ओ वायु क झोक में पड़ल लोह काठक आधार पर स्थापित सोरपोर उपाड़ल कल्पवृक्ष क कनरीए देश-देश घुमावल जाइत छथि, ओ अनका सँ डोलावल, झँखावल, बुझावल, सुझावल······जाइत छथि। कनेक एही बेरि क 'लाहौर'क यात्रा कैं देखू पचासे हजार, अधिक नहिँ, किन्तु 'मैथिल महासभा'क हेतु दश हजार ? ओः ! कतेक ? कोना होएत ? ओहो कर्मकाण्डहिक पिण्ड क पाला पड़ल !! तत्र तँ "लेपभाग भोक्ता" मिथिला देश हो तखनहि ने सन्तोष, (सेहो जीवैत नहिएँ होएत) ओ मिथिला क दुर्बले आकार, पुनि सपल्लव भैओ फल देवाक बेरि अन्यत्र।

"आब॰ कहू जे कानब सत्य की मिथ्या ? सिमरिया घाट सँ तराइ नेपाल धरि, दक्षिणोत्तर ओ पूर्णियाँ सँ चम्पारण धरि पूर्व पश्चिम एतेक टा मिथिला देश आइ बिहार में मिलि हमरा जनैत मरै पर छथि की नहिँ ? प्रत्युत कल्पवृक्षहु कैं एहिना डोलडाल होइत ? आने जलवायु क प्रभाव पड़ैत जाइत छन्हि तथापि देखला उत्तर "स एवायम्" कहि (बजैत भय होइत अछि अतएव) कुहरि कनैत छी जे आइ अदना जे परम निकृष्ट से तँ शिष्ट बनि आगाँ ठाढ़ रहैछ ओ हमरा लोकनि घृणादृष्टि सँ किनारहु में ठाढ़ होवै नहिँ पाबी ? हा हा !!!·············

"(ओ लोकनि ! पहिने बंगाली भाइ लोकनि मिथिला कैं अपनाय न्यायशास्त्र लेलन्हि, पश्चात् आखरधरि लै ओकरा बंगाक्षर कहि आइ सर्वत्र ओ लोकनि शिक्षित, उन्नत कहवैत छथि ओ मैथिल समुदाय उधारे टक लगौनहि रहलाह, आब 'बिहारी' भाइ लोकनि आइ मिथिला क कण्ठ पकड़ि भाषा छीनि रहल छथि !!! हा हा ! श्री ५ मान् मिथिलेश ! आबहु हेरू आ मिथिलाक रक्षा करू)···············"[1]

आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा "मैथिल विद्यापति कोकिल" नामसँ विद्यापति रचित गीत सब हिन्दीक रचना कहि छापल गेल छल। बंगालक मुँहसँ छुटल विद्यापति तारपरसँ खसि क' वबूरपर लटकि

१. 'मि० मोद' उद्गार ११०, पृ० ३,

गेलाह। मिथिलामे ओकर कोनो तीव्र प्रतिक्रिया नहि भेल, परन्तु म० म० झाजीक कान तुरन्त ठाढ़ भेलनि। हुनक प्रतिक्रिया व्यक्त भेल 'बिहार ओ बिहारक भाषा' शीर्षक निबन्धमे जकर स्वरूप निम्नाङ्कित अछि —

"पूर्व सँ पूर्नियाँ, भागलपुर, मुँगेर, सँताल, गया, हजारीबाग, शाहाबाद, छपरा, सारन, चम्पारन, मोजफ्फरपुर, दरभंगा एहि बारह जिलामध्य पूर्नियाँ, भागलपुर, मुँगेर, चम्पारन ओ दरभंगा एहि ६ जिला मे व्यापकतया अति प्राचीन मिथिलाभाषा क व्यवहार अछि ओ अवशिष्ट सँताल, गया, हजारीबाग, शाहाबाद, छपरा, सारन एहि ६ मे विकृत, जंगली, असभ्य, भोजपुरी ई भाषा सब नाना प्रकार क अछि।

"ध्यान देबा क विषय थिक जे जतँ विद्याक प्रचार रहैत छैक ओतहि भाषा क विचार होइत छैक ओ ताहि ताहि भाषाक साहित्यक सौरभक ख्याति स्वयं लोक मे रहैत छैक। सँताल सँ सारन धरि देखू जे प्राचीन समय मे के के विद्वान् भै गेल छथि तथा हुनक कोन कोन ग्रन्थ प्रचरित अछि इत्यादि अन्वेषण कैला सँ जरासन्ध, भूरिश्रवा, प्राचीन राजा ओ बुद्धदेव, 'जिन' येह सब अन्हार मे हथोड़ने हाथ लगतह। पूर्नियाँ सँ दरभंगा, चम्पारन धरि प्राचीन समय सँ अद्यावधि असंख्य विद्वान् अनेक ऋषि मुनि क स्थान दृष्टि समक्ष उपस्थित अछि। संस्कृत विद्या अनादि थिक, श्रीमान् विदेह जनक क्षत्रिय राजा भै कतेक टा ज्ञानी पुराणेतिहास मे प्रसिद्ध छथि, कहाँ धरि कहल जाय, जाहि मिथिला मे याज्ञवल्क्य, गौतम, मण्डन, वाचस्पति, उदयन प्रभृति अगाध विद्वान् दूरदर्शी भै गेल छथि जनिक निबद्ध धर्मनीति ओ राजनीति क अनुसार अद्यावधि सब व्यवहार प्रचरित अछि, विद्यावले पाबि श्री ५ मान् मिथिलेश महाराजाधिराज विहार क मुकुटमणि की जाति-क्रिया-गुण सँ वस्तुतः भारतवर्षहिक मुकुटमणि कही तँ अत्युक्ति नहिँ, अनेक मिथिला क दुर्धर्ष पण्डित लोकनि देश देशान्तर मे अपन अपन विद्याबल सँ अभ्यर्हित भै रहल छथि, ताहि देश क व्यवहार क भाषा विशुद्ध मिथिला भाषा, मैथिली आखर पर्यन्त 'तिरहुता'।

"मैथिली क साहित्य देखि लोक कैँ चकित होबै पड़ैछ। महामहोपाध्याय विद्यापति टक्कुर निर्मित गीतावली मनबोध मिश्र-कृत भागवत क अनुवाद पद्य मेँ, भानुनाथ कृत परिजात-हरण नाटक, चन्द्रकविकृत रामायण,

हर्षनाथकृत उषाहरण-नाटक इत्यादि एहन एहन ग्रन्थ अछि जकर सौष्ठव आइ कोनो देशी भाषा में नहिं भेटत हो मिथिला में निरर्थक समय बितैबा क हेतु बक छुछुरु उपन्यास नहिं छल। आब लोक एहू दिशि झुकल अछि; अस्तु, कहबा क तात्पर्य जे यवन राज्य मिझैला पर ताहि यवन क प्रधान भाषा अरवी ओ फारसी धार क छारन 'उरदू' रहि गेल, जकर आखर उलिफ, वे, ते, टे, पे.........इत्यादि जे औखन भारतके पकड़ने अछि,........ 'उरदू' भाषा में काशी, प्रयाग, दिल्ली, आगरा इत्यादि नगरक चतुर लोक संस्कृत ओ प्राकृत क छौंक दै सब ठाम प्रचार करै लगलाह, एहि में विरोध किऐक, एकर नाम राखल गेल 'हिन्दी' जे प्रायः प्रत्येक बाजार में बाजल जाइछ। भारतवर्ष में समागत अंग्रेजो लोकनि जे संस्कृत ओ प्राकृत क प्रेमी छलाह ओहो लोकनि एकर अनुमोदन कै साहाय्य देत गेलाह बहुतो लोक क बल पड़ला सँ ई गहिड़गरि भै गेलिहि, सब भाषा क साहित्य कैं अपनावै लगलिहि, आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा छपल "मैथिल विद्यापति कोकिल" देखि सबहि कों निश्चय होएत। हमर मैथिल भाइ सर्वदा संस्कृत में मग्न ई सब किछु नहिं बुझलन्हि। जखन अंग्रेजी दिशि जनता झुकल तखन भाषहु दिशि लोक क आँखि खुजल। हमरा देश क प्रधान नेता क निद्रा आबहु टुटलन्हि कि नहिं से सन्देहे, कारण बंगाल में मिथिला भाषा क आदर ओ नेपाल क लोक आदर करथि, परन्तु ई कोना देखताह, के देखौनिहार, देश क नेता श्रीमान् सबहि, ओ लोकनि तँ अपन ड्योढ़ो पर पुजेगरी खबासक जगौला पर बजैत होएताह, नहिं तँ वेह मुँह पोछल 'सिख-रे-ठठरी' मलेझड़ साहब अनदेशी। आशा एतबे होइत अछि जे आब अपनो अपनाओल जा रहल छथि, तँ जँ दीना, कातरा, अतिखिन्ना 'मैथिली' मातृभाषहु क उपर दया कणिका छिटकि पड़ै तँ कहि सकैत छी जे 'बिहार' में प्रधान पूजनीय देश 'मिथिला' प्रधान भूपति श्रीमान् महाराजाधिराज मिथिलेश, प्रधान संस्कृत विद्या क प्रचार, प्रधान आचार, पवित्र कौशिकी पूर्व दिशि, पवित्रतम् जाह्नवी दक्षिण दिशि, पवित्र शालग्रामी गण्डकी पश्चिम ओ उत्तर भाग में परम पवित्र हिमालया-न्तर्गत परम सनातन धर्म संरक्षक अनीतिभक्षक श्रीमान् नेपाल-भूपाल प्रदेश-एहन सनातन विद्यापीठ स्थान क मातृभाषा (मैथिली) जँ प्रधान नहिं तँ हिन्दी ? जकर बिहार में चर्चा नहिं छल से प्रधान भै मैथिलीक निन्दा करथि ? गारि पढ़थि ? देश सँ हटाबथि ? जे अशरण कैं शरण-देनिहार

Scanned by CamScanner

बंगाल ओ नेपाल क दिशि तकैत विहार दिश आबि रहल छथि, श्रीमान् मिथिला नायक ! मैथिल प्रधान ! मिथिलावासि धर्मनीति पालक ! मिथिलान्न लवण पुष्ट सर्वसाधारण महोदय गण ! मैथिली क अवज्ञा जनु कैल जाय आदर कैल जाओ, अपमान नहिं, सम्मान कैल जाओ --यैह नीति, यैह धर्म तथा यैह निष्पक्षता थिक, कण्ठ दाबि प्रधान लण्ठे होइछ, एना राष्ट्रभाषा हिन्दी कथमपि नहिं वा सामान्य समूह में प्रधानता सामान्य भावें कोन मूर्ख क विचार थिक !!! एहने एहन मूर्ख जन कीर्ण लोक सँ हिन्दी प्रचारित, तखन जे नहिं हो, तँ एकर निर्णय हम ताहि विहार क प्रधान विद्वान् क श्रोतैं रखैत छी—एखन धरि हिन्दी में 'जण्डर' क थाह नहिं, हिन्दू, मुसलमान, आज समाज, कृस्तान—इत्यादि सर्वत्र विचरणशीला । मैथिली में तीनि वर्षक नेना बुझि सकैछ माए ऐलिहे भाए ऐलाह, अतः पर जनता शरण ।"[1]

उपरिलिखित सन्दर्भमे म० म० झाजी अपन मानसिक वेदनाकें आतुरतापूर्वक अभिव्यक्त कयने छथि । एहन वेदना, एहन आतुरता ओ एहन चेतना हुनक समकालीनकें के कहय परवर्तीओ चिन्तकमे एहि मात्रामे दृष्टगोचर नहि होइत अछि ।

जखन मैथिल महासभाक संगठन भेलैक तखन बहुतो चिन्तक ओ समाज सुधारक आकांक्षा रखनिहार लोकमे एक प्रकारक विश्वासक उदय ओ आशाक संचार भेलैक जे एकरा माध्यमसँ अवनतिक गर्त दिस चल जाइत समाज सम्हरत, उचित उन्नतिक बाट पकड़त, किन्तु वस्तुतः प्रस्ताव पारित क कर्त्तव्यक इति श्री बुझि लेबाक अभ्यास हमरा सभक अदौ स्वभाव बनि गेल अछि, जे एखनहु प्रत्यक्ष देखबामे आबि रहल अछि । जे केयो १९७८ ई० क विद्यापति पर्वक अवसरपर चेतना समितिक मंचसँ तत्कालीन राज्यपाल श्री जगन्नाथ कौशलक भाषण सुनने होयताह से हमर उपर्युक्त कथनक साक्षी भ सकैत छथि। चेतना समितिक कार्यकर्त्तासँ ओ कहने छलथिन जे गतवर्ष एही अवसरपर अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश देयाबाक हेतु हमरा कहल गेल छल आ एहि दिशामे प्रयत्नशील होयबाक वचन हम देने छलहुँ, परन्तु वर्ष भरिमे एहि कार्यकें

1—मि० मोद, उद्गार १५६, पृ० १४,

सम्पादित करबाक हेतु, प्रस्तावकें कार्यान्वित करयबाक हेतु कोनो कार्यकर्त्ता हमर्रासँ भेटो कयलनि ? काज होइत नहि छैक, काज कराओल जाइत छैक। अस्तु, मैथिलिओ महासभाक एहने प्रक्रिया रहलैक जे वर्षमा दिनपर अधिवेशनक अवसरपर गर्जन तर्जनक संग भाषण कयल गेल, सर्व सम्मतिसँ प्रस्ताव पारित करा कानमे तूर तेल द' सूति रहलहुँ। एहि प्रकारक अकर्मण्यताक प्रसंग म० म० झाजीक प्रतिक्रिया व्यक्त भेल छनि सेहो द्रष्टव्य ! म० म० झाजी 'व्यर्थ परिश्रम तथा व्यय' शीर्षक लेखमे लिखने छथि—

"आइ धरि "मिथिलाभाषा" "मैथिलाक्षर" योग्य मैथिल बनाएब, तनिक सुजीवन क हेतु सदुद्योग तथा मैथिलाचार विचार क सुरक्षा......किछु कैल जाइछ ? मातृभाषा मैथिली कें जखन सुयोग्य लोकनि त्याग करैत जाइत छथि तखन हमर सदृश जानवर क कनेक भुकनहिं की होएत ? तथापि गोटेक जानवर क भुकने अनका फल होइत छैक, एम्हर तँ ततेक भैरव वाहन भेल जाइछ जे भुकितहुँ डरे। आश्चर्य, जे बिनु बिचारने तथा मतृभाषा क अज्ञान सँ हो, जँ उचितो सदर्थ बजलहुँ तँ गारिए बुझल जाइछ, जकर प्रतिफलो भूकनिहारहि कें भोगै पड़ैछ। भला, देखु तँ वंगला भाषा में 'भारतवर्ष' नामक मासिक पत्र, जाहि में सर्वविदित श्री ५ मान् माननीय महाराज वर्धमान पर्यन्त अपन मातृभाषा क प्रेमवश लेख दै रहल छथि, अतिरिक्त क कथा कोन, एवं बड़ पंघ पंघ सुयोग्य लोक सब मातृभाषा क सेवन करैत छथि। एम्हर मैथिलमंडल में जहां ५०० टाका क जमीन्दारी भेल कि 'मोकदमाबाजी' सँ अवकाश नहिं वा कतेक गोटै येह कहि उठताह जे हम लेख लिखब ? वस्तुतः कोना लेख लिखल जाय, बहुतो सुखी धनी कें कतेक कबुला पाती कैला सँ सन्तान भेलथिन्हि, लिखवा पढ़वा में बाल्यावस्था मध्य थोड़ेक दमन (डाँटव, कान पकड़व.......इत्यादि गंजन) क आवश्यकता छैक, से कोना कैल जैतन्हि जाहि दिन पढ़ौनिहार डँटलथिन्हि, ताही दिन सँ 'काकतालीय न्याय' सँ हुनका ज्वर भै गेलहि, तखन मूर्खो भै जीबथु, अपन खैबा प्यूबा क योग्य धन छन्हिए, भेन एहनहिं ठाम कहल जाइछ जे "धनी वूड़ि वैद्यनाथ क अवतार"। जे लोकनि सुशिक्षित समृद्धिशाली छथि, हुनका तँ पहिनहिं आत्मोन्नति दिशि ध्यान जाइत छन्हि, पश्चात् वैह (आत्मोन्नति) एक तेहन रोग भै जाइत छन्हि जे

देशोन्नति सुझबे कठिन भै जाइत छन्हि जें कनेक सुझितहु छन्हि तें बंतनिपोड़िए भाषा क दोकठ में आँखि देने पाकल गोर्पी आम जकाँ, तखन की !!! विचार करैक थिक जे जनिका अपन देश प्रिय नहिं, अपन सम्बन्धी प्रिय नहिं तथा दैशिक आचार प्रिय नहिं (अधिक बर्जेत डरो होइत अछि) हुनका मातृभाषा में प्रेम कोना होएतन्हि; विषय तें ई अछि जे जहाँ कनेको ककरहु सँ झोंक तोड़ में बाबू साहेब ऐलाह कि लगले मोछ टेरि 'हिन्दी, क 'आतसबाजी' छोड़ै लगैत छथि।

"एतेक बड़बड़ैवा क तात्पर्य येह जे पैघ पण्डित जी लोकनि संस्कृतहि में पोथा पोथी लिखताह वा शास्त्रार्थ करताह; एहि हेतु किछु करब, हुनका लोकनि सँ दुइटा काज नहिं होएत, एक तँ दश गोटा में वक्तृता देब, दोसर अपन मातृभाषा में लिखब। लिखताह कोना, कतेको गोटा कें चिट्ठीओ-धरि नहिं लिखै अबैत छन्हि, खाधि कोनहु रूपें कुड़नूड़ सँ भरितहि छन्हि तखन कियैक नव अभ्यास लगौताह वा 'बूढ़ कुकुर कतहु फाँस बझै" ? टुटपुजिया पेटहि क चिन्ता में मग्न रहैछ, 'बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्" अर्थात् भूखल कें किछु ने सोहाइत छैक।

"एम्हर पाश्चात्य शिक्षासम्पन्न मण्डली दिशि तकैत छी तँ सुमेरु कें अवकाशे नहिं, तैओ कौखन किछु लिखितहि छथि जे अपने लोकनि देखितहि होएब वा हम कहैत छी जे जँ म० म० डाक्टर श्री गङ्गानाथ झा सदृश दूइयो चारि गोटै मिथिला क सत्पुत्र होइतथि तँ मिथिला देश क तथा तद्देशीय लोक क पैघ अभ्युदय भेल रहैत। यद्यपि एम्० ए०, बी० ए०, बी० एल्० कतेक गोटै छथिओ किन्तु एकोगोटा क लेख मातृभाषा में शपथहु खैवा क हेतु देखल गेलै कतहु ? (पं० श्री रामभद्र झा एम्० ए० कें छाड़ि) तखन हमरा सन 'अचतुर विचतुर' लोक जें धाष्ट्र्य कै लिखैत अछि सुनवे नहिं, सुनव तँ सतत आँखि लाल पीयर कैने 'मि० मोद'क मूल्यहि पर बिसाइत जाइत छथि। जँ आइ प्रत्येक शिक्षित मण्डली ऊहि कै विचारितथि तँ मि० मोद क कोन कथा जे एहन एहन कैक टा मासिक, पाक्षिक ओ साप्ताहिक पत्र बहराइत, से कथी लै होएत। जँ नामी जानि पत्र पठौलन्हि तँ २—३ वर्ष धरि पत्र पढ़ि लैत जाइत छथि, पत्र लिखैत छिऐन्हि तँ 'तूष्णीम्' भी० पी० करैत छी तँ 'रेफ्यूज्ड' लिखि घुमा दैत छथि, ककरहु सँ कहबैत छिऐन्हि तँ 'वकीलखनहि' में कहैत छथिन्ह जे कि हुनका पत्र

पठैबा क हेतु हम लिखने छलिऐन्हि ? इत्यादि अनेक वंचना की परम सुप्रतिष्ठ यशोगरिष्ठ नामोदित" पवित्र छथि, तेँ हम कहैत छी जे मै० म० सभा क विसर्जन करू ओ हमहुँ तखन 'मोद' कैँ काशी लाभ करा देबन्हि। अन्यथा "व्यर्थ परिश्रम तथा व्यय कैँ देखैत जाउ, हा ! खेद !!!"[1]

जखन ब्रिटिश शासन कालमे नवीन शिक्षा योजना भेल, नवीन पठ्यक्रम चलाओल गेल तँ बिहारक मातृभाषाक रूपमे हिन्दीकेँ स्थान भेटलैक, मैथिलीक कतहु नाम-चर्चा नहि। म० म० झाजी सदृश सजग समाजक प्रहरीकेँ ई बात तुरत अखड़लनि। शिक्षाक माध्यम मातृभाषा किएक हो एहिपर जे विचार व्यक्त कयने छथि से एतय अप्रासङ्गिक नहि होयत। ओहिमेसँ किछु अंश उद्धृत करैत छी जाहिसँ हुनक दृष्टिकोणकेँ बुझल जा सकैत अछि। म० म० झाजी मैथिलीक आवश्यकता शीर्षक लेखमे लिखने छथि—

"जाहि देशक लोक पूर्व सँ जे भाषा बजैछ से ओहि देश क मातृ-भाषा थिक, अतएव देश भेदैँ भाषा अनेक; जेना बंग क बंगला, पञ्जाब क पञ्जाबी, मद्रास क मद्रासी; ताहि रूपेँ मिथिला वा तिरहुति क मातृभाषा मैथिली वा तिरहुतिआ थिक। देशीय भाषामध्य वङ्गला एखन सर्वोन्नत अछि, ई बहुत पुरान भाषा थिक, किन्तु मैथिली एहू सँ पुरान। एक समय मे आधुनिक बङ्ग ओ मिथिला एहि समस्त प्रदेशमध्य केवल मैथिलीए सब बजैत छल, जकर प्रमाण संग्रह कैला सँ भेटि सकैछ। मैथिलीक कन्या वा छोटि बहिनि त एतेक उन्नति करथि ओ ई पड़लिए रहथि ?

"जैखन बालक गर्भ मे अबैछ तैखन सँ मातृभाषा क शिक्षा होबै लगैछ, तेँ बालक मे माइ क अधिक अनुकरण देखि पड़ैछ। एकर उदाहरणो महाभारत मे भेटैछ जे 'अभिमन्यु गर्भहि मे माए बापक वार्त्तालाप द्वारा चक्रव्यूह तोड़ब सिखने छलाह'। जन्मोत्तर ५ वा ६ वर्षधरि नेना अपन माइअहिक लग रहि शुद्ध मैथिलीअहि सँ शिक्षा पबैछ। हेतु जे स्त्रीगण एखनहु अमिश्र मैथिली बजैत छथि, (सम्प्रति ध्यातव्य जे स्त्रीशिक्षाक प्रचार भेलाक कारणेँ आब स्त्रीवर्गादिहुक भाषा मे विकृति आबिगेल अछि। कहबाक हेतु तँ मैथिली उन्नति क' रहल अछि, परन्तु तत्त्वतः देखला सँ आब

१—'मि० मोद', उद्गार १०८, पृ० ९,

भगवतीघर क चिनमार पर धरि पहुँचि हिन्दी मैथिनी केँ धकिया रहल अछि ओ हमरा लोकनि विद्यापति स्मृति मंच सँ गर्जन-तर्जन क'-बूझि रहल छी जे मैथिली क विकास भ' रहल अछि) अतएव लालन, पालन, पोषण, वाजब खेलाएब इत्यादि मैथिलीअहि मेँ करैत छथि, ततः पर ज्ञान वुद्धि बढ़ैबाक हेतु हुनका अन्यान्य शिक्षा देल जाइछ ।

"केवल परीक्षा मेँ उत्तीर्ण होएव शिक्षा नहि, सत्संसर्ग राखब, बृद्ध ओ सज्जन सँ उपदेश लेब, पँच शिक्षा थिक। क्यो क्यो उक्तोपाय जन्मतः शिक्षा पाबि अपन अपन काज उत्तम रूपैँ करैत छथि अतएव कतेक 'निरक्षरो' साक्षर सँ पटु देखि पड़ैत छथि, किन्तु बिनु शिक्षा सँ कोनो बालक उन्नति नहि कै सकैछ ।

"प्राचीन समय मेँ प्रायः सबहि क संस्कृते मातृभाषा छल। तैँ सब काज संस्कृतहि मेँ होइत छल । तदनन्तर देशगत 'भिन्न भिन्न भाषा क प्रचार भेल। मिथिला मेँ आन देशक अपेक्षा अधिक दिन धरि संस्कृतक प्रचार छल, तैँ मिथिलाभाषा दिश पण्डित लोकनिक ध्यान नहि गेलन्हि। बाजब छाड़ि पढ़ब लिखब सब संस्कृतहि मेँ करैत छलाह, जाहि सँ अद्यावधि संस्कृतक प्रचुरता मैथिल मेँ अछि, यैह स्थिति मैथिलीक छोट बहिनि बङ्गलहु मेँ पूर्व छल। प्राचीन रीतिक मै० विद्वद्गण मैथिली क उन्नति' नहि बूझि ई नहि विचारैत छथि जे आब 'समाजीभाषा', सब मिथिलहु मेँ आबि संस्कृत एवं मैथिली कैँ दबाए चिनुआर पर बैसै चाहैछ एहि दुरावस्था मेँ यदि मिथिला क सबहि पुत्र आबहु ध्यान देथि तँ विश्वास राखू जे मैथिली ताहि 'दाँत निपोड़ी' कैँ झोँटा पकड़ि माथा लात दै यथास्थान मेँ पहुँचाए सुख सँ अपन सन्तानक पालन करतिहि। तैँ सबहि सँ प्रार्थना जे आब ओ समय नहि जे केवल संस्कृतहि मेँ लिखने पढ़ने काज चलत, अतएव जँ मैथिली मेँ सब विषय बुझाओल जाय तँ अधिक उपकार हो। अपने लोकनि कैँ बुझल होएत जे बुद्धदेवहुंक समय मेँ पूर्वापेक्षया संस्कृत क ह्रास छल, अतएव ओ पाली (ओहि समय क मातृभाषा स्वरूप) मेँ अपन मत क प्रचार करै लगलाह। तकर विचार नहि कै हमरा लोकनि मैथिली कैँ फराक करी ? हा ! शोक !!

"हमरा लोकनिक हृदय मेँ माय क उदर सँ अद्यावधि मैथिलीअहिक जड़ि रोपल अछि, अतएव एही द्वारा शिक्षा पौने शीघ्र उन्नति होएत, तैँ जे एकरा स्थाम मेँ आन भाषा राखै चाहैत छथि से बुझू जे आम काटि बबूर रोपै

Scanned by CamScanner

चाहैछ। हा ! "विषवृक्षोऽपि संवर्द्धय् स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्" ई स्मरण नहिं अछि ?

"मनुष्य अपन अभिप्राय मातृभाषा द्वारा प्रकाश कै सकैछ। यद्यपि हृदय क पूर्ण भाव कैं अपन भाषहु सं प्रकाश करब कठिने होइछ तते आन भाषा मे कोना की होएत; बाजैक समय में हृदय क पूर्ण भाव प्रकाशित होइत अछि वा नहिं एहि पर ध्यान राखै पड़ैछ। विशेषत: आन भाषा में बजनिहार कैं भाषहु क शुद्ध्यशुद्धिदिशि ध्यान देबै पड़ैछ, विचारैक थिक जे एक समय में अनेक विषय पर ध्यान रखने से भै सकैछ ?

"आइ काल्हि अंग्रेजी पढ़ैक हेतु स्कूल में जैतहि हमरा लोकनि कैं चिरसेविता मैथिली क विरोधिनी हिन्दी पढ़ै पड़ैछ, मिथिलाक आखर कैं त्यागि नागरी लिखै पड़ैछ। एहि सँ कतेक हानि तकर विचार थोड़बो तँ करू। एहिठाम हमरा लोकनि काँ जहिना विदेशीय भाषा English पढ़वा में परिश्रम तहिना Hindi (हिन्दी) में तथापि शुद्ध्यशुद्धिपूर्वक लेख, बाजब ओ पढ़ब सबटा अङ्ग्रेजिए जकाँ होइछ। तें सब अन्य देशीय देखिए दाँत निपोड़ि दैत छथि, एवं परीक्षहु में क्लेश ओ दुःख क विषय ई होइछ जे अन्य भाषा द्वारा शिक्षा पौने हमरा लोकनि पाठ्यग्रन्थ क सार नहिं बूझि ओहि सँ अपन उन्नति शीघ्र नहि कै सकैत छी। जतेक दिन (मैथिली में निपुण भैओ) नागरी लिखब पढ़ब में नष्ट होइछ, ततेक दिन अपन मातृ-भाषा में पढ़ने शीघ्र उन्नति भै सकैछ। कतेक बालक पी-ई-ए-सी-ओ-सी-के=पीकाक माने 'मोर' ई घोंखैछ किन्तु 'मोर' कोन जन्तु थिक से ज्ञात नहिं। इत्यादि अनेको शब्द सूगा जकाँ कण्ठ कैं लेताह ताहि सँ की फल होइछ। 'मोर'क अर्थ 'मयूर' नहिं बुझब ओ बुझाएब एहि में ककर दोष ? जे लोक सब देशक उन्नति पर निर्भर अछि तकर ई दशा तखन उन्नति कोना होएत। देखू एही विषय कैं पुष्ट करैत 'पी० जे० मेहता', एम० डी०'क कथन अछि—

"It is not possible for a boy to get a proper grasp of his subjects through a language which is not his own……If any subject is to be taught properly to a people………..if useful knowledge is to be the goal, the vehicle of teaching must be their vernacular. By our neglect of national culture

Scanned by CamScanner

individually we have been dwarfed in physique, in intellect, and in morals and our nation has fallen from the proud position that she occupied as the world's teacher not long ago....so long as the best thought of the leaders of the people is not expounded in their own lauguage, they can not go beneath the surface. For any thoughts to take roots in the minds of the people, they must be expressed in the language of the people,..........एकर भावार्थ अन्य भाषा द्वारा पाठ्यग्रन्थ क अभिप्राय उत्तम जकाँ नहिँ बूझि सकैछ.......अतएव मातृभाषा द्वारा शिक्षा देब आवश्यक।.......... ...।"[1]

मिथिलाक राजधानी कही, केन्द्र कही, हृदयस्थल कही से दरभंगाकेँ मानल जाइत अछि। सम्पूर्ण मिथिलाक अधिपति महाराज दरभंगा जे मिथिलेश कहि सम्मानित होइत रहलाह ताहि दरभंगासँ ओहि मिथिलेशक संरक्षणमे प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'मे मैथिलीकेँ सैह स्थान छलैक जे कोनो भागिनमानकेँ होइत छैक। कातमे कतहु डेढ़ दू कट्ठा घड़ारी द' बसा लेलक। तहिना 'मिहिर'क एक कोनमे मैथिलीओकेँ एकाध पन्ना भेटि जाइत छलैक। हमर चरितनायककेँ ई स्थिति असहनीय प्रतीत होइत छलनि। दोसर ई तँ छलाह स्पष्टवक्ता, राजाक कोष भरबाक स्रोत होइत छैक ओकर प्रजा, अतः राजकोषक व्यय तँ प्रजाक हितार्थ होयबाक चाही। उपर उद्धृत अनेक सन्दर्भसँ ई ज्ञात भ' गेल होयत जे अन्य देशक वा अन्य प्रान्त-स्थित संस्था सभक हेतु जाहि उदारतासँ राज दरभंगा द्वारा धन व्यय कयल जाइत छल तकरा समक्ष मिथिलाक हेतु कयल जाइत व्यय नगण्य रहैत छल। तेसर काजुल लोककेँ छुच्छे गप्पसँ वितृष्णा रहैत छैक, सामाजिक संगठन, जकरो प्रधान महाराजे छलाह गप्प तँ आकाश पाताल एक क' देव' वाला करैत छल, परन्तु समाज जाहि अवनतिक गर्त्त दिस गुड़कल से गुड़किते रहि गेल, सामाजिक संगठन ओहिमे सुधार नहि आनि सकल। म० म० झाजी एहि सब अवसरपर चूक'बला लोक नहि। जे अनुभव करैत छलाह से 'मिथिला मोद'क माध्यमसँ व्यक्त क' दैत छलथिन। एही कारणेँ 'मि० मोद' सदा सर्वदा 'मि० मिहिर'क कटु आलोचना करैत रहल।

१—'मि० मोद', उद्‌गार १३६, पृ० २९,

जाहि कालमे 'मोद' मैथिलीक रक्षार्थ कच्छा बान्हि ठाढ़ छल ओ कतेक आर्थिक संकट रहितहु खसैत छल आ उठि कँ ठाढ़ भ' जाइत छल, तेना जौं मिथिलाक केन्द्रसँ 'मिहिर'क सहयोग होइतैक तँ निश्चय मैथिलीक दुर्गति आइ नहि रहितैक।

मिथिलामिहिरमे मैथिलीए मुख्य रूपें स्थान पाबय तकर उत्कट अभिलाषा म० म० झाजीकें रहैत छलनि। सुशिक्षित, आधुनिक ज्ञान-सम्पन्न अङरेजिओ बाबू लोकनि मातृभाषाक सेवामे अग्रसर होथि सेहो इच्छा रहैत छलनि। "सुलेखक ओ शिक्षित मैथिल सँ प्रार्थना" करैत म० म० झाजी लिखने छथि—

"महोदय! अपने सुलेखक, देशभरिक कोन कथा, अन्यत्रहु ख्यात छी ओ 'मि० मोद' हुक प्रायः प्रेमपात्र छी तथापि अपने अद्यावधि मिथिला भाषा में तादृश लेख लिखि नहिँ कृपा करैत छी, जाहि सँ उक्त मासिक पत्रो गुरुता प्राप्त करत ओ तद्द्वारा अनेक हमर मैथिल सुशिक्षित भै अपने लोकनि क यशोगान करताह। एहि उपेक्षा सँ भाषामात्र क अनादर वा मैथिल क दुर्भाग्य मात्रे नहिँ कहि सकैत छी किन्तु एहि सँ देशभरि क अवनति तथा मैथिलाचार व्यवहार क अधःपतन क शीघ्र सम्भावना बुझल जाइछ। ई हम मानैत छी जे अपने कैँ अवकाश ओ एहि सँ वस्तुतः सद्यः कोनो लाभो नहिँ किन्तु एहि हेतु दिनरात्रि क मान तँ नहिँ बढ़ि सकैत अछि। तखन जँ एहन योग्यतापन्न लोक सँ अल्पमात्रो उपकार नहिँ भेल तँ पुनः पुनः एहन लोक हो एकर स्पृहा ककरा होएतैक? बहुतो जन एहन छथि जे यथेच्छ 'हिन्दी' लिखि मारताह परन्तु मातृभाषा सँ जेना शपथ खैने होथि तेहिना नाक भँह सिकुड़ै लगैत छथि। हमर सहयोगी 'तिरहुत समाचार' ओ 'मिथिलामिहिर' ई दूइ गोटै छथि। जाहि उभय क सम्पादक मैथिले किन्तु और तँ नहिँ जे एतबा अवश्य हम कुमरजी कँ कहबैन्हि जे देश क बीभत्स विषय कें हिन्दी मे राखि अपना पत्र कँ जनु भरी एहि सँ कथमपि अपने क पत्र क गौरव नहिँ बढ़त। अथच बी० ए० झा'जी क वृद्ध्यर्थ जेहन हमरा लोकनि परिश्रान्त छी से किछु दिन में विदिते होएतन्हि किन्तु हिन महाशय क एहन क्रम जेना हमरा लोकनि हिनक कहिओ क ऋणी होइअन्हि!!! आबहु मिथिला दिशि ताकू, अरे! बाल्यावस्था सँ कतेक वर्षें बी० ए० बी० एल्० कैँ पावल ताहि में परिश्रमे

नहि, जन्मतः अद्यावधि मिथिला भाषा बजैत छी, श्री १०८ मान्मिथिलेश क आश्रित ओ मिथिला क प्रधान राजधानी मध्य विद्यमान छी तथापि यदि 'हिन्दी'क हेतु माथ नुड़बैत छी तँ किछु कहवे, किन्तु क्रुद्ध जनु होइ। आबहु मिथिला भाषा में लेख वढ़ाउ ओ ई निश्चय जानू जे 'हिन्दी' में अहांक सन सन बावन्नो गण्डा गलै सड़ैत छथि परन्तु हमरा मैथिल में अद्यावधि पचीसो गोटै होइ नहि ताहू में विद्या विभाग दिशि वड़ थोड़, एहू में बी० एल्० क अपिआड़ी में कूदै लै सतत चल बल करैत रहैत जाइत छी कुदलहुँ नहि कि द्रव्य क आशा क सीमा बुझले अछि अतएव जहाँ अवकाश भेटल कि हाय ! मोअकिल ! वे अकिल ! हाय ! द्रव्य ! ओ ! एतेक हाय हाय कैने की होएत ? देखैत छी जे दिनानुदिन वकील मुखतार जहिना वढ़ैत जाइत छथि ताही क्रमैं मिथिला में मिथ्याप्रपञ्चो बढ़ैतहि जाइत अछि, कहाँ धरि कहल जाय............तखन की लेख लिखब वा कोना उन्नति होएत ? हमरा लोकनि कैं ओ शिक्षा नहि तथापि टेढ़ मेढ़ लिखैत जाइत छी, सावधान ! कानून तानून नहि जनैत छी तैं प्रार्थना करैत छी जे अपने लोकनि ! सारांश ग्रहण कै वाक् प्रपञ्च दिशि ध्यान नहि दैत फँसा जनु दी। अन्यथा एहनो भेटब दुर्लभे।..............."[1]

मातृभाषा, मातृभूमि, सनातन धर्म ओ सदाचारक रक्षार्थ म० म० झाजी अपन अस्त्र 'मि० मोद' लै निर्भीक भावें सतत कटिवद्ध रहलाह। एहि प्रसंगक पूर्ण सुचना हुनक निम्नलिखित वक्तव्य सँ प्राप्त होइत अछि। निवेदन ओ सूचना शीर्षकमे म० म० झाजी लिखने छथि—

"ग्रीष्म (गरमी) क अवकाश (छुट्टी) में स्वदेश गमन प्रयुक्त 'मि० मोद' क निष्काशन मध्य नानाविध विघ्न उपस्थित भै गेल अतएव उक्त पत्र क सहायक तथा ग्राहक महोदय क ओतै साञ्जलि प्रार्थना जे एहि अपराध कें अपन उदार कृपापारावार में परिणत कै क्षमा करथि ओ पुनः यथासमय मध्य प्रकाशित 'मोद' कैं देखि पूर्ववत दयादृष्टि बनौने रहथि।

"अथ च इहो विज्ञप्ति जे प्रत्येक साप्ताहिक वा मासिक पत्र क साहाय्य तथा मूल्य पूर्वहि पठावल जाइत छैक किन्तु 'मोद' चतुर्थ वर्ष क आठम मास क जाइत छथि, अद्यावधि कतेको महोदय लोकनि एहन एहन छथि जे आदितः मोद कैं प्राप्त कै साहाय्य क कोन कथा, मूल्य मात्र नहि

१. 'मि० मोद', उद्गार ४४, पृ० १९;

पठबैत छथि। यदि तनिका लोकनिक नामपर तान[1] लगबैत छी तँ तनिका ओतँ हुलकीओ देब कठिन भै जाएत अतएव एतबै बहुत थिक, अस्तु। जाहि-जाहि महोदय कँ आधार पर मोद चलि रहल छथि ओहो महानुभाव तँ कृपा करथु जाहि सँ तादृश दुर्दशा नहिँ प्राप्त हो जे मोद रुद्ध भै जाथि।

''यदि 'मोद' समाज सुधारक कहल जाइत छथि, यदि 'मोद' निष्पक्षपाती बुझल जाइत छथि ओ यदि 'मोद' मैथिल महोदय क मातृभाषारक्षक थिकथि तँ सर्वसाधारण शिक्षित समाज कैँ निश्चय करैक थिकन्हि जे समाजगत, व्यक्तिगत ओ मातृभाषागत जे-जे जतँ-जतँ त्रुटि देखना जैतन्हि ताहि-ताहि कैँ लै शङ्ख फुकताहे, विशेषतः पामर निर्धन ओ मूर्खताक कारण कुक्षि में पड़ि अजिज्ञास्य होइत अछि किन्तु सर्वथा चतुरस्र अर्थात् सर्वसम्पन्न हमर मैथिल श्रीमान् लोकनि यदि कान मूनि लेताह वा आँखि मूनि लेताह तँ ई कलङ्क हमर भावी श्रीमान्क ओतँ पड़त वा एको बेरि कान ओ आँखि खोलि देखथु जे सत्य कि मिथ्या, किन्तु ई सब करबे नहिँ अर्थात् ककरो मते ने सुनब तखन जँ 'मोद' डाकनि देलक तँ ओ अपराधी थिक ! 'हा हा ! हटाउ-हटाउ, दरबार में आबै ने पाबै' इत्यादि कहि 'मोद' कैँ तथा सम्पादक कैँ दुर्नामी बनाएब ?

''श्रीमन् करुणानिधे ! हम पुनः पुनः येह कहब जे 'अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति' अपने लोकनि भरल मैथिलमण्डल में हाथ उठाय-उठाय वाग्बद्ध भेल छी तथा 'मोद' पूर्वहि सँ, एकरा चित्त में राखि मोद क उपर अनुशासन कैल जाय अन्यथा एहि अनवसर-हन्यमान उपनीत बालक 'मोद' क हत्या ककर पाछु लागत ?

''एतावता यावत् ई पत्र अपन जीवितावस्थापन्न रहत अवश्य अपने लोकनि क गुण गान करत, एहि विषय में जे क्यो महानुभाव व्यर्थे यथेच्छ लिखि प्रत्युत्तरदाता बनताह, जाहि सँ ताहि-ताहि श्रीमान् क ओतँ अपन उत्कर्षता प्रकट कै मान्य (खैरखाह) बनताह, ई कथमपि नहिँ। वस्तुतः श्री ओ विद्या दुनू सँ अलंकृत भै यदि दुनू क यथार्थ उपयोग नहिँ कैलन्हि तँ अवश्य सर्व-साधारण कैँ एहि विषय में सखेद सूचना देब आवश्यक थिक, ई जानि मोद में से से विषय सब स्पष्ट रहैत अछि ओ रहत; जाहि सँ पुनः ई दृश दुर्व्यवहार नहिँ कैल जाय। एतँ ई, ककरहु नहिँ बुझैक थिक जे ई पत्र वा सम्पादक व्यर्थ अपन उदरपोषणार्थ वा दर्पप्रदर्शनार्थ लोक क स्तुति वा निन्दा करैत

छथि प्रत्युत एहि विषय क ध्यान सबहि काँ राखैक थिक जे जानि बुझिओ चित्त में किछु नहिँ आनब ई नहिँ भै सकैत अछि तँ जे जकरा फुरै से होएत तँ मोदहु क मुख बान्हल नहिँ रहत, बजते, जे नहिँ भेला सँ सहस्रशः सीदित होएताह तँ से जनु होथि जँ वस्तुतः क्यो मोदहि पर असन्तुष्ट होथि तथापि अनेकोपकारार्थ तँ थिके, अस्तु ।"[1]

उपरिलिखित उद्धरणसँ मिथिला मोदक उद्देश्य तँ स्पष्ट होइते अछि, संगहि म० म० झा जीक दृढ़ संकल्प ओ निर्भीक स्वभावहुक परिचय भेटि जाइत अछि। कोनो विघ्नबाधाक भयसँ ई अपन निर्धारित पथसँ च्युत होयबाक हेतु प्रस्तुत नहि होइत छथि। एक दृढ़ चरित्रक जे लक्षण अछि जे टूटि जायत मुदा झुकत नहि से म० म० झा जीमे छलनि।

भाषागत त्रुटि देखि म० म० झाजी अपन छौंकी चलयबामे कसरी कनेको रोच नहि रखैत छलाह। मिथिलामिहिरक प्रसंग कोनो एक पत्र मि० मिहिरक तत्कालीन सम्पादक पं० योगानन्द कुमरकें लिखने छलथिन जकर उत्तर दैत ओ उक्त पत्रकें धमकी बुझलनि। ताहि पत्रक प्रत्युत्तर दैत म० म० झाजी लिखने छलथिन—

"प्रिय पण्डित श्री योगानन्द कुमर (सम्पादक मि० मिहिर) हम अपनेक ओतै सविनय सूचना देल, अपने बुझल धमकी ? अवश्य किछु दिन पूर्व हम सम्पादक छलहुँ परन्तु ई विषय तँ बहुत स्पष्ट अछि जे जे क्यो राजसम्पर्की लोक अछि ओ सम्पादक नहिँ भै सकैछ (आश्चर्य विषय थिक जे अपने पाश्चात्य भाषा जानिओ एना लिखैत छी।)................।

"श्रीयुत् कुमर जी ! हास्यप्रिय हम अवश्य छी किन्तु मर्माभिघाती नहिँ, जेहो एतवा हम जनैत छी जे 'मोद' क सम्पादकताक योग्यतासँ 'मिहिर'— सम्पादकता क योग्यता महती (पैघ) वा ई तँ पत्रक गौरवे कहैत अछि, तथापि कटुभाषिता एहि मि० मोद' क दुर्गुण क अनुकरण अहाँक सदृश सहनशील तथा गंभीर (उचित थिक जतेक घोड़ा, बड़द फनैत अछि ओतेक जँ हाथी कूदै फानै तँ अनर्थे ने हो) महोदरक सम्पादकतामें होएब मैथिलोन्नति क भारी बाधा बुझैक थिक। अथ च जाहि श्रीमान् क पालित वड़काह-वड़काह सिंह बाघ गरजि रहल अछि, छोड़ा हिँहिँआए रहल अछि....ओ कुकुरो कतेक भुकि रहल अछि ततै डरे राग तर नाङड़ि नुकौने शृगाल क जँ धमकी तँ हमरो

१. 'मि० मोद', उदगार ४४, पृ० १८

धमकी। सम्पादक जी ! "राहरिक छीमरि तोरि सरक पर ठाहं होइत तँ गाड़िए सही,वा पोंखाड़क किनाड़ में जाय गूर चूरा फांकी तँ पोसा सांहों हुड़पेटबे कड़त" इत्याद पठिंहारबा प्रयोग क रस लैत रहू किन्तु कोशवर्द्धक, व्याकरणपोपक ओ सुप्रयोग नहिँ, से सिंहमोड़ी, लथराहि, हञ्छिनाहि, गैआहि इत्यादि शब्द भेटत, ई कोन अनुचित।"[1]

एहि उद्धरणमे 'र' ओ 'ड़' क विपरीत प्रयोग द्वारा जे व्यंग्य वक्रोक्तिक अभिव्यंजना भेल अछि से स्वयं ऊह्य थिक। एहिना अनेक चिह्न द्वारा ओ शब्दक विकृत रूप यथा सेक्रेटरीक हेतु 'किक्ख-रे-ठठरी', मैनेजरक हेतु 'मलेझर' बकछुछरू, फुम्फुम्वाय नमः आदिक, प्रयोग द्वारा अपन व्यंग्यकेँ अभिव्यक्ति देबामे ई अद्भुत कौशल रखैत छलाह जे हिनक समस्त रचनाक अध्ययनसँ जानल जाय सकैत अछि।

भाषाक समृद्धिक हेतु एकदिस ई मौलिक रचना करैत छलाह दोसर दिस अपनहु अनुवाद करैत छलाह ओ अनकहुसँ अनुवाद करवैत छलाह। व्याकरणक ग्रन्थ लिखब, शब्दकोशक संकलन करब, इतिहास लिखबायव, महान पुरुष सभक जीवनवृत्त लिखब ओ लिखायब आदि बहुविध कार्यक्रमकेँ हाथमे लेने छलाह। हिनक अपन लिखल अर्जुन तपस्या, हितोपदेश अनुवाद, मिथिला भाषा विचार, महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक जीवनिका, पश्चिमोत्तर यात्रा वा काश्मीर यात्रा आदि प्रत्यक्ष प्रमाण अछि। हिनकहि प्रेरणासँ पं० त्रिलोचन झा गीताक अनुवाद, शकुन्तलोपाख्यान आदि लिखि प्रकाशित करबओलनि। 'मोद'क माध्यमसँ जतेक ग्रन्थकेँ प्रकाशमे अनलनि आइ ओ सब अप्राप्य अछि जकर पुनर्मुद्रण कराय मातृभाषाक भण्डारक श्रीवृद्धि कयल जाय सकैत अछि।

हिनक लेखनशैली ओ भाषाक स्वरूपक शुद्धतापर यदि ओहि समय व्यर्थ विवाद नहि क' मानि लेल जाइत तँ आइ मैथिलीक स्वरूप स्थिर भ' गेल रहैत। अंग्रेजी वर्णमालामे अनुनासिक मात्र दू गोट वर्ण अछि M तथा N, अंग्रेजीक प्रभावसँ हिन्दी आदि भाषामे अनुनासिक 'न' तथा 'म' वर्णक प्रयोग बाँचि गेल अछि। तत्सम शब्दकेँ लिखवाक समय 'ण' जीवित अछि, उच्चारणमे विशेषतः समाप्ते तथापि 'ङ' तथा 'ञ' एहि दू वर्णकेँ आव कतेक छात्र तँ चिन्हवोमे कष्टक अनुभव करैत छथि, परन्तु मैथिलीक प्राचनीतम

१. 'मि० मोद' उद्गार ७८ पृ० २१

ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'मे उपरिलिखित दुनू 'ङ' ओ 'ञ' वर्णक प्रयोग प्रचुर परिमाणमे भेटैत अछि। म० म० झा जी उक्त परम्पराकेँ अपना 'मि० मोद'मे सुरक्षित रखने छथि, यथा—आङन, ठेङा, ढेङ, मैञा, चाञि, मीञा आदि शब्दमे होयबाक चाही जे मैथिलीक उच्चारणक अनुकूल पड़ैत अछि। सम्प्रति हिन्दीक देखादेखी लोक आंगन, ठेंगा, ढेंग, मैयाँ, चाँइ, मीयाँ आदि लिख' लगलाह अछि।

दोसर—सप्तमीक विभक्ति 'मे'पर सर्वत्र चन्द्रविन्दु अर्थात् 'मेँ' दृष्टिगोचर होइत अछि आ सम्प्रति छात्र-समुदायकेँ हिन्दीक अभ्यासवश जँ धोखहुसँ 'मे' पर अनुस्वार देया जाइत छैक तँ तकरा परम अशुद्ध मानि परीक्षक अंक काटि लैत छथिन। एहि प्रसंग एक बेरुक घटना स्मरण होइत अछि। कविवर पं० सीताराम झा अम्बचरित महाकाव्यमे सर्वत्र अनुस्वारक प्रयोग कयने छथि। साक्षात्कार भेला उत्तर हम जिज्ञासा कयलिअनि तँ उत्तर देलनि—सिद्धान्तकौमुदीमे पढ़ने होयब—''प्रतिज्ञाऽनुनासिक्याः पाणिनीयाः'' अर्थात् वर्णमात्र सानुनासिक ओ निरनुनासिक होइत अछि। ई सिद्धान्त अनुनासिको वर्णमे लागू होइत छैक, जेना माघ, मेघ, मोल आदि शब्दमे मकारक निरनुनासिक उच्चारण होइत छैक आ माँटि, मोँछ, माँछ आदिमे सानुनासिक। उचित तँ छल चन्द्रविन्दु परन्तु आब प्रेसमे चन्द्रबिन्दुक काँटा ओहि मात्रामे नहि रहैत छैक तेँ चन्द्रकेँ छोड़ि विन्दु मात्रसँ काज लैत अछि। मिथिलामोदकेँ उद्योसलाक बाद आब स्पष्ट होइत अछि जे ओ मोदहिसँ प्रभावित रहलाक कारणेँ एहि प्रकारेँ लिखैत छलाह। हमरा कहबाक तात्पर्य ई जे 'मे' परक अनुस्वारकेँ तेहन भयंकर अशुद्ध नहि घोषित कयल जाय जाहिसँ अंक काटि लेल जाइछ। म० म० झाजी मुँह, नहिँ आदि शब्दहुमे चन्द्रविन्दुक प्रयोग कयने छथि।

तेसर—कारकक चिह्नकेँ विभक्ति कहल जाइत छैक तकर कारण ई जे विभक्तिए द्वारा एक कारकसँ दोसर कारक विभक्त होइत अछि जेना 'राम मोहनकेँ मारलथिन' एहि वाक्यमे मोहन शब्दक संग लागल केँ चिह्न यदि राम शब्दक संग जोड़ि देल जाय तँ राम मारनिहार नहि रहि मारि खयनिहार भ' जयताह। मैथिली भाषा विशेषतः संस्कृत व्याकरणसँ अनुशासित होइत अछि, प्रत्यक्ष रक्तक सम्बन्ध एकरा संस्कृतेसँ छैक आ संस्कृतमे विभक्ति प्रातिपादिकसँ अविभक्त रहैत अछि। हिन्दीमे एहि प्रसंग द्वैध विचार अछि,

Scanned by CamScanner

किछु गोटे विभक्तिकेँ शब्दसँ सटा क' आ किछु गोटे हटा क' लिखैत छथि। म० म० झाजी सेहो विभक्तिकेँ हटाइए क' लिखने छथि जकरा हेतु की तर्क छल होयतनि से हमरा बुद्धिमे नहि आबि रहल अछि। हम अपन ई अल्पज्ञता स्वीकार करैत सुधी समाजक समक्ष जिज्ञासु छी।

चारिम —मैथिलीमे तृतीया विभक्ति 'सँ'केँ यत्रतत्र 'एँ' आदेश भ' जाइत अछि जेना —'अपना काजेँ गेल छलहुँ' एहन स्थलमे 'काजैँ' अर्थात् 'दोलेँ'क प्रयोग कयने छथि। एहिना एवार्थक 'हु'क स्थानमे कतहु-कतहु 'हु' जेना 'ककरहु' आ कतहु-कतहु 'ओ'कारोक प्रयोग जेना 'ककरो'क प्रयोग सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि।

पाँचम —आरम्भिक समयमे कयल आ बादमे कैल, भर आ बादमे 'भै'क प्रयोग देखलिअनि अछि। 'जाय' ओ 'जाए' इहो दुनू प्रकारक प्रयोग देखबामे आयल अछि।

एहि एकरूपताक निर्वाह करबाक क्रममे कोनो-कोनो वैकल्पिको रूपकेँ मानने छथि, परन्तु अपना लेखन शैलीक अतिरिक्त शैलीकेँ अशुद्ध नहि घोषित कयने छथि।

हँ, एक सम्पादकक रूपमे एकरूपताक निर्वाह हेतु प्रायः एको पाँती बिनु, देखने प्रकाशनमे नहि जाय दैत छल होयतनि से प्रतीत होइत अछि।

हिनक भाषा, अभिव्यक्तिशैली ओ विचार बुझबाक संगसंग तत्कालीन इतिहासहुसँ परिचय प्राप्त करबाक हेतु हिनक लिखल महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक जीवनी ओ हिनक वैयक्तिक जीवनक कतिपय तथ्यसँ परिचय प्राप्त करबाक हेतु पश्चिमोत्तर यात्रा वा काश्मीर यात्राक उपलब्ध अंश उद्धृत कयल जाइत अछि।

Scanned by CamScanner

जीवनिका

जीवथु मिथिलानायक करुणागार
जनिक गुणोदधि दौड़लि लघुमतिधार

प्रिय पाठकगण ! उपर उक्त वरवा क उत्तरार्द्ध पढ़ला सँ अपने सबहि काँ होएब उचिते जे हमरहु पूर्व बुझि पड़ैत छल जे एहि लघु (क्षुद्र, थोड़ इत्यादि) बड़ि छोटि बुद्धि कैँ ई सौभाग्य कतै जे साक्षात् गुणोदधि (गुण क समुद्र) क संगम कै पावथि । जाहि-जाहि पुण्य पुरुष क बुद्धि गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू इत्यादि बहुविस्तृत धार सनि छलन्हि वा छन्हिओ से से बुद्धि तँ अनेक पर्वत सदृश बिघ्न वाधा कैँ सर्वत जकाँ पीवैत संगम कैँ पाबि पवित्रा भै ख्यात होइत छथि ओ होइतहु रहतिहि किन्तु एम्हर तँ मनोरथे टा पैघ और किछु नहिँ, जँ आइ १०-११ वर्ष सँ वहितहुँ छथि तँ जकरा जेहन मनोभाव से तेहन गवैछ अर्थात् क्यौ 'सोनी' (शोणमती) क्यौ बलान (बिल्व-मती) बहुत भुतही बलाने—इत्यादि कहि जानि सुखी होइत छथि (आलापुर, नारेदिगर मेँ कतहु क्यौ दुःखी अछि ?) अस्तु । कहवाक तात्पर्य एतबै जे विख्यात कौशिकी, शालीग्रामी, गण्डकी, हहेया, करेह सनि बुद्धिधार मेँ मिलि जाएव तँ असम्भवे नहिँ असाध्यो किन्तु ई लघु बुद्धि केवल पं० श्री चेतनाथझा (कृष्णजी) क अति सुखद शान्त वाग्वती सनि धीधार कैँ धै चलैत छथि । यद्यपि लघु क उपर लघुता वैयाकरण नैयायिक दुनू गोटै कहताहे किन्तु हम ताहू सँ अधिक कुटिलगामित्व दुर्गुण एक टा और रखैत छी, एकर सम्हार (सोझ बाट धै चलाएब) उक्त पुरुषपुरन्दर क नामहिर क आधा पर अछि ।

लघुता जीह पसारल जल टपकाए
चलनि कुटिलता दोसरि खल लपटाए

आब तँ ई अभगली क्षुद्र धीधार थमकि रहलि, चलितहि नहिँ अछि । कारण उपर उक्त 'लघुता' तथा 'कुटिलता' दुनू तेहनि उपद्राविणी जे चलाहे नहिँ दैत छैक । तेँ एहि स्थान मेँ एकटा मोनि बनि गेल, देखैत जाउ । के

Scanned by CamScanner

ई हीँ हीँ समाचार क स्वामी थिकाह जनिक अनुरोध पाबि सर्वथा हमरा सबहि कैँ असामीएं बनाए सर्वदा लितहु गेलहुँ, देव तँ केवल 'भीम' 'सीम' 'इन्दु' 'तिन्दु' एकरहि सब कैँ, एम्हर तँ 'कतवो दूह कटिअहि धार' क विषय अछि। तावता पहिने लोलनमरा बूढ़वक (बुड़िवक) पश्चात् जिहनमरा········ इत्यादि सँ अपना कैँ शतशः सहस्रशः धिक्कारैत धैर्य धै जँ देखैत छी तँ सब पर्याप्त, किछु न्यूनता नहिँ, अतएव अतिक्षुद्र। दुष्प्रकृति तथा परम पामर दुर्व्यवहार एहि दूनू कैँ उक्त मोनि मेँ फेँकि आव शङ्ख फुकैत छी, सबहि गोटै शुभ शुभ कहि अनुग्रह कैल जाए।

कवि श्री हर्ष कहैत छथि—

"विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतो न सिन्धुरुत्सर्गजलव्ययैर्मरुः।
अमानि तत् तेन निजायशोयुगं द्विफालबद्धाश्चिकुराः शिरःस्थितम्।"

जाहि सुचतुर गुणोदार करुणापारावार क 'गुणसिन्धु'क संगम-व्रत ई अल्प-बुद्धि कैलक अछि ओ कर्मवीर समस्त राज्य साम्राज्य सुमेरु कैँ तोड़ि फाड़ि अजगर समान परम आलसी निरुद्योगी क दारिद्रय खाँखड कैँ नहिँ भरि देलन्हि तथा दान क जल क व्यर्थैं (नहिँ, क्रोध सँ पसिझैत पसेना हस्तोदक कैँ) भरल ताहि ताहि खाँखड़ डावर क उह्लिलव सँ मरुवत् भेल भूमि क जिह-नमरा तृप्त भै सड़ि, गलि, पचि, बहि नहिँ गेल, येह दूइटा उच्च मस्तकस्थ कृत्रिमकारी शिरो भूषण (फुसिए) अयशोयुग मानल जाइछ, वस्तुतः जनिका आँखि छन्हि ओ उक्त धर्मावतार क सुयशःप्रभा सँ कारी पाकल अपन मूर्धजहु कैँ स्वच्छ देखैत छथि, अथापि कालिमा (करिऐ) बनाओल बुझैत छथि।

प्रातः स्मरणीय मिथिलेश महाराज बहादुर अनेकविद्यानिधान विद्यमान भारत सनातन धर्म-रक्षक श्री ५ मान् रमेश्वर सिंह विप्रर्षि (ज० सी० आइ० ई०) क जन्म माघ कृष्ण नवमी सन् १८६० ईसवी मेँ भेलन्हि। वैकुण्ठवासी महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर (जी० सी० आइ० ई०) हिनका सँ दू वर्ष ज्येष्ठ छलथिन्हि। ई मैथिल ब्राह्मण श्रेष्ठ श्रोत्रिय खण्डवलाकुल मेँ अवतीर्ण भेल छथि। हिनक पूर्वज महामहोपाध्याय स्वनामधन्य महेश ठाकुर दिल्लीस्थ अकबर सम्राट् सँ विद्याप्रभावैँ मिथिला राज्योपार्जन कैलन्हि।

आसीत् पण्डितमण्डलाग्रगणितो भूमण्डलाखण्डलो
जातः खण्डवलाकुले गिरिसुताभक्तो महेशः कृती।

Scanned by CamScanner

शाके रन्ध्रतुरङ्गमश्रुतिमही (१४७८) संलक्षिते हायने
वाग्देवीकृपयाऽणु येन मिथिलादेशः समस्तोऽर्जितः ॥

"उपर उक्त पुरुषसिंहयुगल क पिता महाराज महेश्वर सिंह सन् १८६०ई० क अकतूबर में वैकुण्ठ वास पौलन्हि। दरभङ्गा राज्य कोर्ट आव् वार्ड्स (Court of Wards) क अधीन भेल।

उक्त विद्यमान श्रीमान् क जन्मलग्न में वृहस्पति छथिन्हि। "किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे वृहस्पतिः" एहि वाक्य सँ धनक कोन कथा जे विद्यावल ओ धर्मबल सँ शत्रुनाश होइतहि गेलन्हि ओ रहतन्हि। बाल्यावस्था में ई बड़े चंचल छलाह, बुद्धि अति तीव्र छलन्हि।

दूनू भाइ क शिक्षा 'कोर्ट' क अधीन भेलन्हि। प्रथम संस्कृत क एक पण्डित, दोसर मौलवी ओ तेसर अंग्रेज मास्टर नियत भेलाह। प्रथमं शिक्षा दरभंगा राजभवनहि में भेलन्हि। किछु दिनक अनन्तर—

पुनः ई छोटि बुद्धि थभकलिहि !!! औ पथप्रदर्शक बाबू ! आव चलबिऔ ने। हम पुछैत छी जे अनका हेतु कलकत्ता बम्बैक सड़क एहि क्षुद्र बुद्धि क हेतु खोंड़वन्हे ? जँ एहिठाम ओ सन् वा संवत् दितिऐक (जाहि समय में पढ़ै लगलाह) तँ कोन अनुचित वा जँ अपने से नहिं लिखल तँ हमरा भेटते कउ, अस्तु; विशेष कहबाक ई अछि जे ताहि समय में जे लोकनि राजाश्रित 'मोसाहेब' सबहि छलाह, हुनका लोकनि मध्य कतेकहु क वंश में संप्रति दारिद्र्य, अविद्या तथा अनपत्यता क कारणैं वंशलोपो प्रायः देखि पड़ैछ, एहि सबहि क मुख्य कारण केवल स्वच्छन्द लूटब, उड़ाएब, ओ प्रभुक आँखि कैं म्लान करब येह सब छलन्हि; तथापि क्रमशः साम्राज्य बढ़ितहि गेल ई केवल शुद्ध मनोभाव सँ अन्तस्तपश्चर्या क फल। अतएव इहो दूनू उपर उक्त पुरुषसिंहगुनु तँ साक्षात् तेजःस्वरूपे जनिका हेतु वैह अन्तःशक्ति देखनिहार, हुनक शिक्षा की ? केवल लोक में समय बितैबाक हेतु तथा अनेक विषय कैं स्मरण करैबा लै अनेक शिक्षकहु क प्रयोजन, तावता ओहो लोकनि शिक्षा देनहि होइथिन्ह। के पण्डित बाल्यावस्था में उपर उक्त प्रभुयुगल क अध्यापक छलाह ? अंग्रेज 'मास्टर' क तँ कथै कोन जे प्रायः मौलवी फुसिआह रहलहु उतर ताहि मास्टरहिक वा 'गार्जिअन'हिक अनुरोध सँ 'पारसी'अहु क शिक्षा उत्तम रूपहि देलथिन्हि, एहि क्रमैं पठनशिक्षा रहलहु पर काशी निर्वाणप्राप्त ऋषिस्वरूप स्वपितृव्य महाराज कुमार गुणेश्वर सिंह क तथा

औरो दूइ तादृशे स्वपितृव्य क सुशिक्षार्थ दृष्टि वहुधा पड़ैत छलन्हि अतएव अपन दृढ़ सदाचार सँ कहिओ वञ्चित नहिं भेलाह जे "सदाचारपरित्याग सब जाति ओ सब देश में संस्कारविघातक तथा आयुर्दायिहु क ह्रासक होइछ" तावता सब संस्कार बढ़ले गेलन्हि, अर्थतः विनु बुझनहु वाकुट बाकुट लै स्वच्छन्द सम्पत्ति कैं फेंकि, लुटा देव अनुचित थिक, इहो संस्कार ताही समय क थिकन्हि, जाहि संस्कार प्रतापें आइ महाजन लोकनि ठाँ तँ सहजहिं, जे साधारण हमरहु गुणोदधि में लहरि लेवाक सौभाग्य भेल अछि इत्यादि अनेक विषय एहि दोसर भौरी में दै पुनि बढ़ैत छी ।

जखन यज्ञोपवीतसंस्कार भै गेलन्हि ततःपर की, नित्य सन्ध्या ओ पूजा क नियम यथासमय चलल । अनन्तर मोजफ्फरपुर में पढ़ै ऐलाह, बहुत थोड़ दिन औतैं पढ़ि पश्चात् काशी आवि 'क्वीन्स कालेज' बनारस में पढ़ै लगलाह । डेरा चौका घाट वरणाधार क पार में तटहि पर वगैचा मध्य छलन्हि जे अद्यावधि विद्यमान अछि । ताहि समय मे सोनवरिसा क स्वर्गीय महाराज हरिवल्लभ नारायण सिंह वहादुर (के० सी० आइ० ई०) गन्हवरिया राजन्य तथा 'करम्रहा'-मैथिल-ब्राह्मणकुल कल्पतरु रजौराधिपति स्वर्गीय राजा बुद्धिनाथ चौधरिओ उक्त कालेजहि में शिक्षा प्राप्त करैत छलाह । अहा ! ताहि समय मध्य की मैथिलक गौरव छल होएत !! जे नाना उद्भावना संप्रति दीनहीन मैथिल साधारण जनता में उत्पन्न भै अनुष्ठेय अवस्थहि में रहि लटकि जाइछ !! से जँ ताहि समय में उपस्थित भेल रहैत तँ आइ कतेक उन्नत आन मैथिल जाति कैं देखितहुँ ! अस्तु, कहवाक जे तावता सम्प्रति गुँह मोड़ि वैसने एहू स्थिति में रहव दुर्लभे" इत्यादि अनेक आन भावना कैं अवरोध कै पुनः प्रकृत विषय क अनुसरण करैत छी—ता मध्य में अनुभूत विषय एकटा—करता—

दुर्मति पिलिआ पाछू कूकुर चित्त, दुर दुर सहिओ घूमथि गलिए नित्त ।

प्रिय पाठकगण ! हँसी खेड़ि, गप्प इत्यादि लिखव कोनो ततेक दुःसाध्य नहिं किन्तु श्री १०८ भगवान् जगदीश्वर क अधिकांश लै अवतीर्ण पुरुषपुरन्दर क चरित्र लिखबा में प्राधान्य पुण्य क, तकर तँ एम्हर न्यूनते, कारण जनिक जनिक 'अधिकांश' हुनके सँ वञ्चित तैओ (फुसिए) सनातन धर्मावलम्बी ? तखन आगाँ कहवे की ई विचारणीय ।

Scanned by CamScanner

उक्त श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर दूनू भाइ क केहन मेधा, धारणा ओ परिश्रम जे बारहहि वर्ष क अवस्था में 'इण्ट्रेन्स' क 'कोर्स' ग्रन्थ सब पढ़ि परीक्षोद्यत ? किन्तु 'नाबालिक' (अप्राप्तवयःस्थ) जानि परीक्षा में नहिं लेल गेलाह, एहिठाम बहुत संकुचित विषय अछि, पथ प्रदर्शक महोदय ! हम अपराधी नहिं।

सन् १८७८ ईसबी में 'लार्ड लिटन' उक्ताराध्य विद्यमान श्री ५ मान् क स्वतन्त्र विचार तथा विद्या सँ प्रसन्न भै (The statutory civil service) एक विशिष्ट शासकत्वेन नियुक्त कैलथिन्हि।

ज्येष्ठ महाराज बहादुर तँ अपन अवस्था पाबि राजसिंहासनारूढ़ भेलाह। विद्यमान श्री ५ मान् दरभङ्गा, भागलपुर, छपरा इत्यादि स्थान में 'एसिस्टैण्ट मैजिस्ट्रेट' सँ 'ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट' धरि सन् १८७८-१८८५ ईसबी पर्यन्त छलाह। हिनक 'तजबीज' (विचार) देखि 'कलेक्टर', 'कमिश्नर' तथा 'हाइकोर्ट' क 'जजो' साहेब लोकनि अति प्रसन्न होइत छलथिन्हि। क्रिकेट पोलो इत्यादि पाश्चात्य खेड़ि में अति निपुण, घोड़ा पर चढ़बाक अभ्यास तेहन छलन्हि जे ४० 'मिनट्स' में १५ 'माइल्स' धरि चल जाइत छलाह।

हमर श्री ५ मान् काँ वंशानुक्रमैं कोनो प्रगन्नता भेटितन्हि, किन्तु इहो प्रतिभा क फले जे बच्छौरे प्रगन्नता लेलन्हि जकर सब मिलाए ३लाख क आय ताहि समय में छलैक। एकर नाम 'वत्सपुर' थिकैक, एहि प्रगन्ना सन उर्वरित (उपजाउ) भूमि प्रायः मिथिला में आन होएत, किन्तु धान क अपेक्षा आन आन अन्न, कन्द, मूल, हरदि, आद, आरु, खम्हारु, तमाकू (तँ बच्छौर क नामीए) ई सब पूर्ण होइछ। एहि प्रगन्ना कैं जीवन देनिहारि ३ नदी—प्रथम पुरानिधार कमला, जे दिनानुदिन नविए भेलि जाइत छथि, दोसरि सोनी (शोणमती) जे जबदी प्रगन्ना ओ बच्छौर क जोड़ पर, तेसरि बलान (बिल्वमती) सँ मिलि सर्वदा अविकल प्रवाहित होइत रहैत छथि। बच्छौर में ब्राह्मण निवासग्राम थोड़, क्षत्रिय, भूमिहार, क्वैर, गोआर इत्यादि जाति क लोक अधिक अछि, संस्कृत विद्या क प्रचार प्राचीन समयहि सँ चल अबैत अछि, जनकपुर सँ बहुत समीप ई प्रगन्ना अछि। बहुत बच्छौर क भूमि मिथिला-माहात्म्यक अनुसार राजर्षि जनक क आराम-वाटिका क अन्तर्गते। बच्छौरहि क भटिसीमरि ग्राम मध्य एक पोखरि क किनार में १०-१५ हाथ नीचाँ गाड़ल एक विचित्र कूपेश्वर नाम सँ प्रसिद्ध श्री १०८ महादेवजी छथि, सुनैत छी जे जे क्यौ हिनका कोड़वबैत छन्हि हुनका विघ्न होइत छन्हि, एकबेरि

Scanned by CamScanner

गोआँ लोक सब मिलि कोड़ाबै लगलाह, १०-१२ हाथ कोड़ल गेला उत्तर टूटल मन्दिर क पक्खा में ताख पर राखल एक सीसी ! देखल गेल ? संभव जे गंगाजले होइक इत्यादि होइतहि गाम में महामारी होवै लगलैक, पुनः झाँपितोपि पूर्ववते छथि। ताहिठाम एक सुन्दर 'नीलमणि' नाम सँ प्रसिद्ध अङ्कुरे दोसरो महादेव छथि। ई जनकपुर सँ १२-१३ कोस पर अग्निकोण में छथि, हिनक महिमा क सत्यासत्य क विषय क निश्चय ताहि गाम क लोकहि पर निर्भर अछि। एहि क्षुद्र लेखकहु क जन्म भूमि उक्त प्रगन्ने थिकन्हि। साम्प्रतिक एहि प्रगन्ना क वर्णन वहुत दुरूह भै गेल अछि, कारण आगाँ स्पष्ट अछि।

हमर श्रीमान् कैं संकृत विद्या क अनुराग ओ अभ्यास ततेक जे भागलपुर में जखन "'ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेटी'' करैत छलाह, ताहू समय में एक पण्डित कैं संग राखि ऋग्वेद तथा काव्यादि क व्यवसाय करैत रहथि। तकरे फल थिक जे प्रायः अधिक पण्डित श्रीमान् क समीप लज्जावती खढ़हि जकाँ संकुचित भै जाइत छथि, आब विचार करैक थिक जे एहन पाण्डित्याभिमानी श्रीमान् सँ के क्षुद्र पण्डित आँखि में छाउड़ि दै धन सम्पत्ति लै फुसिए घर भरताह, प्रत्युत तादृश पण्डितहि जी सब कैं जँ धनोपार्जन कै अपना उपयोग नहिँ करै अवैत होइन्हि तँ समर्पण करथु अवश्य सुप्रवन्ध सँ हुनक धन सुरक्षित रहतन्हि, जँ शास्त्र भारवाही भैओ 'अचतुर' होथि तँ भक्ति श्रद्धा राखि लोभ लोल कैं थकुचि अनुव्रजन करथु, अनुपम शिक्षा भेटि जैतन्हि।

सन् १८८५ ईसवी में उक्त प्रभुवर 'मैजिस्ट्रेटी' कैं छाड़ि अपन प्रगन्ना क प्रवन्ध में लगलाह, एहि वर्ष में वंगाल 'लेजिसलेटिव कौन्सिल' 'मेम्वर' (Member of the Bengal Legislative Council) निर्वाचित भेलाह (केवल थपड़ी वजैवाक हेतु नहिँ, किन्तु) उक्त कार्य कैं ताहि सुगमता सँ कैलन्हि जे 'गवर्नमेण्ट' अति प्रसन्न भै सन् १८८६ ई० में हिनका 'राजा वहादुर' क उपाधि सँ भूषित कैलथिन्हि, तत्पूर्वहि सँ 'कोर्ट' में हिनक अनुपस्थिति पर अधिक ध्यान नहिँ देल जाइत छलन्हि, एहि मध्यहि में इहो कर्मठ महातपस्वी (८ मास में) सप्तपुरी ओ द्वादश ज्यतिर्लिंग क यात्रा सम्पन्न कैलन्हि। जाही वर्ष 'विरही' गंगाजी क वाढ़ि क घोल उठल छल, सब लोक शशंकित रहै जे कोन समय में केहन उपद्रव होएत; ताहि वर्ष में हिमालय क यात्रा कै गंगोतरी, यमुनोतरी, केदार ओ वदरी क यात्रा सम्पन्न

Scanned by CamScanner

कै जैह ऐलाह कि एक मासोतराहि गंगाजी फुटि खेलैलिहि ! श्रीनगर इत्यादि कूर्माचलीय कतेको प्रदेश जलप्लावित भै गेल ।

श्रीमान् श्री १०८ गंगाजी क दर्शन कै साक्षाज्जगज्जीवनी शक्तिक दर्शन जानि प्रति मास में गंगास्नान करैत छलाह जे अद्यावधि ओ नियम बढ़ले जाइछ ।

प्रिय पथप्रदर्शक महाशय ! ई लघु बुद्धि पुनि भोतिऐलिहि !!! हमर साधारण मैथिल जनता में ई बड़ पैच रोग चिरकाल सँ प्रविष्ट भेल अछि, जकर चिकित्सारूण "मैथिल महासभा" ८ धरि संख्या पारो कैलन्हि किन्तु वड़ थोड़ अंश हँटल अछि जे बुझनिहारो थोड़ेके गोटै होएव। उक्त रोग क रूप—संपत्ति पावि विलासिता तथा संपत्तिशाली महाशय क पार्श्ववर्त्ती—(श्वसुर, सार, बहिन्वय, हिनक नर, जर, मार्जार साहेव, मूससाहेव, अल्लग मारैवाला, कौआवावू, रतिचरवावू, दिन में वेंह (सिद्ध, नहिँ नहिँ निषिद्ध) गिद्धजी ......ममिऔत, पिसिऔत, हँसिऔत, घसिऔत, माम (शुद्धताम कैं के पूछै, विवर्ण सुवर्ण आवश्यक) लोकनि उक्त विलासी प्रभु कैं उन्मत कै अपने उक्त विलासिता क सखी सनि भेलि मुँह कान पुछने कनेक मध्य में सौभाग्य सूचक सिन्दुर क ठोगो देने, अहा ! केश ? 'चिकुर रचल जलधर विनु पति नाँ' क उपमा कैं चरितार्थ करैत हमर मैथिल जनता क आश्रय कल्पवृक्ष सबहि क मुँहसुपिआ गड़ार ओ सब थिकथि, जे कतेक गाछ कैं खैलन्हि, ततबै नहिँ ! जाति खैलन्हि, धर्म खैलन्हि, विद्या खैलन्हि, विवेक कैं चिवौलन्हि, शील कैं चटलन्हि, मनुष्यत्व कैं चाभि पशुत्व बनाए आब कनेक पाश्चात्य वेष मात्र देखाए राक्षसत्व बढ़ैवा पर सन्नद्ध !!!

एही उपर उक्त रोगक परिणाम थिक जे पुण्यपुंजप्रभावरूप हमर सब मैथिल श्रीमान् सबहि प्रायः स्वदेश, स्ववेष, स्वरीति, स्वनीति इत्यादि सँ विरते विवेकान्ध लोक में बुझल जाइत छथि, ताहि सबहि में सर्वगुण सम्पन्न [भारतवर्षक व्याधि कैं हँटैवा में सन्नद्ध, ततै छोट अपन मिथिला देश दिशि ओ दृष्टि नहिँ ? कहिआ ? जहिया तहिया, आव तँ नहिँ ? आँखि पसारि ताकि लिअ, जे रोग एतेक दिन सँ कुपथ्य क कारणैं असाध्य भै गेल अछि से तँ क्रमिके निवृत्त होएत] पूर्वसंचित पुण्यराशिरूप तँ सुरूप, जे बाल्यावस्थहि सँ अपन आचार, विचार, नित्य, नियम इत्यादि पालन सँ साक्षात् तेजोरूप श्रीमान् विद्यमान मिथिलेश महाराज वहादुर वस्तुतः श्लाघ्यचरित्र भै सर्वत्र

Scanned by CamScanner

विदित भैओ कतेक अभगला लोक कैं तादृश भासमान नहिँ होइत छथिन्हि!!! कहू, तखन आनहु श्रीमान् सबहि फाँ दृष्टिरोगी लोक ओहने देखैत होइथिन्हि, तथापि धन्यवादार्ह हमर श्रीमाने सबहि थिकथि जे केवल हमरहि सबहि क जाति, धर्म, विद्या····इत्यादि सब रहौ तदर्थहि एतबौ कायक्लेश कै सब मर्यादा रखने छथि तँ, नहिँ जँ पाश्चात्यविद्य सम्पत्तिशालीक स्वच्छन्द चलब देखैक हो तँ श्री ५ मान् बड़ौदा नरेश क दिशि दृष्टिपात करैत जाउ, एहना अवस्था मेँ जे (कतबौ सुधारल जाएत, नहिँ सुधरबे, एहि सँ विरक्त भै) 'मुरारेस्तृतीय; पन्थाः' करैवाला श्रीमान् लोकनि जँ भै जाथि तँ कतहु मिथिला क नामो टा रहत ? ई नहि देखि मनुष्यत्व कैं त्यागि अठरहा तँ वहुतो, जे कोनहु दरबार मेँ बिसहो सब (तेना भुकैत होएत जे जँ काटै तँ ओहिना भुका मारै) रहस्यातिरहस्य विषय वाजि भूकि तथा जाहू मेँ मुँह नहिँ देबा क ताहू मेँ मुँह दै विषहा जानि निकालल जाइछ!!! एही सबहि क कारणेँ कोनो टा ऐकमत्य क काज होवै नहिँ पबैछ, अस्तु, आब आशा कैल जाइछ जे हमर सब प्रभुवर देनानुदिन तादृश चतुर भेल जाइत छथि जे ओ जानवर सब रहै नहिँ पाओत।

हा! कहू जे के महाशय लोकनि कोन नित्यनियम क पालन करैत छथि विद्या पढ़ि व्यवसायरहित भै गुनझिक्कू डाइन जकाँ आँखि चमकाए पेट पालैत छथि, ततै एतेक टा राज, एतेक टा काजक भार, ई अवस्था, एतेक लोक···· इत्यादि राहैओ कनेको विचलित नहिँ भै केहन हठी तपस्वी श्रीमान् कोन रूपेँ सब सुप्रवन्ध कै रहल छथि। जँ थोड़ेको एहि विषय कैं हमरा लोकनि अपना चित्त मेँ स्थिर भै विचार करी तँ बहुत शीघ्र उन्नत भै देश क परमोन्नति कैं कै देखावी, किन्तु हा! खेद! से सब किछु नहिँ, केवल वैह मतसरता जे फल्लाँ कैं एतेक सम्पत्ति किऐक, एटेक विद्या किऐक, एहन उन्नति किऐक इत्यादि घराउ धराउ सर्वत्र पहिरने राजा, महाराज, बाबू बबुआन सब ठाम उपस्थित भै एही सुगुणेँ विदाइ लेब, झगड़ा लगाएब, फुसिए स्तुति ओ निन्दा इत्यादि कै देश कैं उपहासास्पद बनवैत छथि। आब हम एखन सब अपन मनःक्वाथ कैं अवरुद्ध कै पुनः अनुष्ठेय पथक अवलम्बन करैत छी।

उक्त श्रीमान् अपन राजभवन दरभङ्गा सँ १० क्रोश पर स्थित श्रीमती कमलानदी (पुरानि धार) सँ समीपहि पूर्व भाग मेँ 'राजनगर' एहि नाम सँ ताहि प्रदेश कैं प्रसिद्ध कराए बनवौलन्हि। अनन्तर बड़े बड़े भारी अनुपम

Scanned by CamScanner

प्रासाद बनै लागल, जकर वर्णन गत आश्विन क उद्गार मध्य कैल गेल अछि, ताही उद्गार में नवरात्रा क श्री १०८ दुर्गा महोत्सवहु क विषय क चर्चा अछि। तैओ एतबा कहव जे देव देवीक पूजा आराधना क तँ श्रीमान् कें भारी झोंके छन्हि जाहि सँ मिथिला देश भरि में प्रायः ताल ठोकि क्यौ आन धम दिशि मुँह देताह तकर बाट कोन। हाँ, चहुटा क क्यौ चौधरी 'अजसमाजी' भै मिथिला देश क निन्दा कै कुहरैत छथि, सेहौ वेस, कारण आँखि पसारि सव देखि लेथु जे विधर्मी मैथिल कैं कल्याण नहि, एकाध पुरुष सुङार देखलो जाथि किन्तु पश्चात् सर्वनाशे।

सहसा १८९८ ईसवीक दिसम्वर में महाराज वहादुर लक्ष्मीश्वर सिंह G. C. I. E. कैं स्वर्गवास भेलन्हि !!! हुनक आश्रित लोक वड़े दुःखी भै शोकाकुल भेल किन्तु ताहि राजसिंहासन पर विराजमान विद्यमान श्री ५ मान् कैं देखि सव राज कर्मचारिगण वहुत प्रसन्न होइत गेलाह ओ सबकैं धैर्य ऐलान्हि।

विद्यमान श्री ५ मान् सिंहासनारूढ़ भेला क अन्तर सन् १९०० ई० में 'कौन्सिल'क 'मेम्वर' भेलाह तथा 'कैसर हिन्द' क सुवर्ण पदक देल गेलन्हि। सन् १९०२ ई० में 'पुलिस कमीशन'क 'मेम्बर' भेलाह। 'पुलिस कमीशन'क रिपोर्ट में अपन विचार तादृश प्रौढ़ लिखलन्हि ले ओही सन् १९०२ ई० में 'के० सी० आई० ई०' क पदवी भेटलन्हि, ततःपर १९०७ ई० में वंश परम्परा में 'महाराज वहादुर'क पदवी देल गेलन्हि। चारि वेरि 'ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन्'क सभापति भेल छथि। जाहि समय मध्य कलकत्ता में छलाह, 'वंगाल जमिन्दार सभा' क प्रधान भेल छलाह, भारत धर्म महामण्डल क सभापति, समस्त भारतवर्षक प्रधान धर्म नेता, कलकत्ता महाकाली पाठशाला क आजीवन 'ट्रस्टी' तथा मैथिल महासभा क आजीवन सभापति छथि।

एहि में कतेक हमर लघुवुद्धि वाला उद्धत पाश्चात्यविद्य क नाक पर माछी वैसैत छन्हि, ई ककर साध्य, औ नकमारगण! जँ हमर उक्त श्रीमान् सभापतित्व अस्वीकार कै सभा में समवेत नहिँ होथि तँ सभाक रूप केहन होएत ई अपन मैलो हृदय दर्पण में देखि लिअ। अथ च एक विषय औरो हम ई कहैत छी जे जतेक गोटै सभा में समवेत होइत अछि, ताहि में कतेक गोटै कतेक काल मैथिलत्वाभिमान क रक्षा में दत्तचित्त रहैत छी? मै० म० सभाक जे टा प्रस्ताव राखल गेल अछि ताहि में एको प्रस्तावक पालन उक्त

श्रीमान् कें छाड़ि ककरहु सं कैल जाइछ ? अतएव एहन डगमग लोकक सभा में टाका नहिं देल जाइछ, ई टा छोड़ि और की आपत्ति जे व्यर्थ 'नकमार'क उपाधि सँ अलंकृत भै स्वच्छन्दता देखबैत छी। की अपने लोकनि ई बुझैत छी जे पाश्चात्यविधक दर्प सँ माता पिता इत्यादि गुरुजनक कण्ठ दबैत दबैत आगहु धरि बढ़ि चली ? धिक् !!! सम्हरि चलू' अन्यथा कहै पड़ैछ जे 'छोट पैघ वस्तु', नहि भेटला सँ बासने फुटल !!!

विचार करैक थिक जे हिनक सभापति भेला सँ आइ 'भारत धर्म महा-मण्डल केहन उन्नत भेल अछि। 'इण्डिया फेमिन ट्रस्ट'हु क मेम्बर छथि।

सन् १९०६ ई० में जखन हमर श्री ५मान् पंचम जार्ज 'प्रिन्स आव्वेल्स' क रूप में 'प्रिंसेस्'क संग कलकत्ता आएल छलाह, ताहि समय में जे 'रिसेप्सन कमीटी' बनल छल तकर सभापति भै जनसाधारण क उपकारार्थ एकलक्ष टाका उक्त सम्राट्क कर-कमल में देने छलाह जे मेडिकल कालेज हास्पीटलक हेतु देल गेल।

हिनक गुणक सर्वव्यापकता देखि कतेको दुष्ट सब दुष्टाचरण कैलक, किन्तु हमर श्रीमान् तेहन शान्तिभावें ताहि दुष्ट सबहि सँ काज लेलन्हि जे ओ सब स्वयं नष्ट भै गेल। हिनका में ई अनुपम गुण वा विशिष्ट महात्माक लक्षण पाओल जाइछ। जेना भर्त्तृहरि कहने थथि—

"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥'

सन् १९१० ई० में प्रयागमध्य 'जस्टिस्' श्रीयुत शारदा चरण मित्रक उद्योग सँ सकल भारत वर्षीय हिन्दू क सभा भेल छल, तकर सभापति उक्त श्रीमाने भेल छथि। कहाँ धरि गनल जाए, जे कोनो सामाजिक वा धार्मिक सभा अछि वा होइछ हमर श्रीमान्क सबहि सँ सम्बन्ध रहै छन्हि, सब सनातन धर्मावलम्बी हिनकहि प्रधान मानैत छन्हि। यैह एकटा बड़का प्रधान कारण भेल जे सर्वदा नाना प्रकारक अन्यान्य देशक पाश्चात्य विद्या पढ़ने लोक कें बुझबैत सुझबैत श्रीमान् कें नियमतः पंचायतन पूजक अपना देश क लोक क दिशि ध्यान नहिं गेल, अतएव मिथिलहु में विधर्मी लोक क संचार होबै लागल तथा प्राच्य विधानिपुण क शास्त्रार्थातिरिक्त विषय दिशि कहिओ दृष्टि पाते नहि !!! यदि एहन दृढ़ मर्मज्ञ परिश्रमी श्रीमान् नहिं होइतथि तँ सनातन धर्मक कोन दशा भेल रहैत से विचारणीय।

Scanned by CamScanner

मिथिलाक समाजक तथा धर्मक प्राणरूप येह टा छथि, विशेषतः श्रोत्रिय मण्डल क। एतै किछु वक्तव्य—

प्रिय पाठक वर्ग ! हमर मैथिल समाज प्राचीन व्यवहार, रीति, नीति सँ शिथिल भै नव-नव विधान खेती, महाजनी, विवाह सम्बन्धी व्यवार करै लगलाह। ततै खेती ओ महाजनी सँ अभियोग (मोकदमावाजी) में निपुण भै गेलाह किन्तु विनु पाश्चात्य विधा जनने फुसिआह ओ असद् व्यवहारीटा भेलाह, विवाह सम्बन्ध एहन चलल जे उच्चकुलीनता कतै गेलाह तकर पतै नहिँ, ततवा आँखि पसारि तकला सँ निश्चय होइछ जे सव प्रान्तक लोक उन्नत देखि पड़ैछ परन्तु मैथिल जाति अद्यावधि उधारे रहल !!! थोड़ेक दिन सँ पाश्चात्य विद्या में थोड़ेक गोटै निपुण भेलो छथि तँ तेहन चटकल घर रहैत छन्हि जे अन्यथा करैत अर्थात् कैक पुरुष सँ बिसरल अपन सद्धर्म कैं नीचाँ दावि झटपट विचित्र धर्मक पक्षपाती भै कीदन बूझि पड़ैत जाइत छथि, नहिँ बजने उपाय नहिँ, तें किछु लिखहि पड़ैछ।

हमर देशीय कतेको पाश्चात्यविद्य माता, पिता सँ श्रद्धा हटाए स्वतन्त्र आत्मसुखी भै प्रतिष्ठित कहैबा लै सन्नद्ध रहैत छथि। जे प्रत्यक्ष देवता माता १० मास धरि गर्भ में राखि अत्यन्त संयम कै जन्म देलथिन्हि, ततः पर अपने शरीरक रक्त कैं गारि वाल्यावस्था में विष्ठामूत्र में लिप्त भै पालन कैलथिन्हि, ताहि माता देवी कें दुर्वचन, भर्त्सना, गंजन, निन्दनीयाचरण···· ताड़नपर्यन्त ? धिक्कार ताहि नराधम कैं धिक !!! ततः पर पिता, पितृव्य, मातुलप्रभृति हुनक समय-समय पर शिक्षा संस्कार दैत ओ अपने कष्ट सहि एतेक दूर धरि पढ़ौलथिन्हि जे लोक में वकील मास्टर इत्यादि क उपाधि पौलन्हि किन्तु परिणाम तकर येह जे जखन माताक ओ दशा तँ पिता पितृ-व्यादि के ? धिक् धिक् नराधम !!! ई तँ प्रथम काण्ड भेल। अथ दोसर अनेक नियम निष्ठा कै नामकरण सँ उपनयन धरि संस्कार देल गेल, जे भेला सँ ब्राह्मणत्व संरक्षक गायत्री जानव, सन्ध्या वन्दन करव ओ आचार सँ भोजनादि करव परमावश्यक, किन्तु हा खेद !!! स्कूल जैतहि स्वकुल संस्कार क दिशि 'पर्दा' खसल जकर बदला में श्ववुल क कुसंस्कार-चित्र आगाँ ठाढ़ !!! हमरा लोकनि सोहारी रोटी तोड़ि कै खायव ओ नवाखिआ दाँतैं काटि चप चप कै खैताह इत्यादि उत्सर्ग क कोन कथा। जे जँ 'बूट-शूट' लगैनहि अल्लग मारैत होथि तँ चिन्हनहिँ, ककरो नाङड़ि बाहर टेढ़, हिनका सबहिक

भीतरीए (प्रकृति) नाड़ड़ि अति कुटिल, राजा महाराज, बाबू, बबुआन.... इत्यादि क वलुआ ढूनू (सबहि गोटै जनु खिसिआइ, कारण हमर लक्ष्य हुनकहि पर, जे एना करैत छथि) सिंह, सेरक कोन कथा जे असृगाल भै श्रृगालहु पर चोट करै पर सन्नद्ध, हाँउँ-हाँउँ करब तँ साधारण, किन्तु दाँत तेहन धराह जे पानिअहु क पात्र कैं विनु दाँत लगौने नहिँ छोड़ै छथि। ई तँ भेल 'पम्प' भरण, अथ च निस्सारण शौच हीन कागतहि पर टक लगौने ? धिक् ! हुलकनि सर्वत्र, नहिँ किछु भेटै तँ अस्थि चर्वण सँ अपनहि देह क शोणित लै तृप्त !!! इत्यादि गुण सामंजस्य पाबि देश दशा क असामञ्जस्य सबहि काँ देखि पड़ैछ, तथापि परिणाम मेँ यैह कहब जे धन्य श्रीमान् जे इहो गुणकन्था स्थूल जाइछ।

प्रायः भारतवर्ष मेँ जे कोनो सनातन सामाजिक ओ धार्मिक सभा होइछ सबहि सँ श्रीमान् काँ सम्बन्ध छन्हि। सनातन धर्मक सब लोक हिनका अपन अपन मुख्य मानैछ, वस्तुतः जे एहि कराल कलिकाल मेँ एहन परिश्रमी ओ दृढ़ सनातन धर्मक संरक्षक श्रीमान् मिथिलेश नहिँ अपन प्रभाव देखवितथि तँ उक्त धर्मक ह्रास भै अनेक अधर्म क प्रचार होइत। मिथिला-समाज क 'प्राण' येह छथि, विशेषतः श्रोत्रिय मण्डल क। हिनकहि पर मिथिला क सामाजिक धर्म अचल रूप सँ चलि रहल अछि।

आब थोड़ेक हमर चापल्य क्षमा करैत जायब। मिथिला-समाजक कतेको गोटै बलात् प्रधानम्मन्य, आचारहीन, विवेकशून्य महाशय तथा परम लोभ सँ झरकल जनता द्वारा उपर उक्त सब विषय मिथ्या बुझल जाएत।

हा ! निम्न विषय कैँ स्मरण कै हृदय विदीर्ण होइछ, कोना लिखल जाय—बड़े बड़े प्रतिष्ठित घरक सन्तान थोड़ेके पाश्चात्य भाषा तथा इतिहास क विषय केँ पढ़ि शिक्षित कहैबा लै उद्यत 'यवनयाचित' 'अभक्ष्य भक्षण' कै मैथिल जनता केँ रसातल मेँ दै रहल छथि। एहिदिशि ककरो ध्यान जाइछ ? हा ! रे ज्ञानशून्य ! किऐक ई अनाचार करैत छेँ ? की दुर्गन्धिओ झाँपल जा सकैछ ? की सुगन्धि कैँ क्यौ रोकि सकैछ ? ई अनाचार (ता० ८-८-१७ ई० मध्य) समस्तीपुर मेँ दुइ उच्चकुलज नवयुवक सँ भेल से देखल गेल अछि, एहि मेँ एक व्यक्ति क नामो स्पष्ट अछि, दोसर अविदित किन्तु अनुमान सँ ओहो विदिते जकाँ !!! धिक्कार मैथिल कुल तोप केँ !!! सावधान, ककरहु अनाचार सँ मंगल नहिँ होइछ। विनु 'लैसन्स'क अस्त्र राखब अन्याय

थिक, किन्तु हम देखैत छी जे मैथिल कुल—'बन्दूक', मैथिलकुल—'रिवाल्वर' मैथिलकुल-खड्ग, मैथिलकुल-किरीच—ततेक भेल जाइछ जे मैथिलकुल क रक्षा होएब असम्भव। 'कुलतोप'क परिचायक 'मार्क'—"वैसाय पाटी शिर केश नीकैं," ताहि में (चाननक ठोप नहिँ) सिन्दूरक विन्दु ! शिखा (अपा-स्ट्रफी) शून्ये जकाँ।

आब लोभ क झरकनि देखल जाए—आइ जँ दीन मैथिल सँ बड़े छोट अनाचार (बिनु बजौनहि जय हो, बिनु बिझौ करौनहिं अपरिष्कृत स्थानहि में धप-धुप····) कैल जाय तँ ओ जातिसमाजसँ वहिष्कृत होएबा पर भै जाइछ किन्तु अस्पृश्य कैं टेवल पर राखि चपचुप कै मझिला घर में ठाढ़ शालग्राम जकाँ जे बुझल जाइछ से किऐक ? टाका क लोभ, बाजब कोना, हमर तँ घरे पालल जाइछ हिनकहि सँ, तखन हमरहु आँखि में बीझ लगैछ, मैथिल जनता झरकल जाइछ। एहि सबहि मैथिलाधम कैं उक्त श्री ५मान् क धर्म-निष्ठा, कर्मठता, सदाचार पालिता इत्यादि कोना रोचक होयतन्हि, अतएव पुनः पुनः श्रीमान् सबहिक समीप साञ्जलि प्रार्थना जे मैथिल कुल कैं तोपै बाला, उड़ा देबैबाला, सर्व संहार करैबाला पर तीव्र दृष्टि देल जाए; अन्यथा व्यर्थ स्वच्छन्दाचार लगले चलि 'सदाचार' उच्चारिते भेला सँ अपन सत्ता कैं रखताह। इत्यादि महाकराल काल क लाल गाल में पड़िओ जँ ब्राह्मण-क्रिया कै क्यो तपस्वी छथि तँ अनुपम एक श्रीमान् मिथिलेशे महाराज वहादुर, नाना भाषा कें जानि तथा ताहि भाषाभाषी क मर्मज्ञ कैं जनैत विशेषतः संस्कृत विद्या में श्रौत, स्मार्त्त, आगम निगम दर्शनादि सब विषय कैं पूर्णरूपैं जननिहार हिनका छाड़ि और के ? एतेक राजपाट पाबिओ राजस क कनेको अहंकार नहिँ राखि सात्विक भावहिक पक्षपाती क्यौ बबुआनो देखि पड़ताह ? आइ जँ श्लाध्यचरित श्रीमान् कें हार्दिक नेता मानि सबहि देशप्रतिष्ठित महानुभाव तदनुसारहि प्रवृत्त होथि तँ झटिति मिथिला में जीव संचालन देखना जाएत।

हमर श्रीमान् फारसीओ भाषा उत्तमरूपैं जनैत छथि, पुस्तक पढ़बाक ई नियम छन्हि जे २ घंटा सँ अधिक प्रतिदिन पढ़ले ताकी, एतेक कार्यभार रहलहु उत्तर नित्य कर्म सन्ध्या पूजन करबे करी, 'रेलवे' यात्रा पर्यन्त में प्रातः काल ओ सायं काल में गाड़ी सँ उतरि अपन नित्य क्रिया करबे करी।

Scanned by CamScanner

दरभंगा तथा राजनगर में पैंघ-पैंघ पुस्तकालय स्थापित अछि। प्राय: अन्यान्यहु स्थान (यथा काशी, प्रयाग, कामाख्या इत्यादि) में उपयोगी पुस्तकालये सम सर्वत्र अछि। तँओ प्राय: वर्ष में ४-५ वेरि सँ अधिके काशी आगमन श्रीमान्क होइछ, प्रति वेरि २००) टाका सँ अधिकहिक पुस्तक किनल जाइत अछि, हमरा नहि विश्वास होइछ जे मुद्रित पुस्तक कोनो श्रीमान् सँ अपरिचित होएत।

देवता में भक्ति एहन अचल जे कतेक देव मन्दिरक जीर्णोद्धार भेल अछि ई कहि नहिं सकैत छी, अपन राज क तँ कथे कोन जे अन्यान्यो देवालय क जीर्णोद्धार बहुतो स्थान में करौलन्हि अछि। किन्तु सार्वजनिकोपकारक सौराठ क मन्दिर क जीर्णोद्धार क स्थान में के जानै कोन कारणें थोपि थापि किछु कै देल जाइछ, जाहि सँ अनवसर में ई लिखबाक अवसर हमर कंठ दबौलक। अनेक बड़े-बड़े विशाल देव मन्दिर बनबा बनबा कै देव स्थापना कैल गेल अछि। सर्वोपरि राजनगर मध्य बड़ पैंघ तथा विचित्र चित्रित शिवमन्दिर ओ संखमर्मर प्रस्तरक अतिवृहत् काली मन्दिर बनै प्रस्तुत भेल अछि, जाहि दुनू में क्रमिक श्री १०८ महादेव ओ श्री १०८ कालीजीक स्थापनो भै गेल अछि।

पुन: हमर भुतही बुद्धि भोतिआइछ। अरे! ई सब तँ भेल किन्तु जतेक मन्दिर सब भेल ताहि सबहि स्थान में जँ "संस्कृत पाठशाला" भै जाइत तँ केहन 'सोन सुगन्धि' उपमा चरितार्थ होइत, यद्यपि कोनहु-कोनहु स्थान में पाठशालो भेल अछि, तावता सन्तोष नहिं होइछ। ततेक अल्पवेतन पण्डित क रहैत छन्हि जे अपन-अपन शास्त्र में धुरन्धरो पण्डित जी लोकनि सपनौर जकाँ भेल राजपण्डित क दर्प कें दीनता प्रयुक्त ओढ़ि नहिं सकैत छथि। दोसर इहो जे छोट-छोट राज में शिक्षाविभाग क प्रधान संचालक निरीक्षकादि लोक सब देखल जाइछ, हमर श्रीमान् क राज में एकर त्रुटि बड़ पैंघ अछि किन्तु हम स्वप्न देखल अछि जे एहि सबहि क सुप्रबन्ध वहुत शीघ्र होवै लै अछि। श्री १०८ मती आद्या जगज्जननी श्रीमान् कें चिरंजीवी करथुन्हि, जे हमर स्वप्न शीघ्र सफल हो, श्री मान् क "जीवन चरित्र" "महाभारत" सँ पैंघ निर्मित भै भारत वर्ष में प्रख्यात होएत।

जीवन चरित्र लिखब साधारण विषय नहिं थीक। साधारण लोकक जीवन वृत्तान्त लिखब बड़ कठिन अछि। तत्रापि हमर मैथिल जनता में एहि विषय

Scanned by CamScanner

क बड़ पैंघ त्रुटि अछि जे बड़का-बड़का पण्डितहु कें जीवर्न, चरित्र लिखबाक अभ्यास नहिं, सेहो मिथिला भाषा में तँ कठिनातिकठिन । जँ एकाध भेटताहो तँ संस्कृत पद्य में केवल इन्द्र, वृहस्पति आदि क उपमा दै काव्य बनाए जैताह। निन्दक तँ आइ काल्हि उड़ीसहु सँ अधिक फड़ल जाइछ किन्तु प्रशंसाहु क मात्रा अधिक भेला सँ यथार्थ विषय कें नष्ट कै राजा, प्रजा सबहिक हानि-कारके होइछ। विचार करैक थिक जे आइ काल्हि जे क्यौ उदार कहौलन्हि हुनका ओतै दरिद्रा महारानी झटिति प्रस्थान करैत छथि, अथ च अगत्या कहैक पड़ैछ जे 'कृपणे' उत्तम, किन्तु नहिं, एहन कृपणता उचित नहिं जे प्रातः काल में जनिक नाम लेला सँ दिनभरि उदर देवक आराधनो नहिं भै सकै। अवसर भेटला सँ एक टा उदाहरण :—

एक कृपणक आङन में पथार (गहूम वदाम इत्यादि) सुखाइत छलैक दैवात् परबा आबि २-४ दाना अन्न लै उड़ै पर भेल कि कृपण साहुजीक आँखि ताहि परबा पर पड़ल, परबा कैं उड़ैत साहुजी देखि अचेत भै चित्त खसलाह, हुनका आगाँ पाँछा चलनिहार लोक दौड़ि कै आबि साहुजीक नाक पकड़लक, दू-चारि गोटै बन्दूक लै दौड़ल परबा क उद्देश्य कै, परवो समीपहिं में कोनो गाछ पर बैसल छल जे बन्दूक सँ मारल गेल, पश्चात् मूर्च्छित साहुजी क लग आनि ओकर पेट फाड़ल गेल, जखन ओकरा पेट सँ ओ २-४ दाना गहूम वदाम बहरैलैक तखन साहुजीक शरीर में प्राण ऐलन्हि।" ई साहुजी साधारणण नहिं कोट्यधिपतिए रहथि किन्तु हिनक दान शक्ति देखि पातालस्थ बलि कापि उठैत छलाह। एहि विषय क एक प्राचीन कविता अछि जे हमरा स्मरण नहिं भेल।

एक तँ ई भेल, दोसर इहो जे हमर मैथिल जनता क सन्तोष, धैर्य कतै गेल तकर पतै नहिं भेटैछ ? कतबो लेब तँ अघाएबे नहिं, जनिके खाएब हुनकहि पर आँखि गुड़ारब ! इत्यादि दुर्गुण 'परती क दनूफ'हि जकाँ जनमल अछि, तावता पैंघ लोक कैं अत्याज्य सम्बन्धिको त्याज्ये जकाँ भासित होइछ। विशेषतः आइ काल्हि क दरबार सबहिक ई स्थिति भेल अछि जे राजा महाराज क साधारण टहलूक जतेक आदर ताहू सँ थोड़ हुनका सार समुर क होइत छन्हि, पैर रखबाक सीढ़ी क लग लतमारा बनल रहैत छथि, जे चाहै गुड़कबैत रहौ।

Scanned by CamScanner

पुनः प्रकृत—

सन् १९०४ ई० में १३ दिन मध्य समस्त 'महाभारत'क पारायण कैलन्हि जे साम्प्रतिक पण्डितजी लोकनि सँ असाध्ये, एही अवसर में मन्याब्ध व्रतो कैने छलाह, जाहि में १५ दिन धरि केवल दूध पीबि पारण करै पड़ैछ, एहि विषय क प्रबन्ध (एक पण्डित क) बनाओल—

व्योमाग्निनागविधु (१८३०) मेषशकाब्दमध्ये
राधे सितेऽधिमिथिलं निजराजधान्याम्।
बद्धासनेन विगताखिलवासनेन
नक्ताशनेन नियतेन जितेन्द्रियेण॥

पद्यानि यत्र किल सन्ति सपादलक्ष
वैयासिकामृतरसाद्भुतसत्कथस्य।
उद्भारतस्य सखिलस्य च येन चक्रे
पारायणं दशभिरेव दिनैस्त्रियुक्तैः॥

दुग्धैकभुक्तिदशपञ्चदिनान्यबाध-
माराधितेन महताऽति महत्त्वहेतुम्।
दध्रे व्रतं मधुवनीमुपगम्य पल्लीं
कासारयागमपि कारयताथ येन॥

अथ 'राजनगर' में जे राजभवन अछि, जकरा बनबैबा में १६ लाख व्यय भेल अछि, अनेक राजकीय सीसा, झाड़, फन्नूस, चित्रादि सँ सज्जित अछि, विजुली पंखा ओ विजुली प्रकाश सँ सज्जित अछि, सम्प्रति १ लाख व्यय सँ शास्त्रानुसार पैघ गज सिंहासन बनि रहल अछि।

दरभंगा, काशी, कामाख्या, खड्गपुर इत्यादि कतेको स्थान में नव-नव मन्दिर बनवाए देव प्रतिष्ठा कैल गेल अछि। की पथप्रदर्शक महाशय। एहू सबहिक व्यय जँ एहि में देखाए देल जैतैक तँ हानि कोन ? सिमला, दार्जिलिंग, काशी, प्रयाग, राँची, कलकत्ता, पुर्नियाँ, भागलपुर, मोजफ्फरपुर ......सर्वत्र प्रायः पैघ राजभवन 'दरभंगा-राज-हाउस' प्रसिद्ध विद्यमान अछि। बाँकीपुर में एक बड़े पैघ राज दरभंगा क कोठी बनि रहल अछि। एतेक प्रासाद बनबैबाक झोंक रहलहु उत्तर काशीस्थ दरभंगा घाटस्थ विशाल राजभवन क पश्चाद् भाग क जीर्णोद्धार नहिँ होइछ, अस्तु।

Scanned by CamScanner

दरभंगा मध्य बहुत समारोह सँ भादब मास में इन्द्र पूजा कैल जाइछ, एहि उपलक्ष में दरभंगा—'स्टेशन्'क समीपहि पश्चिम भागस्थ हड़ाही पोखरि में 'रमेश्वर मंगल' होइछ, जाहि में अनेक नाव क झुण्ड पर अन्यान्यो नागरिक धनी समृद्ध लोक नृत्यगीतादि सँ आमोद विनोद करैछ, एकर क्रम काशी क "बुढ़बा मंगल" सन। दरभंगा में एक पँघ अस्पताल, 'लेडी डेफरिन अस्पताल', "इंगलिश हाइ स्कूल", 'संस्कृत कालेज' ई सब राजहि क व्यय सँ चलैत अछि। मोजफ्फरपुर इंगलिश्-कालेज' में ५००) टाका मासिक देल जाइछ। काशी में संस्कृत पाठशाला अछि। राज में कमतौल, झंझारपुर, उच्चैठ क दुर्गा स्थान में संस्कृत पाठशाला अछि।

प्रिय पथप्रदर्शक महाशय ! ध्यान देबाक विषय थिक जे आइ पृथ्वी भरि में जँ केवल विद्योपार्जित, विशेषतः संस्कृत विद्योपार्जित राज ताकब तँ दरभंगा राज छाड़ि आन नहिँ भेटत। म० म० महाराज महेश ठाकुर सँ लै विद्यमान श्रीमान् धरि संस्कृत विद्या क प्राचुर्य, मर्मज्ञता, सदाचारिता इत्यादि अन्यत्र कतहु नहिँ, ई सब रहलहु उत्तर संस्कृतज्ञ विद्वान तथा पढ़निहार क की स्थिति अछि ? उत्तम-उत्तम तीर्थ (टाइटिल) आचार्य परीक्षोतीर्ण परमाल्प वेतन पावथि ? पाठशाला क नियम नहिँ, पण्डितक तादृश वास-स्थान कतहु नहिँ, इत्यादि अनेक दुःखद वार्त्ता कैँ नुकाए एतबै लिखैत छी जे राज क जानवर (हाथी, घोड़ा, बड़द····) भेला सँ सुख, किन्तु अल्प वेतन भोक्ता राज पण्डित होएब परम दुःख, एहि विषय पर कनेको ध्यान नहिँ देल जाइछ, हमरा निश्चय होइछ जे एकर हेतु केवल श्रीमान् क एतेक विद्वत्ता मात्रे कहब, और की ? ततेक टा मार्मिक पण्डित श्रीमान् छथि जे हुनका समक्ष में "सब धन बाइस पसेरी" तखन तँ अल्प वेतनो दुर्लभे किन्तु परिवार पालन अवश्य। भला, श्रीमान् क अनुकूल पाण्डित्य प्रायः कतहु भेटत, से जनिका छन्हि ओहो दोसर श्रीमाने भेल अपेक्षा रहित जँ होथि तँ संस्कृत विद्याक उत्साह में न्यूनता अवश्य तथाऽपि जे भै रहल अछि से भाग्य थिक। एहि प्रसंग इहो लिखव आवश्यके जे जतेक परिश्रम कै हमर मैथिल-वन्धु शास्त्रोपार्जन करैत छथि, तकर थोड़ेको परिशीलन वहुधा नहिँ रहैत छन्हि, आइ काल्हि शुकवत् अभ्यास कै पिजड़ा में रहि "राम राम" कहि निर्वाह होएब कठिन अतएव "हराइ मिसरक भेँड़ि, जैह देबह सैह लेब" केँ चरितार्थ कै वस्तुतः पण्डिते स्वयं परमापराधी थिकाह।

"कृतकृत्यो विधिर्मन्ये न वर्धयति तस्य ताम्"

एहि नीतिक अनुसार जँ भाग्य उपालभ्य तँ श्रीमानो। जे हो, एतबा जीह दाबि बजैत छी जे श्रीमान् क "जीवनी" में "झंझारपुर संस्कृत राज पाठशाला" कोनो निकृष्ट जन क कारण पाबि ३-४ मास सँ बन्द अछि! ओहि प्रान्त में संस्कृत विद्या क जीवन वैह पाठशाला, किन्तु "लोहना-महाराज्ञी-महेश्वरलता विद्यापीठ" क संस्थापन सँ सम्प्रति समस्त मिथिलास्थ जनता क उपकारक संभावना जानि कृपासागर में अपन क्षुद्र दुःख कैं फेंकि आशा करैत छी जे शिक्षा विंभागक दरभंगा राज डाइरेक्टर, इन्सपेक्टरादिहु क नियम भै जाए, यादृश अनुग्रह।

राजक अधिकार में १०टा हिंदी "लोअर प्राइमरी, अपर प्राइमरी" पाठशाला अछि। से दिन कहिआ आओत जे ताहि-ताहि पाठशाला सबहि में "मैथिली" मातृभाषा क शिक्षा सुनब।

कलकत्ता "युनिवर्सिटी" में २½ लाख टाका देल गेल अछि, जाहि सँ पुस्तकालय क हेतु एक उत्तम कोठा बनि "दरभंगा हाउस" नाम सँ प्रसिद्ध अछि। "भारत विश्व विद्यालय" क हेतु जतेक परिश्रम ओ व्यय श्रीमान् मिथिलेश महाराज बहादुर कैलन्हि अछि से "स्मर्तुं न शक्यः किमुताधि-कर्तुम्" सन उल्लेख्य ओ अनिर्वचनीय अछि। समस्त युक्त प्रदेश, राजपुताना, बम्बै, बड़ौधा, काश्मीर इत्यादि राजधानी में घुमि घुमि अपन अमृतमय सुवचन सँ "भारत विश्वविद्यालय" क मूल कें सिँचि स्वयं ५ लक्ष टाका देलन्हि अछि। "यवन विश्वविद्यालहुँ" में २ लक्ष, जकर फल एखन अलक्ष्ये बुझना जाइछ। सर्वदा हमर श्रीमान् भारतीय यवन (हिन्नू मुसलमान) क विरोधाग्नि कैं अपन आर्द्र विचार द्वारा मिझबितहि अबैत छथि।

विहार पंचायत-सभाक सभापति छथि। व्यर्थ अभियोग (कचहरी क लड़ाइ) नहिं कै धर्मपूर्वक अपनहि में पंचाइत कै निपटाए ली, तकर उद्योग कै रहल छथि।

सन् १९११ ईसवी मे श्री ५ मान् सम्राट् ५म जार्ज भारतवर्ष मध्य आबि जखन दिल्ली दरबार कैने छलाह, ताहि अवसर में सनातन धर्मावलंवी भारतीय महंथ इत्यादि 'प्रसेशन्' (जुलुस) बहरायल छल, तकर प्रधान यैह हमर श्रीमान् छलाह। गोवर्धन मठ क श्रीमान् स्वामी शंकराचार्य,

Scanned by CamScanner

महामहोपाध्यायादि, मौलाना पर्यन्त कें उक्त श्री ५ मान् सम्राट् क समीप पहुँचैबा क यत्न तथा हुनका सबहिं कें सस्मित वार्त्तालाप करैबा क अग्रणी येंह भेल छलाह, उचिते, कारण-राजभक्त हिनकासन येहटा छथि। स्वयं 'वाइ सराय' (बड़ा लाट) विहार ओ उड़ैसा कें बंगाल सँ पृथक् कै तकर "लेफ्टनेण्ट गर्वनर" क 'ऐक्ज्क्यूटिव् कौन्सिल" क मेम्वर हिनकहि बनौलन्हि। सन् १९१४ ईसवी में जखन हरिद्वार श्री १०८ गंगाजी क नहरक विषय उपस्थित छल, जाहि विषय में हरिद्वार सँ पूर्वीय लोक (यथार्थ जाह्नवीक जल नहिं पाबि) विरोध उपस्थित कैने छल तखन युक्त प्रदेशक लाट साहेब हिनकहि विशेषतः बजौने छलाह, हिनकहि विचार सँ ताहि समय में पूर्ववत् धारा प्रवाह राखल गेल ओ सब लोक प्रसन्न भेल। जाहि दिन सँ राजसिंहासनारूढ़ भेलाह, केवल विद्योन्नति में ५० लाख टाका व्यय कैलन्हि अछि। अतिरिक्त व्यय क परिगणन निम्नलिखितानुसार जानैक थिक—

पेनशन् ४५००० टाका, डोनेशन १८००००, दीनरक्षा ५००००, चन्दा ४००००, देव मन्दिर ३५००००, जनसाधारणोपकार ३००००, योग= ६९५०००। पुनि अभागलि भुतही बुद्धि भोतिआइलि !!! उक्त व्ययक क विषय में वहुत किछु वक्तव्य, किन्तु समयक असामंजस्यप्रयुक्त धार्ष्ट्य कें रोकि थोड़ेक लिखैत छी—

केवल विद्योन्नति में ५० लाख ? किन्तु एहि सँ मैथिल कतेक गोटै शिक्षित भेल छथि ? प्रायः ५० लाखक संचयहि सँ "भारतीय-विश्वविद्यालय" क उद्घाटन होएबा लै अछि, जाहि सँ समस्त 'भारत' क लोकक शिक्षा होएत, एम्हर मैथिल जनता क शिक्षाक विषय में ध्यान देबाक जे अद्यावधि दशो गोटै एम्० ए० वा ५० गोटै "वी० ए०" होएव ? वा जे क्यौ छथिओ ताहि मध्य कतेक गोटै कतेक साहय्य पाबि कृतकार्य भेल अछि........? एतबा अवश्य हम कहब जे मिथिला में संस्कृत विद्याक शिक्षा प्राचीन समयहि सँ चल अबैत अछि जे एखनहु धरि अछिए।

हा ! लिखैत हृदय विदीर्ण होइछ, एही मिथिलामध्य अयाची (भवनाथ) मिश्र केहन विद्वान् छलाह तथा हुनक द्वारा कतेक विद्याक प्रचार भेल होएत ? ततःपर बहुधा मिथिला में ई नियम छल जे जाहि ग्राम में कृत-विद्य जन होइत छलाह हुनक संग समाज सहर्ष चौपाड़ि क घर बान्हि विद्यार्थी

Scanned by CamScanner

गणक भोजनक भार उठाए लैत छलथिन्हि। एहि क्रम में संस्कृत शिक्षा मिथिला में होइत छल तथा नाम लै गोटेक आवहु कतहु हो।

कोनहु समय में 'हरिपुर' क योग्य समृद्ध बा० ववुरैया झा, आदिनाथ झा अपनहि ओतै वैदिक नैयायिक, ज्यौतिषी ओ वैयाकरण कैं मासिक वृत्ति दै तथा छात्रगण कैं भोजन दै चौपाड़ि रखने छलाह, ताहि स्थान सँ उपकृत सम्प्रति अनेक प्रसिद्ध पण्डित लोकनि विद्यमान छथि। दरभंगा राज्यहु सँ रहिका 'सरकल' में चौपाड़ि छल, वहुत पण्डित लोकनि दरभंगहु में रहैत छलाह। अतएव ओतहु सँ कतेक गोटै उपकृत होइत रहथि। ताहि समय में काशी ओ कलकत्ता एहि दूइ स्थान में "गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज" छल जे एखनहु धरि अछिए। हमर मिथिला "बंगाल गवर्नमेण्ट"क अधिकार में शासिता होइत छलिहि। वंगदेशीय समयानुसार पाश्चात्य विद्या सिखि राजकाज में नियत होवै लगलाह, "चारैः पश्यन्ति राजानः" अतएव बंगाली लोकनि 'गवर्नमेण्ट'क आँखि बनि गेलाह, जे आँखि क्रमिक संस्कृत विद्यहु दिशि पड़ल। ताहि समय में वड़े भाग्यशाली साधारण योग्यतापन्न म० म० महेश न्यायरत्न वंग देशस्थ नवद्वीप प्रभृतिक विद्वान् (जे सबहि घर बैसल पढ़ावथि डेढ़ सै, दूइ सै टाका मासिक वृति पावथि, एवंक्रमैं) में वृत्ति दूइ वा तीनि लक्ष टाका बटवौलन्हि। कतेक दिन बितला पर 'गवर्नमेण्ट' हि सँ अन्वेषण भेल (कोना नहिँ हो, जतैक रीति, नीति, आचार, विचार, भाषा, वेष पृथक्) जे बंगाल हाता भरि मध्य संस्कृत शिक्षा विभाग में २-३ लाखक व्यय सँ संस्कृत शिक्षक उपकृत होथि अतएव मिथिला देशहु में संस्कृत शिक्षक गण कें किऐक नहिँ देल जाइत छन्हि? ई इंगित होइत झटिति उक्त म० म० महेश न्यायरत्न (जे कलकत्ता संस्कृत-कालेजक 'प्रिन्सिपल' छलाह) मिथिला में मिथिला यात्रा क व्याज सँ आबि मधुवनी ऐलाह, ओतै सँ पिलखवाड़ न्यायपंचानन पण्डित ववुजन झाक द्वार पर अतिथि भेलाह, वड़े आतिथ्य सत्कार हुनक भेल। ताहि समय में हुनका ओतै हाथी छल, घरो आङनक आडम्बर उत्तम, नेपाल राज्य लब्ध 'मोहतरी' क आय पर्याप्त, अतएव अन्न, वस्त्रादिक वैकल्य कलेशो नहिँ रहन्हि, श्री १०८ सरस्वती देवी क तँ निवास स्थाने छलन्हि, प्रायः ताही समय में हुनक ज्येष्ठ बालक म० म० पण्डित दुःखमोचन (प्रसिद्ध ववुआ) झा नवद्वीपक प्रसिद्ध पण्डित केदारनाथ भट्टाचार्य कें ६ मासक हेतु अपना ओतै राखि न्यायक विशेष

व्यवसायो करैत छलाह। बस, यैह देखि कृतकृत्य म० म० न्यायरत्नजी समस्त मिथिलाक पण्डित मण्डली कैं तादृशे बुझि 'रिपोर्ट' कैदेल जे मिथिला में सब शिक्षक पण्डित राजा सबहि सँ सत्कृत भै सुखी छथि, हुनका सबहि काँ 'गवर्नमेण्ट-साहाय्य' क आवश्यकता नहिँ।

एम्हर मिथिला क स्थिति दिनानुदिन बिगड़ै लागल, कारण 'गवर्नमेण्ट-क आंखि पछिमा कायस्थ ओ 'बंगाली'। ई दुनू जाति महक अविवेकी लोक कौआ, जोंक जकाँ मिथिला क मांस रक्त कैं सोखै लागल !!! सम्प्रति मिथिला कें कंकाल (Skeleton) जँ कही तँ अत्युक्ति नहिँ, जे किछु अस्थि पंजर अवशिष्ट अछि, ताहू लै जरा-सन्ध पक्षपाती मैथिल विरोधी सतुखौका सब मरिचाइ बनबा लै सतत उद्यत रहैछ, किन्तु एहनहु दुरवस्था में जखन राक्षसाकृति ओ सब मुँह में सातु ठूसि मिथिला क पंजर पर मरिचाइ जानि 'आँइ' करैछ !!! तखन धन्य श्री ५मान् मिथिलेश महाराज बहादुर क कनडेरी जे एखनधरि बाँचल जाइछ। हमर मैथिल भाइ लोकनि कैं संस्कृत विद्या पर्याप्त, आचार, व्यवहार, ई सब बड़ सुन्दर किन्तु कतहु-कतहु तँ आलस्य ओ ककरहु लोभ-लोल नमरल, अतएव आइ धरि मिथिला काँहि काँहि करैत सबहि देशक मुँह तकैत छथि। जँ आइ पचीसे सहस्र टाका वर्ष भरि में संस्कृत शिक्षा दिशि लगाओल जाइत तँ ई लिखबा क परिश्रम ओ तकर प्रतिफल भागी व्यर्थे अपराधी हम नहिँ होइतहुँ। एखन तँ हम एतबै लिखल अछि, जँ किछु दिन धरि जीवैत रहलहुँ तँ प्रत्येक व्यय क दिशि स्पष्ट लेखनी बढ़ाय सबहि कैं विदित कराएब।

सन् १९१५ ई० माघ शुक्ल तृतीया सोम दिन अत्यन्त समारोह तथा उत्साह सँ श्रीमान् महाराज कुमार युगलक उपनयन संपादित भेल। मिथिला देश सँ अन्य प्रान्तहु क श्री ५ मान् महाराज तथा महामहोपाध्यायगण निमन्त्रित भेल छलाह, ताहि सबहि मध्य जे आएल छलाह हुनका लोकनि क आदर सत्कार उत्तम भेल छलन्हि। पथ प्रदर्शक महोदय ! क्षमा कैल जाए।

उक्त उपनयन में विशेष स्मरणीय —(१) श्रीमान् मिथिलेश क ओतै ई नियम छलन्हि जे आचार्य श्रोत्रिय खड़ौरे, जे प्रायः सर्वसीमा ग्राम में बसैत छथि, वेह लोकनि होइत छलाह, जनिका सबहि कैं गुरुदक्षिणा में किछु रक्षार्थ भूमि तथा द्रव्य देल जाइत छलन्हि किन्तु उक्त शुभोपनयन में से नहि भेल, कारण "स्वपितृभ्यः पिता दद्यात् सुतसंस्कारकर्मणि" इत्यादि

Scanned by CamScanner

वचन सँ स्वयं पुत्र क ब्राह्मण्य संस्कार करब परमावश्यक, अथ च प्राचीन महाराज सब राजसत्वेन कायक्लेश सँ अक्षम भै उक्त नियम कैने होथि से संभव, किन्तु विद्यमान श्री ५ मान् अत्यन्त कर्मठ, निरसल ओ सदा सात्विक भाव में लीन स्वयं सब संपादन कैलन्हि, ततःपर दरभंगा महाराजाचार्य वंशजहु महोदय कैं द्रव्यादि दै प्रसन्ने कैलन्हि ।

(२) कुटुम्ब श्रोतिय वर्ग में निमन्त्रण नहिँ देल गेल, तकर कारण श्रोत्रिय दल क परस्पर विरोधे, मुख्य-मुख्य श्लाघ्य जे छलाह ताहि में क्यौ 'लेआवन' (श्रोत्रिय मंडल क.संकेत) सँ तथा क्यौ पुर्जे तुर्जा पर आएले छलाह। औ लोकनि ! श्री५मान् क दरबार में शुभ कार्य उपस्थित भेला सँ और जे होइछ से तँ होइतहि अछि जे बाबू लोकनि गूआ (गुवाकु, सुपारी) गोटा लेबैक काल बिनु प्रवल सिपाहिएँ नहिँ उत्तम रूपैं होवै दैत छथिन्ह। ई तँ भला दूरि जैबाक वस्तु नहिँ किन्तु भोज्य भेला सँ जे व्यर्थ सिद्ध अन्नक दुर्दशा होइत से नहि भेला सँ बाँचल ? कल्याणे ।

(३) पण्डित मण्डली में जे धौत परीक्षोतीर्ण छलाह हुनका सबहि कैं राज दरवारक नियमानुसार विदाइ देल गेलन्हि। अपन देशीय पण्डित जी लोकनि क आदर कैं अन्य देशीय 'लेकचरी' ककवा वाला महामहोपद्धा सब पनपिआइअहि में कचरल क। एम्हर जेहने कलजोड़िआ आकार तेहने बिदाइ एतबो बहुत। कतेक गोटै तँ तेहन जे बिड़ारिअहु सँ अधिक लुह-लुह करैत अपनहि संगैं आनहु कतेक कैं तादृशे बनाए पाण्डित्य पर कालिमा लगबैत छथि। किन्तु ई स्थिति पुरान पापीअहि क दल में बहुधा। बहुत कालक धीपल तब सन हृदय में कतवो टपकन तँ छन्ने !!! भै डरि जाइत छन्हि ।

(४) राज सँ 'सर्कल' द्वारा अनेक खाद्य, तरकारी, दही, घृत, तेल, छागर इत्यादि वस्तु प्रजा कैं हूथि कूहि अबैतछि, एतै आवि जे सड़ैत गलैत अछि से तँ सहजहिँ, जे प्रायः 'महामारी' अहु कैं बजबैत अछि। घास पानि वेत्रक दीन छागर सुखाए सुखाए ककरो काज क नाहेँ। एकर नाम की ? सुप्रवन्ध !!!

(५) ब्रह्मचर्य क प्रभाव समस्त भारत में प्रसिद्ध अछि। एकमात्र ब्रह्मचर्य एहन थिक जाहि बलैं मनुष्य सब किछु कै सकैछ। ब्रह्मचर्यहिक बलैं भीष्माचार्य मरण पर्यन्त कैं करकलित कैने छलाह, ब्रह्मचर्यहिक बलैं मिथिलाधीश महाराज जनक विदेह कहाए जीवन्मुक्त कहौलन्हि इत्यादि,

Scanned by CamScanner

जकर जे किछु विद्या, धन, वल, वुद्धि इत्यादिक सुयशोगान कतहु होइछ तँ ब्रह्मचर्यकहिक बल क फल थिक। साधारणतः ई वुझैक थिक जे सात्विक भाव में रहि इन्द्रिय संयम करब मनुष्य कैं परमावश्यक, तत्रापि पैघ लोक कैं तँ आवश्यकात्यावश्यक। कारण "कटगैनी गुलभण्टा" क गाछ कैं कटने छँटने कोनो फलाफल में विशेषताजन्य हानि लाभ क ततेक शंका नहिँ, जतेक सुमधुर पैघ फड़वाला गाछ कैं कटने हानि तथा सुरक्षित रखने सुफलसँ सद्योलाभ, अतएव परम विद्वान् विद्यमान श्री ५ मान् उक्त समय में केवल ८, ६ वर्ष वयस्क क श्रीमान महाराज कुमार युगल कैं ब्रह्मचर्य में भर्ती कै देल। ओहो (जे लगले महातपस्या कैं संवरण कै श्रीमान् महाराज कुमार भै विदित होइत छथि) प्रभाव पुंज द्वय अपन तपस्या करै लगलाह। राज-नगर में ब्रह्मचर्याश्रम वनल। ब्रह्मचारी लोकनि रहै लगलाह। वस्तुतः ब्रह्मचारि वर्ग क शिक्षा दीक्षा वहुत उत्तम अछि। ब्रह्मचारि मण्डल क मुख मण्डलावलोकन सँ सर्वसाधारण कैं निश्चय भै सकैछ जे अवश्य ई लोकनि तेजस्वी थिकाह। समय पर सन्ध्योपासन, हवन, वेदाध्ययन पूर्वक संस्कृत विद्याभ्यास, संस्कृत में परस्पर वार्त्तालाप इत्यादि देखला सँ वस्तुतः प्राचीन काल क तपस्विताक स्मरण कै चकचोन्ही लगैछ। एहि ब्रह्मचारी मण्डल क शिक्षको लोकनि अत्यन्त सदाचारी ओ सुब्राह्मण छथि। यदि एहि क्रम मैं मिथिला में अनेक स्थान मध्य ब्रह्मचर्याश्रम होइत तँ अवश्य शीघ्र मिथिलाक कायापलट भै जाइत।

गतोद्गार में ब्रह्मचारिगण क प्रसंग आएल अछि, ओ ब्रह्मचारिगण प्रातः ओ संध्याकाल में सन्ध्या करैत छथि, समिधा अनैत छथि, भूमि पर शयन करैत छथि। वेदाध्ययन सब कैं आवश्यक, ततःपर थोड़ेक व्याकरण। संस्कृत में हुनक परस्पर वार्त्तालाप सुश्रव होइत छन्हि। इत्यादि वस्तुतः अनिर्वचनीय अछि, बिनु देखने सुनने किछु नहिँ। ई ब्रह्मचर्याश्रम राजनगर में अनुपम अछि। मैथिल बन्धुगण कैं उचित थिकन्हि जे यदि अपन वालक कें समुचित प्रबन्ध कै पढ़ाएव अपना वुतैं नहिँ होइन्हि तँ उपनयन संस्का-रोत्तर अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम में हुनका नियत करावथि।

उक्त श्रीमान् अपन पूर्वजक चिता पर स्मरणार्थ मन्दिर वनवौलन्हि अछि। स्वर्गवासी महाराज महेश्वर सिंह तथा स्वज्येष्ठ भ्राता महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समाधि पर मन्दिर वनि गेल। अपन पितामह महाराज रुद्रसिंह क चिता पर मन्दिर वनि रहल अछि।

Scanned by CamScanner

राजनगर में संगमर्मर-प्रस्तरक एतेक टा विशाल मन्दिर बनल अछि जे प्रायः भारतवर्ष मध्य कतहु नहिं होएत। एहि में श्री १०८ मती आद्या देवी क विशाल मूर्ति स्थापित भै गेलि छथि। मन्दिर समतल भूमि सँ एक महल उपर अछि। नीचा विचित्र एकान्त जप तपस्या करैक हेतु स्थान बनल अछि। मन्दिरक सटल जल पूर्ण स्वच्छ तड़ाग, जकर उत्तर ओ पश्चिम घाट पक्का बन्हल छैक, इत्यादि मनोहर स्थान भेल अछि।

सन् १९१५ ई० क ता० ३ जून मध्य श्री ५ मान् सम्राट् क जन्म दिनोत्सव में हमर श्रीमान् काँ जी० सी० आइ० ई० पदवी सम्राट सँ भेटलन्हि।

सब समाधि-मन्दिर में देव देवी क स्थापना भै गेल। आद्या देवी मन्दिर सँ किछ दूर दक्षिण ड्योढ़ी क अग्निकोण में विचित्र विशाल शिव मन्दिरो बनि श्री १०८ आशुतोष शिवलिंग सँ विभूषित भै गेल। एहू मन्दिर क चतुर्दिक्षु विचित्र तपस्या क स्थान सब बनल अछि।

सन् १९१४ ई० में श्रीमान् श्री १०८ जगन्नाथपुरी गेल छलाह, तत्रत्य श्री शंकराचार्य ओ वैष्णव सम्प्रदायक प्रधान गण हमर श्रीमान् क धर्माचरण देखि 'धर्मरत्नाकर' कहि आदर कैलथिन्ह।

लाहौर 'सनातन धर्म कॉलेज'क हेतु ५००००/- टाका, दिल्लीक 'हिन्दू कॉलेज'क हेतु ५०००/- टाका ओ मुजफ्फरपुर स्कूल क हेतु १०००/- टाका देलन्हि अछि।

इत्यादि विदेश में साधारण लोकोपकारार्थ दान क डंका बाजि रहल अछि। किन्तु अभागलि हमर मिथिला कैं ई सौभाग्य कहिया होएतन्हि जे मैथिल जनता समाजोपकारार्थ पर्याप्त वितीर्ण दान देखि-सुनि कृतकृत्य घर बैसल यशोगान करैत परमोपकृत होएत। हमरा ई सौभाग्य नहि जे एहि गुणोदधि क लहरि ली किन्तु धन्य पं० श्री चेतनाथ झा श्रोत्रिय, जनिक विरचित लघु जीवनी क बल पाबि अति क्षुद्र हमहुँ यथा बुद्धि लिखि पूर्णरूप सँ लिखबाक प्रत्याशी बनल छी, शुभमिति।

—श्री मुरलीधर झा

---

१. उद्गार १२६ सँ आरम्भ भऽ उद्गार १३३ मे समाप्त।

पश्चिमोत्तर यात्रा वा काश्मीर यात्रा

म० म० पं० श्री मुरलीधर झा

भारत रत्न भूमि भूगोलक ताहि विषय की लेखू।
देखल सुनल बुझल सबहिक अछि मणि कश्मीरहि देखू॥
धन्य देश, ततवासी धन जन नरपति धन्य प्रभावी।
परम शिष्ट ओ देवभक्त अति मंगल हुनक मनावी॥

जा धरि मनुष्य शिक्षा पाबि व्यावहारिक आशा में लिप्त भै फँसल रहैत अछि ता कोम्हरहु सुखपूर्वक मुख देत तकर अवकाश नहिँ भेटैत छैक, भाग्यानुसार किछु होमहु लगैत छैक तँ तकर यथार्थ विनोद होएब परम असंभवे बुझैक थिक। जहिँ-जहिँ कुटुम्ब सुख सँ मन विरत होबै लगैत छैक तहिँ-तहिँ किछु बोझ हल्लुक भेला सँ जेना हो तहिना धाड़ सोझ साझ करैक हेतु चारू कात तकैत अछि, एहि अवसर में जँ क्यौ थोड़ेक कालक हेतु बोझ उठाए लैत छैक तँ ओकर चित्त प्रसन्न भै प्राकृतिक सृष्टि दिशि पड़ि जाइछ तथा से जँ ओकरा रोचक बुझि पड़ैक तँ किछु सुखानुभव करवाक अवसर भेटैत छैक। सुखानुभव होएब पुण्यक फल थिक, पुण्य की कैने भेल से गुप्त राखल अछि तथा होएत ई विषय सहज नहिँ, विशेषत: कलिकालक कराल कवलन क कुहरनि। अस्तु सर्वथा पुण्यक अभाव प्राय: नहिँ कहि सकैत छी, येह सव कारण थिक जे हमहु एहि ग्रीष्मावकाश में श्रीमान् कश्मीर-नरेश क अकृत्रिम अनुकम्पा सँ आहूत भै वैशाखी पूर्णिमा कै विदा भै काशी ऐलहु, औते सँ ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी सोम दिन प्रात: १० बजैत १ शूद्र तथा १ पाचक कैं संग लै ओ० आर० सँ हरिद्वार क टिकट कटाय विदा भेलहु, तकर प्रात:काल ६-७ बजैत हरिद्वार पहुँचलहु। 'गरीब दीन' पण्डा क द्वारा श्रीमती गंगाजी क तट पर डेरा दै स्नानादि करैक हेतु विदा भेलहु। आहाँ! सकल कलुष-संहारिणी हिमालय शिरोमाला विहारिणी अनवरत हर हर शब्द कारिणी जाह्नवीक दर्शन कै जे आनन्द भेल से कलमक नोक पर पिछड़ि जाइछ, अहा! पूर्व दिन में भगवान् श्री सूर्यनारायणं क ग्रीष्म परिताप कतै आइ एहन शीतल स्वच्छ गंगाजलक दर्शन स्पर्श, पर्वतमाला कैं तोड़ि फोड़ि हर हर तरंग शब्द करैत, तट अनेक धन सम्पन्न आस्तिक श्रीमान् सबहिक

Scanned by CamScanner

विविध भवनक शोभा-बन्हावल समतल गंगा तट पर अनेक साधु संन्यासी उदासी लोकक संचार, नाना देश समागत अत्यन्त लावण्यमयी गौरवर्णा सुन्दरी वनिता सबहिक मनोविहार, भोजनक सब सामग्री दिव्य स्थान स्थान में पसारल, अन्यान्यो वस्तुजात क हेतु पर्वतहि पर उत्तम बाजार, नाना रंग विरंगक दुग्धवती गाय सब टहलैत, अनेक काष्ठ कें एक ठाम मचान जकाँ बान्हि उपर में २-३ गोटे बैसल प्रवाह में भसिआयल चल जाइत मनोहर शोभा देखि मुग्ध भै अपन पाप समूह कैं चिचिअबैत प्रवाह सँ मस्तक पवित्र कै श्रीमती गंगा माताक कोरा में जैबाक हेतु प्रविष्ट भेलहु तँ परन्तु उक्त जगज्जननी कैं पापक आचमनादि सँ अवकाश कतै, तैं अपन तरल तरंग सँ तेना टारि दैत छलिहि जे मुहँठा भै थोड़ेक दूर जाए ठाढ़ भै जाइत छलहु, एना कोनहुना निमज्जनोन्मज्जन कै बाहर होइत शरीर हुल्लुक तेहन बुझि पड़ल जे वस्तुतः कतेक भार उतरि गेल हो। विविध प्राकृतिक शोभा देखैत सन्ध्या तर्पणादि कै डेरा पर ऐलहु, 'कलावन्नगतप्राणाः' अतएव पाकादि भेला पर क्षुधा देवी कैं शान्त कैल ता मध्याह्न भेल अतएव पुनः स्नान, कारण ताहिकाल में किछु गरमी होइत छैक, थोड़ेक काल विश्राम कै गंगातट पर टहलै लगलहु, कतेक स्थान में मकानक तल सँ गंगाजी बहि रहल छथि, बहुतो दूर किनारहि किनार गेला पर एक मन्दिर में श्रीमती गंगाजीक दिव्य मूर्ति तथा अन्यान्य देवहुक मूर्ति देखल, मध्य में एक स्थान बान्हल, दुनू भाग सँ धारा बहैत, ततःपर दृष्टि देला सँ बुझना गेल किछु जंगल जकाँ तकरो दुनू भाग सँ धारा, क्यौ तत्रत्य परिचित लोक नहिं जकरा पुछि पुछि सब स्थान क निर्देश करितहु, गंगाजी क दोसर पार में बिनु बिजुली क समाचार बोधक स्तम्भ टूइटा, थोड़ेक मकान सरकारी ओ एकाधटा बनि ओ रहल छलैक, अतःपर पर्वतमाला, हृषीकेश स्थान, लक्ष्मण झूला........ किन्तु ई सब लोक क मुहैं सुनल, कतेको पुण्यात्मा यात्री सब नाव पर चढ़ि जाइत छल, मन त हमरो उड़ैत छल परन्तु भै नहिं सकल, "बुड़िधकहा क खेती अगिला साल" जकाँ हमहु संकल्प कैल जे जीवैत रहलहु तँ सपरिवार आबि कृतार्थ होएब, गाड़ी पर कच्च बच्च लै दूर देश में तीर्थयात्रा करैत बड़ क्लेश होइत छैक, विशेषतः हमरा देश में फुसिए लज्जा कै पश्चात् तेहन आतुरता जनाएब जे सबहि क मन क्षुब्ध! तखन देवता पितर क भक्तिओ भासिआए जाइत छैक, गाड़ी पर सावधानता ओ स्फूर्ति क काज अधिक पड़ैत छैक, हमरा देश में कोना होएतैक, बहुतो स्त्रीगण जे चतुरा कहबैत

Scanned by CamScanner

छथि से गीतगोविन्द क गोटैक पद जनैत छथि, यथा—"धीरसमीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली" अरे ! सब ठाम से नहिं, परन्तु देश देखवा क कौतुक बड़, जेना सिमरिया धारे हो, वड़का वड़का घोघतान लोक कें मालगाड़ी में ठूसि सिमरिता में "उघाड़ि मह करिष्ये", एक दिशि गंगामाइ क हिलकोर, दोसर दिशि "रावन करै किलोल" जकाँ झडुल्ला झा एड़ी अलगाए कान में आङ्गुर दै मारैत छथि टाहि—ऐ ! वावूदत्त क माए आवैत छी ऐ....हू....। आगे मा ! गै हमर नेनिया कतै गेलि गैं दैया गे दैया इत्यादि घोल घोँघाउजि उठैत रहैत अछि । आन देश में कतहु एहि .रूप क कोलाहल नहि देखना जाइछ ।

सन्ध्या होइत पुन: स्नान सन्ध्या कै टहलै लगलहुँ, अनेक देशक कतेको लोक कैं टहलैत, घुमैत पुराण बँचैत, वक्तृक्ता दैत, सूतल, बैसल, जप करैत देखि विचित्रे चित्र देखल, विशेषत: बहुतो लोक एक पैसाक दुइ पैसाक....... इत्यादि उत्तम उत्तम गुलाब क फूल दोना में आड़ती देखैत गंगाजी कैं चढ़वैत छल जे तरंग में अद्भुत देखाए चित्त कैं मोहि लैत छल। स्थिर चित्त भै विचार कैला सँ बुझि पड़ैत छल जे जँ रेलगाड़ी नहिं भेल रहैत तँ हमर सदृश अधमाधम कैं एहन सुदृश्य देखवा क सौभाग्य कथमपि नहिं होइत परन्तु संगहि इहो विषय बुझबाक थिक जे वस्तुत: पवित्र स्थान सवहिक यथार्थ महिमा कैं प्राकृतिक शोभा कैं सकल साधारण लोकक समूह नष्ट कै देलक, ईश्वर क निर्माण पर अनभिज्ञ कारीगर क चित्र केहन जेना नकपिचि गोसाउनिक गोटी सँ भरल, ओठ विदुड़ल, गर्दनि में जलधरी सहित महादेवो तैओ माथ भरि सिन्दूर, टिकुली, नकगुन्नी ओ कंठ में काँट पर सँ सूतिओ, परन्तु की हो, जँ मिन्युसिपैलेटी वा सरकार क दिशि सँ घाट वाटक क प्रबन्ध तथा श्रीमान् धनसम्पन्न लोक सँ धर्मशालादि क निर्माण नहिँ रहैक त यात्री कैं विश्रमादि क कोन उपाय होएतैक, गाड़ी क ट्रेन क ट्रेन लोक भरल अबैत जाइत रहैत अछि, मनोरथ सब कैं होइत छैक, नाक मुँह जे रहैं, माइ बापक स्नेहें सब यथार्थे।

एवं दोसर दिन में स्नान भोजनादि कै दुइ बजैत स्टेशन पर आबि जम्बू जैवाक हेतु वजीरावाद क टिकट कटाए विदा भेलहुँ, नाना अपरिचिते वड़े वड़े पैंघ स्टेशन सब देखैत प्रातःकाल दश वजैत लाहौर पहुँचलहुँ, वड़े पैंघ स्टेशन, अनेक गाड़ी, टाङ्गा, मोटर, लॉरी, पीह पाह करैत देखि पड़ल, स्टेशन

Scanned by CamScanner

क प्रबन्ध अद्भुते, एहन कुलीक मजदुरी प्रायः कतहु होएतैक, स्टेशन सँ बाहर होएबामे परम कठिनता, मोसाफिर खाना बहुतो दूर पर, यद्यपि धर्मशालो समीप में छैक किन्तु अपरिचित तथा भ्रान्त लोक कैं बुद्धि भोतिया जाइत छैक, कुली बेचारा मोसाफिरखाना में मोटा चोटा पटकि किनार भै जाइछ, यात्री हमर सन बौआथु, एहन जानबर कैं के पूछै, एहन एहन स्थान में सचढ़ अंग्रेजी वाला क काज छैक, से जँ थोड़ेक पढ़बो कैलहुँ तँ संस्कृतहि क अनवरत पठन पाठनादि धो पोछि गड़ूल पंडितजी बनाए किनार कैं फेंकलक। तखन की, चारू कात ताकी तँ यवनमय बुझना जाए। कोनहुना किछु कै घै पुनः कुली देवता वलैं गाड़ी पर वैसलहुँ। लाहौर स्टेशन पर जेहन यात्री कैं घुमाए हुथौअलि ओहन कतहु नहिँ। पंजाब प्रान्तक सन समृद्ध भूमि प्रायः हमरा कतहु नहिँ बुझना जाइछ। सर्वत्र नहर लागल, गाए महीसि, घोड़ा, लोक इत्यादि सब पैघ पैघ ओ वलिष्ठ बुझना जाइत छल। स्टेशन सब पर अनेक फल, भक्ष्य, अभक्ष्य, पेय, अपेय सब प्रस्तुत। परन्तु उपरका अपन गुण गाबिए गेल छी, ताहि पर सँ मैथिली, तखन की, मुँह विधुऔने वैसल रहू, इण्टर में वैसू वा सेकेण्ड में, किन्तु भोगवा भोगनहिँ। एना होइत होइत वजीरावाद मध्याह्नोत्तर ३ बजैत पहुँचलहुँ। ताहि ठाम सँ एक लाइन पृथके छैक, ७-८ घंटा में गाड़ी जम्बू जाइत छैक। पुनः टिकट कटाए गाड़ी पर चढ़लहुँ, तखन जम्बू गेनिहार भद्रलोक सबहि सँ भेँट भेल, एक सारस्वत ब्राह्मण वैद्य भेटलाह, जे उत्तम विद्वान् छथि, हुनका सँ वार्त्तालाप भेला पर बहुत सहायता भेटल। एना होइत राति १० बजैत जम्बू पहुँचलहुँ।

हमर एक छात्र सारस्वत ब्राह्मण लाहौरक परीक्षोत्तीर्ण एतहि रहैत छथि, ओ श्रीमान् महाराज तथा श्रीमती महारानी साहेबाक कृपापात्र छथि, हुनकहि द्वारा एक बेरि उक्त श्रीमान् सँ साक्षात्करो भेल छल ओ एहू बेरि हुनकहि द्वारा पत्राचार, तार, रेजिस्ट्री सब आयल गेल छल। हम एतेक दूर देशक यात्रा कहिओ नहिँ कने छलहुँ, अपना में तादृश गुनै नहिँ देखि कोनो टा लोभो नहिँ होइत छल जे हम जाइ, तेँ गाम जाए एक प्राचीन पोखरि क जीर्णोद्धार में लागल छलहुँ, दिन भरि मुसहड़ क बीच में समय बितवैत परम उत्कंठित छलहुँ जे कोनहुना प्रतिज्ञा कैल काज पूर्ण कैं पश्चात् समय समय पर जतै जतै क निमन्त्रण राव अछि, शनैः शनैः पूर्ण करब। परन्तु अपन विचार विचारितहि रहलहुँ, अन्न जल खिचलक, जाहि सँ पुनः पत्र जम्बू सँ आएल जे पैघ लोकक आग्रह कें अपमानित नहिँ करैक थिक, अवश्य आबी

Scanned by CamScanner

इत्यादि तथा जखन बिदा होइ लगले तार पठाबी। की करू, हमहुँ उक्त दिन में बिदा त भेलहुँ किन्तु विचार कैल जे तार सार किछु नहिँ वा काशी सँ तार देबन्हि, ओतहु आतुरता में नहिँ दै भेल। ओतै सँ हरिद्वार ऐलहुँ। ओतै सँ रजिष्ट्री चिट्ठी दै तार लिखिओ नहिँ दै भेल। ताबता थोड़े क दरवार में हमर छात्र धूसलो गेलाह किन्तु जखन हम जम्बू पहुँचलहुँ, स्टेशन पर आएल छलाह, उतरबा क समय में ने वैह देखलन्हि ने हमहिँ, हम जखन चुंगी घर में जाँचक हेतु जाइत छलहुँ अकस्मात् टाङा पर जाइत ओ देखि उतरि सब विषय कहलन्हि। जाच भेल, कोनो नव पदार्थ वस्त्रादि नहिँ रहला सँ किछु नहिँ। गाड़ी कै बिदा भेलहुँ, सुख पूर्वक हुनकहि घर पर वास देल, परम पवित्र विनीत ई छात्र धनी नहिओं भै दरिद्र नहिँ वा हुनका तँ पूर्वहि सब खर्च भेटि गेल छलन्हि। जम्बू राजधानी पर्वत पर अछि, अत्युच्च पर्वत नहिँ, परन्तु तैँ विन्ध्याचल जकाँ सुतलो नहिँ। ई पर्वतमाला हिमालय क अंश प्रत्यंश थिक। एहि नगर में प्रवेश करैत एक तापती नाम्नी नदी अत्यन्त वेग सँ नाना प्रस्तर कें गुड़कबैत बहैत ओ दोसर 'चन्द्रभागा' सँ बहुत लघुवेश प्रवाहित एकटा नहरि, जकर जल अत्यन्त शीतल अछि। पर्वत पर नगर अछि, तावता चढ़बा मे किछु ककरहु बुझि नहिँ पड़इछ, उपर सँ समतल क भूमि वृक्षादि देखला सँ स्पष्ट उच्चता बुझि पड़इछ। बाजार उत्तम, पैघ पैघ साहु, महाजन, सब वस्तु भेटैत छैक, राज प्रवन्ध बहुत उत्तम, पुलिस पहरा, म्युनिसिपैलेटी इत्यादि सब, कतहु वयौ व्यर्थे हो हल्ला करैत नहिँ देखि पड़ैत छल। पवन संचार एतहु परन्तु काश्मीरे जकाँ नहिँ, साधारण लोक क मकान पैघ, छोट सवतरह क। मकान में प्रस्तर काष्ठक सम्बन्ध अधिक। आड़ ओत, आरि धूर, सर्वत्र पाथर पाथर, ओ पाथर जेना बड़का बड़का घोंटल नर्मदेश्वरे रहथि, पहाड़हु में वैह। कहाँ धरि कहू, पैखाना क लतमारा धरि ठेकल, पर्वतहु में वैह सब। जोड़ सब में ललका भुसनी माटि, जाहि में पानि पड़ैत लसि भै जाइत छैक। लाहौर की, शाहजहाँपुर अम्बाला सँ रेलवे लाइन क किनार किनार में जे घर सब देखना गेल से पहिने नहिँ बुझि पड़ल जे मनुष्य क रहवा क घर थिकैक, प्रत्युत माटिक ढेरि जेना बन्दूक क लक्ष्य क हेतु होइक, परन्तु लाहौर सँ पश्चिमोत्तर भेला पर निश्चय भेल जे ई घरे थिकैक, जम्बू गेला सँ प्रत्यक्षे। काठक पटरी सँ झाँपि उपर सँ कतहु खढ़ो वहुधा माँटि दै लेवि देल जाइत छैक, उतार जकाँ रहैत छैक वर्षा भेला सँ सब पानि खसि पड़ैछ, भीतर साफ बहुत उत्तम, बिजुली रोशनी सर्वत्र

Scanned by CamScanner

देखना गेल, ग्राम में ई रोशनी नहिं होइक किन्तु हरिद्वार, अम्बाला, लाहौर, जम्मू, रावल पिण्डी, काश्मीर सर्वत्र एकर पूर्ण प्रचार अछि, अतएव मटिया तेलक खर्च थोड़ तथा महगो। जम्मू मध्य प्रति चिमनी में दूइ आना म्युनिसिपैलेटी कें देवै पड़ैत छैक, चिमनी टुटला पर डेढ़ दूइ टाका चिमनी क दाम देवै पड़ैत छैक। लोक सर्वत्र दुःखी सुखी रहितहि अछि से एम्हरहु देखल, परन्तु निरुद्योगी, आलसी, घिम्मर इत्यादि गुणी लोक जेहन हमरा देश में सहसह करइछ तादृश एम्हर बहुत थोड़। जाहि में चिमनी (घंटी वा छागर क आँड़ सन) लागल रहैत छैक, ताहि में बड़ सूक्ष्म काँटा जकाँ बिजुलीक सम्बन्ध रहैत छैक, ओकरा छुइबा क नहिं थिक, ओ छुइला सँ प्राण जैवाक सम्भव, अपना देश क अगिलकंठ कें सावधान रहैक थिक। आब त ई रोशनी राजनगर, समस्तीपुरहु में प्रचलित भै गेल अछि। कलकत्ता, बम्बै, मैशूर, मद्रास, इत्यादि सर्वत्र पूर्ण एकर प्रचार अछि।

जम्मू में किछु दिन पूर्व प्लेग क उपद्रव होबै लगलैक तें श्रीमान् महाराज क खीमा 'सतवारी' स्टेशन् क समीप में छलन्हि। जम्मू सँ पूर्वहि ओ स्टेशन् छैक। बहुत पैघ चत्वर, ताहि में अनेक तम्बू, साम्याना बिजुली रोशनी चकमक करैत रातिअहि में देखल। काश्मीर यात्रा सँ पूर्वहि एक दिन ओतै बजावल गेलहुँ। घोड़ागाड़ी पर जाए पूजा क समय में उपस्थित भेलहुँ। कुशलादि वार्त्ता पूछि हमर अवत्य विद्यार्थी कें कहलथिन्ह जे हिनका सुख पूर्वक काश्मीर लै अबहुन्हि ओ श्रीमान् मिथिलेश क कुशलादि विस्तृत रूपे पुछलन्हि तथा श्री कालीजी क मन्दिर आकारादि पूछि ताही छात्र कें कहलथिन्ह जे हिनका जम्मू क देव मन्दिरादि देखाए दहुन्हि। अतएव ओतै सँ आबि विद्यमान श्री मानक पिता महाराज रणवीर सिंह स्थापित देवतादिक मन्दिर ओ ताहि मन्दिर सबहिक जे देवमूर्ति सव देखल से सव अद्भुते। नर्मदेश्वर एहन सुन्दर सुबृहस्य ओ पैघ देखि क्षुब्ध भै गेलहुँ। छोट छोट नर्मदेश्वर जे ई लोक पूजन में रखइछ। ओ अगणित जाल जकाँ विचित्र यन्त्र में जेना जोड़ल होथि। श्री १०८ गदाधरजी नारायणक विशाल मूर्ति क की वर्णन करू। लाइब्रेरी, म्युजिअम, कालेज, स्कूल, पाठशाला, बगीचा सब रंग विरंक फल फूल सँ भरल ओ आर्द्र, राजभवन क विशालता ओ दृढ़ता क वर्णन की कैल जाए, सर्वत्र पहरा, गारत वैसल ठाढ़ देखि कनेक कतहु डरो होइत छल, किन्तु हमर पथ प्रदर्शक दृढ़ तत्रत्ये छलाह। सर्वत्र घोड़ागाडी, मोटर जाइत अबैत छलैक। लगले बूझि पड़ैत छल पाताल लगले जेना आकाश में होइक। जैवा में बाधे नहिं हो, एहन मार्ग विचित्र बनल, की लिखल जाए।

एक दिन तापती में स्नान करै गेलहुँ, कारण एकादशी छलैक। धारक तट प्रस्तरमय। हमर भृत्य ओ ब्राह्मण कैं मन उमड़ि उठन्हि जे ई पाथर सब थोड़ेक लेने जैतहुँ। रंग विरंग क ढेरि लागल। दोसर भाग में देखि पड़ल जे पाथर कें फोड़ैत मजूरा सब लागल अछि जे मकान ओ सड़क में उपयुक्त होइछ। हमरा जनैत पाथरहु में जीवन शक्ति होइत छैक, जाहि में जीवन शक्ति नहिं रहैत छैक से भूमि संपर्क सें क्रमिक मृत्तिका जकां होइत होइत मृत्तिकामय होइछ, वृक्षादि जकां ताहू में जे ग्रन्थि सब होइछ से चिरकाल पर्यन्त नष्ट नहिं भै पड़ल रहइछ, वैह ग्रन्थि सब नदी जलवेग पाबि इतस्ततः चलितहु अछि, बहुत ओहिना पर्वताकार में पड़ल पड़ल रहइछ, एकर प्रत्यक्षता जम्बू नगर में हमरा भेल, सत्य विषय जे होइक। जम्बू में राति कैं विच्छूक उपद्रव गरमी मास में होइछ तथा कतहु कतहु सर्पहुक। प्राचीन समय क पर्वतस्थ दुर्ग (किला) अद्यावधि अछि, जाहि में आबहु सेना तोप इत्यादि रक्षित अछि। एक बेरि सिक्ख सब आक्रमण कैने छल परन्तु किला क बलैं पराजित भै नष्ट भ्रष्ट भै गेल। विचित्र किला क फाटक अछि, सम्प्रति पर्वतस्थ जम्बू नगर में अनेक राजपथ भै गेल अछि। उपरका राजपथ पर गेला सें समतल भूमि क शोभा अवर्णनीय देखि पड़ैत छल।

प्रायः वजीराबाद सें आगां डोगरा प्रदेश कहबैछ। एम्हरु का भाषा डोगरी, पंजाबी सें थोड़ेक मिलल जकां कहि सकैत छी। अवश्य सारस्वत ब्राह्मण डोगरे रुपवान् चतुर ओ बुद्धिमान् होइत छथि। श्रीमान् काश्मीराधिपति क पार्श्ववर्त्ती पुरोहितादि वैह लोकनि छथि। तत्प्रान्तीय लोक बलिष्ठ ओ वीरो होइछ किन्तु परस्पर मत्सरता दोष बड़ भारी छन्हि, क्रमिक विद्याहु क प्रचार छन्हि किन्तु 'अपन मुँहक डाह भारी बलाय'। ओ प्रान्त सब यवनमय छल, ततै हिनका सबहि में आचार विचार बहुधा बनल छन्हि, सब देश में कुल क अपेक्षा छैक, सैह एतहु। वस्त्रावरणादि अधिकांश मुसलमानीए कही तें अत्युक्ति नहिं, परन्तु उच्च कुलज ब्राह्मण वा ब्राह्मणी देव पितृ कार्य में धोतीअहि क व्यवहार करइछ, स्त्री में लज्जा छैक। स्त्री में सुन्दरता क आधिक्य एहिओ व्यभिचार क प्राबल्य नहिं, ई क्षत्रिय-स्वतन्त्र धर्मनिष्ठ राजाक प्रभाव थिक। राजा में विलासिता होएब भारी बलाय, से जम्बू राज्य में नहिं, बुझना गेल, जम्बू सें काश्मीर धरि वारांगनाक संचार नहिं देखना गेल। जम्बू राज्य क धर्मखाता पृथक्, मन्दिर, देवालय, सड़क, पूल, धर्मशाला हिन्दू-मुसलमान क पृथक् अछि। सबहिक निरीक्षक

Scanned by CamScanner

सत्र नियत अछि । अतः पर श्रीमान् महाराज ओ श्रीमती महारानी नित्य नैमित्तिक दान पुण्य करैत छथि तकर गणना फराके । श्रीमान् ओ श्री मती क संग देश वा विदेश में अनेक भृत्यवर्गादि ब्राह्मण, क्षत्रिय, सेना, पलटन रहैत छन्हि, सबहि पर आर्द्र दृष्टि, क्यौ दुःखी जनु रहौ, बहुधा लोकक परिचय, नित्य कुमारी ओ बटुक क वस्त्र दक्षिणादि सँ पूजार्चनादि देखल । प्रत्येक नित्य नियम क समय बाँटल । पूजन समय मध्य दिनान्तर कै हमरहु जैबाक अवसर भेटैत छल । ब्राह्मण में एतबा भक्ति जे देवतार्चनादि हेतु राखल फूल, माला, नैवेध, इत्यादि से पूजाक समय में जँ मन भै गेल तँ गोटेक गोटेक फूल वा मालै उठाय समापवर्ती ब्राह्मण क ओतै अर्पण कै दैत छलाह, जतै अपन हाथ नहिँ पहुचैत छलन्हि ततै पूजा करैनिहार ब्राह्मण द्वारा । श्री १०८ महादेवक पार्थिव लिंग क हेतु माटि सानल राखल, जे अपनहि हाथ सँ बनबैत छलाह । ताहि काल में जे कथा वार्त्ता करी से सब शास्त्र संगते । गोटेक गोटेक श्लोक जे पढ़थि से कनेको अशुद्ध नहिँ । तत्रत्य पुजेगरी पूजा क काल में बैह, नित्यदान लैह सब लैत ओ पुरोहितहु क अंश तथा अकिंचन ब्राह्मणहु कैं भेटैत छलैक परन्तु अन्य समय में ओ सब राजपार्श्ववर्त्ती मोसाहेब १०-५ टाका दैनिक क कथा कोन, एकाध महोदय प्रतिदिन ३०० सँ ५०० टाका धरि दैनिक देवार्पित लै श्रीमान् क प्रीति-पात्र छथि, एक राजगुरुओ छथि, पूजान्त्य में चरण स्पर्श पूर्वक हुनका प्रणाम करैत छथिन्हि किन्तु ओ स्त्री पुत्रादि रहित भेला क कारणें उदासीन अतएव स्वामी जी प्रसिद्ध आडम्बर रहित व्यक्ति छथि । वजीराबाद सँ आगाँ एकटा स्यालकोट नामक स्टेशन अछि, ताहि ठाम सँ जम्बू राज्य बहुत दूर प्रायः नेपाल क पश्चिम भाग धरि चल गेल अछि । एहि राज्य में अनेक गोर्खालीओ पलटन में देखना गेल, पंजाबी सिक्ख क स्थाने थिकैह । एम्हर सर्वत्र माथ खाली ककरो नहिँ, बहुधा मुरेठा सबकेँ, मुसलमान कैं टोपी ओ कतहु कतहु खाली माथ जँ यात्रा इत्यादि में देखौ तँ अशुभ बुझइछ, देश देश क चालि थिक, प्रायः देहो खाली नहिँ । निरर्थक लड़ब, झगड़ा करब नहिँ छैक । जतै जतबा मेल छैक ततै ततबा सुख छैक, हमरा जनैत सबसँ अधिक ईर्ष्या, द्वेष, विरोध इत्यादि दुर्गुणता क खानि हमरे देश अछि जतै दिन राति व्यग्र भैओ मनुष्य सुखी नहिँ; एहि प्रान्त में किछु स्त्री क प्राबल्य बुझना गेल परन्तु से पुरुषहिक दोष तथा समाज में चलल छैक वा अनेकधा विचारला सँ किछु गुणो बुझना जाइछ । हम जाहि समय में जम्बू गेल छलहुँ ताहि समय मध्य नगर में जंगी पहरा पड़ैत छलैक कारण प्लेग भेला सँ बहुत लोक नगर कें छाड़ि

Scanned by CamScanner

देने छल, तखन डकैती जकाँ चोरि होएवा पर भेलैक कि लगले जंगी पलटन क पहरा। राति में १० वजला उत्तर क्यौ नगर में प्रविष्ट नहिं होमै पावै, वस, नखन की, सव वन्द भै गेलैक। जखन राजा के लंक रक्षा क चिन्ता होइतैक तखन कतहु ई सव नहिं भै सकैछ। एहू प्रान्त में जें कतहु कतेक मुँहवो लोक देखल त निरुद्योगी वाभने भाइ। एहि जाति कें विशेषतः हमरा देश में पहिने वड़का फटाटोप, कनेक कोनो वस्तु जात उठैवा पठैवा क चर्चा करू त लगले कहि उठताह जे इः! हम राड़ थिकहुँ, परन्तु जें कनेक लोभ देखाय दिऔन्हि तखन कोनो विचारे नहिं "सर्वकर्मारम्भे विनियोगः"। टाका क लोभें धर्म कर्म जाति ओ सन्ततिक कनेको विचार नहिं, धुर रे अभगला!!

ता० २२-५-२२ ज्येष्ठ कृष्णैकादशी सोम दिन प्रातः ८ बजैत हमहुँ तापी (ताप्तती) नदी मे स्नान कै एक ठाकुरजी क मन्दिर में दर्शनार्थ ऐलहुँ। ओतहि महिसीक ज्यौ० श्री केशव चौधरि सँ वार्तालाप करैत छलहुँ तावत् १० बजबाक समय छल श्री मान् क यात्रा सूचक तोप क सलामी होवै लागल २१ तोप क महाशब्द भै स्पेशल श्रीमान् स्थान स्थान में नित्य नियमादि करैत काश्मीर यात्रा कैलन्हि। हमरहु हेतु हमर प्रिय छात्र कें कहलथिन्ह जे सुखपूर्वक हिनका काश्मीर लै अबिहुन्हि। तदनुसार राति क ट्रेन सँ हमहुँ अपन दल बल सहित बिदा भै ओकरा प्रात दिन १० बजैत रावलपिण्डी पहुँचलहुँ। रावल क अर्थ योगी, साधु, पिण्डी क अर्थ स्थान, झोपड़ा। प्राचीन समय में तीर्थयात्रादि करै क हेतु साधु, सन्त, यती, उदासी आबि आबि ततै रहैत छलाह। एक धर्मशाला में डेरा कै स्थिर भै विचारल गेल जे जँ समीप में गोटेक जलाशय रहैक तँ ततै जाय स्नानादि सब क्रिया सम्पन्न होइत। पुछारी कैला सँ समीपहि में एक नदी ताहि नदीक तट में अनेक अन्तःस्रोत जे बन्हावल छैक। ततै जाय आनन्द सँ सब सम्पन्न कै डेरा ऐलहुँ। जाहि स्थान में ई सब अछि, अनेक साधु, सन्त धुनी लगौने पड़ल। बजारु छाड़ि उपाय की, एम्हरुका बजारो यवनमय, किन्तु हिन्दू क पुछारी कैला सँ भेटैत छैक। किन्तु सब वस्तु कागज में देन जाएत। जँ वस्तुतः अपना देशक यथार्थ प्राचीन आचार कें तकैत छी तँ समस्त देशे विगड़ल जाइछ, सब देह झाँपि नीचा नङटे सन। परन्तु की हो रोकल जाए सकइछ? वस्तुतः जाहिदिन पैरहि लोक कतहु जाइत अवैत छल ताहि दिनक वचन अछि—"पथि शूद्रवदाचरेत्" अर्थतः बहुत नटखट त्यागि जँ शूद्रहु जकाँ निवहि चली तँ दोषावह नहिं। जतै मोटा जकाँ वान्हि काल्हि छलहुँ पटना आइ ऐलहुँ लाहोर ततै जँ तत्रत्य ब्राह्मण जकाँ कै निवहि जाइ तँ ततेक दोषावह नहिं;

Scanned by CamScanner

वा एकटा दृष्टान्त कैं सुनू —एक गोटै भलमानुसहि घरक एक विधवा अत्यन्त सदाचारिणी जेठ मास सँ काशी सँ देश कै विदा भेलिहि। संग में अनेको लोक छलन्हि। जतै जतै अधिक काल गाड़ी कैं विलम्ब होइक, आन आन लोक आवश्यकतानुसार खाए पीवै। हुनकहु पुछन्हि तँ कहलथिन्हि जे आगे माँ? गाड़ी पर सँ उतरि विनु नहैने कोना पानि पीब, खैबाक कोन कथा। नेना भुटका कहलकन्हि जे दीदी! हम इनार सँ भरि आनि दैत छी, पीब? नहिं प्यूलन्हि भुजफ्फरपुर में, समस्तीपुर अबैत कहलथिन्ह जे मुसलमानहु क पानि दै प्राण बचाबह, पश्चात् कतबो पानि पीड़े क पानि देन जाय तृष्णा निवृत्तिए नहिं, पश्चात् वमन होवै लगलन्हि। बहुत कठिनता सँ बचलिहि। यैह दशा भोग विचारि दुःखी भै ओ प्राण रक्षार्थ कागजहि पर क मधुर, हलुआ, सोहारीओ खैनहिं। ई सब भै राति ओतहि रहि तकरा प्रातः ता० २४-५-२२ कै लारी मोटरपर थोड़ेक राज क कर्मचारी ओ ४ गोटे हमहुँ छलहुँ। हम आगाँ ड्राइवर क लग बैसावल गेलहुँ। दिन १२ आगाँ आगाँ पर्वत कैं देखैत जाइत जाइत पहुँचलहुँ। उपर चढ़ैत कनेको नहिं बुझि पड़ै जे कतेक उपर चढ़ि गेलहुँ परन्तु जखन पर्वत क किनार ताकी तखन क्षुब्ध भै जाइत छलहुँ। एना होइत पहिल द्वार पर मोटर रोकल गेल। ओतै जाच होइत छैक, परन्तु कतेक राज कर्मचारी सबहि सम्बन्धी मित्र सब अपसर, तँ जनसंख्या गनि प्रति व्यक्ति छौ आनाक हिसाब सँ दै पुनः आगाँ आगाँ चढ़ैत गेलहुँ, दोसर फाटक धरि चढ़ितहि गेलहुँ। मध्यक शोभा-पर्वतक मूल सँ शिखर धरि लोक स्थान स्थान में खेती करैत अछि, झरना क पानि सब ठाम अपन अधीन, ताहि सँ कतहु हर बहैत, कतहु हरिअर धानक बीया आँखि कैं जुड़बैत, कतहु कतहु गाए चरैत, कतहु घोड़ा बान्हल, घर पहाड़ी विचित्र, कतहु कतहु गोरा पलटन क खीमा खसल, कतहु कतहु गोटेक सुन्दर रमणीय अंग्रेजक बंगला, कतहु कतहु बैलगाड़ी अबैत, कतहु घोड़ा गाड़ी जाइत, मोटर, पैदल, घोड़ा पर इत्यादि अद्भुत —स्थान स्थान पर बाजार विषकूट पर्वत पर्वत पर मिसरी ओ हिन्दुअहु क दोकान ओ सब वस्तु भेटैत छलैक। परन्तु जे अधिक खाथि वा पानि पीवथि हुनका लोकनि कैं उतरै पुतरै क अवकाश ताकै पड़न्हि, जे लोकनि पाछाँ बैसल छलाह हुनका सब कैं धूआँ धूरी अधिक लगन्हि ताहि सँ कतेको गोटै ओऐ वोए कैलन्हि इत्यादि, मुँह अद्भुताकार देखि पड़न्हि, हमरो दुइ मूर्ति ओही स्थिति में छलाह।

चढ़ितहि जाइत छलहुँ कि एक स्थान सँ अत्यन्त ठंढा बसात बहै लागल, कतहु कतहु नाना फूलक सुगन्धि, नीचाँ सँ उपर धरि बड़े बड़े सुखे उच्च

गाछ देखि पड़ै, कतेको बड़का गाछ जे ऊपर धरि गेलहुँ; दोसर अड्डा में पहुँचि पुनः थोड़ेक दूरि जाय, एक नदी हाहा करैत बहुत नीचाँ में बहैत देखि पड़लिहि। ताही नदी क किनार दै होइत नीचाँ शनैः शनैः उतरैत जाइत छलहुँ कि तेसर अड्डा में ऐलहुँ। ओ नदी वितस्ता, दोसर नाम आइ काल्हुक पाश्चात्य विज्ञ में प्रसिद्ध अछि। एहि पार में अंग्रेजी अड्डा, पुनः पुल क दोसर भाग में जम्बूक श्रीमान् महाराज क अड्डा, दुनू पार्श्व में जाच कैल गेल, लोक उतरि उतरि अपन अपन यथारुचि जलपानादि कैलक। पुनः किछु दूरि धरि चलि ओही क्रमें उतरै लगलहुँ। अतः पर मार्ग नदी क किनारहि किनार, दूइ मोटर चलै योग्य। कारण मध्य मध्य में ओम्हर सँ मोटर, घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी आदि रहल छल ओ एम्हर सँ हमरा लोकनि जा रहल छलहुँ सुख पूर्वक, कतहु कक्करहु अवरोध नहिं। सर्वत्र सड़क मजबूत बढ़ारल सिक्त कैल, कतहु सिचल जाइत, कतहु मरम्मति होइत देखि पड़ैत छल। कतहु कतहु घोड़ा पर चढ़लो लोक देखि पड़ैत छल। एना होइत होइत सन्ध्या होइत होइत वितस्ता ओ कृष्ण गंगा क संगम पर ऐलहुँ। ओतै सुन्दर सुन्दर दुकान, खाद्य सब यथार्थ भेटैत। वितस्ता में पुल छलैक, पुल पार कै कृष्ण गंगा क तट पर जाय स्नानादि कैल। कृष्ण गंगा क जल बहुत स्वच्छ तथा बहुत ठंढ़ा, नदी में काष्ठ क ढ़ेरि बहल चल जाइत छल। जे सब बन्दोवस्त छलैक। जगह जगह पर अपन अपन ठीकेदार रोकि लै लैत छल, ओहि में नम्बर देल रहैत छलैक, राति ओतहि सब यथारुचि खा पीवि विश्राम कैलक, प्रातः स्नानादि कै सब मोटर पर सवार भै चलल। ओतै श्रीमान् काश्मीर नरेशक फौजक एक अड्डा छल। किछु दूरि जाय पुनः जाच जा धरि जाच होइत छलैक ता मार्ग बन्द। अंग्रेज क मोटर हो वा हिन्दुस्तानीक एके रंग सबहि क जाच देखना गेल। पुनः दिन ११ बजैत एक स्थान में पहुँचि मोटर स्थिर भेल। ओतहु वेस बाजार। सब उतरि उतरि भोजन कैलक, भोजन कै १२ बजैत सब विदा भेल। जाइत जाइत एक स्थान में अनेक तम्बू खसल छल ओ मोटर पचीसो ठाढ़। ज्ञात भेल जे श्रीमान् काश्मीर आब एतै सँ चलताह। सिपाही आदि आदि सब केँ घेड़ने छल। १०-१५ मिनट क बाद देखल जे श्रीमान् सवार भेलाह कि सब मोटर हू हू करैत चलल। थोड़ेक दूर जाय २-३ बजैत समतल पर ऐलहुँ, एक भाग में बड़े बड़े सघन वृक्षमय पर्वत ओ दोसर दिशि वितस्ता नदी बहुत वेग सँ बहैत। दोसरहु भाग में विशाल पर्वते। मध्य मध्य में जे कतहु जगह ताहि में नदी क किनार धरि खेती (धान क) पूर्ण दुनू पार्श्व में। कतेक ठाम पर्वत क मूल

Scanned by CamScanner

सँ उपर धरि हरियर कचोर-देखना अबैत छल। कतहु कतहु झरना बहैत, धान रोपल जाइत, हर वहैत, इत्यादि आष.ढ़ी विनु वर्षाक तथा ठंढ़ा बसात वहैत। कोनहु दिशि उपर आँखि दी तँ वर्फ सँ पर्वत शिखर चमकैत अननुभूते आनन्द क अनुभव होइत छल। ता—क्रम बुझना गेल जे आब काश्मीर-भूमि में ऐलहु, कारण वितस्ता क वेग थोड़, एक स्थान में बिजुली क कल लागल, दोसर भाग नदी क पेट केँ साफ करैक हेतु कल, कतेको स्थान में नदी क दुर्मल क ढेरि भीँड़ जकाँ। तकहु काठ क अधिक तोड़ जोड़ लागल, कतेको पाथर क पजेवा सँ थोड़ेक पजेवाहु क एहन एहन सुन्दर भवन सब देखै लगलहु। पुछारी कैला सँ, ताहि ठाम सँ नगर २५ वा ३० मील। थोड़े क दूरि पर जैतहि दूनू पार्श्व में एहि प्रान्त में 'सफेदा' कैं प्रसिद्ध गाछ लगावल, जे बड़े सुरेब ओ उच्च ओ ओकर त्वचा उज्जर होइत छैक ३-४ हाथ क अन्तर दै लगाबल जे वस्तुतः राजमार्ग क सुयश केँ आकाश लगबैत छल, मार्ग प्रस्तर खण्ड सँ ठोकल, इंजिन सँ सर्वत्र चूरल, सिचल, जगह जगह पर सड़क क नोकर सब ठाढ़। एहि अवसर में विहाड़ि आयल। मोटरो वेग सँ चलल, सड़क पर 'सफेदा' क सुखाएल डारि तथा कतहु कतहु काँचो डारि ठारि खसै लागल जकरा लुटै क हेतु काश्मीरी नीच जाति स्त्री पुरुष, छौँड़ा छौँड़ी, सड़क क दुनू कात पाँति, भरि ठेहुन, भरि जाँघ में खसल डारि कैं लुटैत ताहि रों देखि पड़ल जेना आम फड़बाक समय में विहाड़ि ऐला सँ लोक दौड़ि दौड़ि आम लुटैत अछि, गोटेक स्थान में श्रीनगर दिशि सँ घोड़ागाड़ी चल अबैत, कथौ घोड़ा पर चढ़ल जे घोड़ा दौड़ले चल अबैत। एहि अवस्था में बहुत सावधानता सँ मोटर ड्राइवरो मोटर कैं नहि रोकि चलौने जाइत छल। हमरा भय जे जँ कतहु पैँघ डारि वा गाछे खसल तँ अनर्थ भेल। ता आगाँ में खसल एकटा पैँघ मोट डारि जे सड़क कैं रोकि देलक किन्तु झट २-३ गोटै आबि ओकरा घिसिआए किनार लगौनक। पश्चात् विहाड़िओ निवृत भेल ओ मोटरो सब कैं लेने श्रीनगर पहुँचल कि कुली क झुण्ड दौड़ल। लोक सब अपन अपन गठरा उतारि उतारि नीचाँ कैलक। हमहु सब किछु लेआए एक सनातन धर्मशाला क दोसर महल में जाए डेरा देल। तावत् श्रीमान् कतेको दूर मार्गहि में छलाह, ताहि दिन ता० २५-५-२२ छल। रातिभरि किछु मधुरादि सँ सन्तुष्ट भै विश्राम कै प्रातः काल होइत उठि देखै लगलहु तँ टकटक रोग आबि गेल। भोजन क चिन्ता नहि तखन स्नानादि की।अहा ! राजमार्ग केहेन स्वच्छ; सतत मोटर गाड़ी, साइकिल, पदाति,

Scanned by CamScanner

विचित्रे विचित्रे छटा क लोक सुन्दर, गौरवर्ण, टहलैत घुमैत देखि पड़ै लागल। दोकन सब बहुत स्वच्छतर तथा पाश्चात्य लोक क तोपाभोदार्थ पदार्थ सत्र विस्तृत, शाल, दोशालाक काश्मीर में कथी की। अनेक जन्तुक सलोम चर्म लटकल। सर्वत्र राजहि क पुलिस प्रबन्धार्थ ठाढ़, जम्बू वा काश्मीरमें कतहु अंग्रेजी प्रबन्ध नहिं परन्तु अंग्रेज बहुतो डेरा दै रहैत छथि। नाना बाग बगीचा रंग विरंग क फूल सँ चकचकाइत, बड़का बड़का गुलाब, माधवी लता सँ छारल अनेक स्थान अद्भुत सौरभ सँ मन कें मुग्ध कै दैत छल। वस्त्राडम्बर पूर्ण, काश्मीरी लोक विचित्र खोल जकाँ पहिरने रहैछ, जे अत्रत्य पंडित नामधारी लोक कें पाग पहिरने उक्त खोल कें धारण कैने देखल। एतै दरिद्र मुसलमानहुँ में वैह खोल परन्तु ताहि में म्लेच्छता स्पष्ट झलकैत छलैक, सिक्खो जाति किछु अछि परन्तु ओ लोक अपन पंजावी आकारहि में बुझि पड़ैत छल, गौर वर्ण ओ सुन्दरता तँ पूर्ण परन्तु व्यापक तथा, लावण्य नहिं। भाषा की कहू, हिन्दी कोनहुना बुझि जाइत छल।

प्राचीन काल में क्षत्रिय राज्य छल। ताहि समय मे ब्राह्मण विद्वान् अनेको छलाह, जे राजतरंगिणी सँ बुझि सकैत छी। पश्चात् मुसलमान आबि-आबि जे उपद्रव कैलक से वर्णन सँ बाहर अछि, × × × × तखन की यवनमय भै गेल। ई भूमि देखला सँ निश्चय भै सकैछ जे केहन सिद्धपीठ काश्मीर भूमि अछि। पुनः क्षत्रिय राज्य भेल ताहि समयक कथा राजतरंगिणी में अछि जे मिथिला सँ कौल ओ दक्षिण सँ भट्ट मङावल गेलाह। अद्यावधि यवनाचारलिप्त भै ओ ओ लोकनि कौलभट्ट कहबैत छथि। ओतेक आब संस्कृतक विद्वता नहिं परन्तु एखन धरि अस्त नहिं भेल अछि, अनेक अत्रत्य संस्कृतक पंडित सँ संस्कृतहि में वार्तालाप भेला सँ बुझना गेल। ताः २७ वा २८-५-२२ कें श्रीमान् काश्मीराधीशक शुभागमन नियत छल। प्रातःकालहि सँ फौज, पलटन, अश्ववार, पदातिदल प्रधान राजमार्ग दै राजागमन सूचना सूचित करैत जकाँ चलल, जकर पाछाँ खच्चरक झुंड ततेक देखल जे अन्यान्य समस्त राजधानी में ओतेक घोड़ो होइक वा नहिं। ई सब फौजक सहायक छल। ई सब देखि बुझना जाइत छल जे आइ श्रीनगर राजधानी सनाथा होइतिहि अतएव सौभाग्यक झलक लक्षित भै रहल अछि, अस्तु।

स्नानादि कृत्य कै ११ बजैत अपन वासा सँ राजागमन कौतुक दर्शनार्थ

बहरैलहुँ। प्रथमतः वितस्ता(झेलम) क तट पर आबि किछु तर्क वितर्क कै पुल (जे मीरकदल नाम सँ प्रसिद्ध अछि) पर होइत ड्योढ़ी क अभिमुख भेलहुँ। तत्रत्य पुल विचित्र काष्ठ क पूर्ण विस्तृत, मध्य में अढ़ाय हाथ उच्च काष्ठहि क उत्तम जंगला जे पुल कैँ दुइ भाग कै देने छल। पुलक दुनू प्रान्त में पुलिस अनवरत ठाढ़ भेल ई तर्क करैत जे गमनागमन क विरुद्ध क्यौ नहिँ कै रहल अछि, कारण पुल पर ई नियम देखना गेल जे एक भाग दै जाय ओ दोसर भाग दै आवै। जोड़ी, मोटर, टाङा, साइकिल सबहि क येह नियम देखना गेल। जँ तकर विरुद्ध क्यौ चलैत छल तँ पूर्ण डाँटि दौड़ि ओकरा यर्थाथ मार्ग पर दै चलवैत छल किन्तु ककरहु सँ घूस लैत वा ककरहु उपर अत्याचार करैत नहिँ बुझना गेल। प्रथमतः ड्यौढ़ीक प्रधान फाटक पर गेलहुँ, किन्तु परिचित मुख नहिँ देखि तथा सर्वत्र कड़ा पहरा देखि आगाँ जायव सँ निवृत्त भै घुमलहुँ। पुनः उक्त पुल पर होइत वितस्ता क ताहि तट कैँ धैल जाहि दिशि अनेक जन साधारणक ठट्ठ छल तथा समृद्ध नगर निवासी लोक सब रंगविरंग क नौका (नाव) पर सँ कौतुक देखैक हेतु अबैत जाइत छल। एवं होइत-होइत एक आध घड़ी में वितस्ता नानाविध नौका सँ आक्रान्त भै गेलिहि। नौकहु पर पुलिसक पूर्ण प्रबन्ध बुझना जाइत छल जाहि सँ ककरहु कोनो अभिघात नहिँ लगैक। एतवा होइत श्रीनगर पैलेस दिशि फौज आबि आबि ठाढ़ होवय लागल ओ दरबार राज कर्मचारीओ लोकनि सजि-धजि उपस्थित होवै लगलाह। वितस्ता क दिशि प्रधान घाट पर बहुत सुन्दर श्री गजाधर नाथ भगवान्‌क मन्दिर अछि। ओ घाटो तेहन मनोहर प्रस्तर मय वनल अछि जे देखनहिँ दृष्टि कैँ पकड़ि राखै। अन्यान्यो राज भवन दिशि अनेको घाट सब अविच्छिन्न बान्हल अभिरमणीर अछि, जाहि घाट सबहिक शोभा कैँ बढ़बैत विशाल राज भवन तथा सुप्रबन्ध सँ स्वागतार्थ ठाढ़ भेल तत्रत्य गवर्नर काश्मीर देशीय, अनेक जम्बू प्रान्तीय ओ पंजावी इत्यादि बड़े स्वच्छ मुरेठा बन्हने अनेक राजकर्मचारी सब तथा पंक्तिशः ठाढ़ भेल सैन्यदल समागत श्रीमान् जम्बू काश्मीर नरेश क सुसज्जित नौका दिशि टकटकी लगौने जेना पृथ्वी पर उतरल देवगण साक्षात देवराजक दर्शनार्थ उपस्थि भेल होथि तहिना उत्कंठित सब बुझना जाइत छल। इत्यादि भै रहल छल कि वैण्ड बाजल ओ स्वच्छ नौका क झुण्ड सव लोक कैँ कृतार्थ करै लागल, एवं शनैःशनैः ओ सब ताहि घाट पर आयल। स्वागतार्थ राजपुरुषगण उपस्थित छलाह। ततै श्रीमान् उतरलाह, यथानियम स्वागत लै श्री १०८ गजाधर नाथ क दर्शनादि कै राजभवन में प्रवेश करैत अपन राजपताका देखाए जनता

Scanned by CamScanner

कें कृतार्थ करैत। श्रीनगर क श्री वस्तुतः सनाथा बुझि पड़ै लगलिहि। सबलोक घुमि-घुमि अपन-अपन स्थान गेल। श्री भगवान् सूर्यदेवो अस्ताचल क आश्रयण पर उद्यत भेलाह।

तकर प्रातःकाल सँ श्री नगर चहल पहल होइत बुझना गेल। हमहुँ विचार कैल जे काल्हि आयल छथि, श्रीमान् कैँ ज्ञाते छन्हि अतएव एक दिन अन्तर कै उपस्थित होएव, तैँ ताहि दिन डेरहि पर रहि तकर प्रात १० बजैत अपत भोजन पर्यन्त क्रिया सम्पन्न कैने संनद्ध छलहुँ ता एक अन्तरंग परिचित लै जैबाक हेतु ऐलाह ओ हुनक संग विदा भेलहुँ। प्रधान सिंह फाटक जेना आकाश कैँ छुवैत हो तहिना वड़े पैघ ओ वड़े विचित्र ढंग सँ वनल छल जकर उपमा देवाक कोनो वस्तुए नहिँ। ततःपर वड़े भारी प्रांगण देखना गेल जकरा मध्य मेँ कोनो पैघ आफिस छल। पुनः दोसर फाटक जाहि ठाम बड़े-वड़े दीर्घकाय संगीन लेने पहरादार ठाढ़ भेल। हमरा लै गेनिहार कैँ इच्छा छलन्हिए तथा एहि जनहु कैँ अन्तःकरण मेँ उत्कट अभिलाषा लागल छलन्हि तैँ श्री नगर क सुखमय राजभवन क दर्शनक हेतु अन्तःपुरहि दै विदा भेलहुँ। अन्तः पुरक प्रांगण (विस्तृत आङ्न) देखै योग्य विकसित पुष्पक सुगन्धि सँ मन कैँ स्वस्थ कै देलक। सर्वत्र किनारै किनारै माधवीलता ओ समंजरीक अंगूर क लता सँ वेष्टिते जकाँ बुझि पड़ैत छल। बड़े वड़े विशाल भवन, जकर उपमा देवा योग्य किछु जम्बूअहिक राजभवन, ताहि मेँ काष्ठ क कारीगरी ओ विचित्र विचित्र रंग कैल चित्र देखि मन मुग्ध भै जाइत छल। स्थान स्थानमेँ वड़े-वड़े फाटक, प्रत्येक स्थान मेँ दोवगली वर्दी लगौने कराल संगीन बन्दूक लेने पहरादार सर्वत्र ठाढ़। जाहि पार्श्व मेँ श्रीमान् रहैत छथि, ताहि मकानक निचला भाग मेँ ५० टा फौजी सिपाही वर्दी इत्यादि लगौने संगीनदार वन्दूक सब कैँ गुच्छ लगाय लगाय कयौ वैसल कयौ ठाढ़ भेल देखना गेल। कोनहु ठाम मच्छिमारा खड़गिदरी सिपाही नहिँ देखल। ई सब देखैत श्री गजाधरजीक मन्दिर क लग जाय जूता वाहर कै दर्शन कैल, एम्हरुका देवदर्शन खाली हाथैँ नहि, गोटेक टाका, आठ आना, चारि आना देनहि; परन्तु दिन मेँ लगले पुजेगरी चरणोदक, नैवेद्य, माला, केसरी मेँ रंगल एकटा धड़िया जकाँ माथ मेँ लपेट क हेतु नुआ दै देइछ। हम एक साधारण अतिथि जकाँ वजावल छलहुँ किन्तु जम्बू सँ एतैधरि टाका पन्द्रहेक देवमन्दिर मेँ गेल हो तँ असम्भव नहिँ, आगाँ जे किछु।

Scanned by CamScanner

विद्यमान श्रीमान् महाराज प्रतापसिंह महोग्रप्रताप क पितामह महाराज गुलाब सिंह कें स्वप्न भेलन्हि जे हमरा तों आनि काश्मीर में स्थापित करह, तोहरा काश्मीर भै जैतहु। गया में ताहि कारीगरहु कें स्वप्न भेलैक जे अमुक स्थान में शालग्राम शिला छैक, लै आन, एकर गदाधर देवक मूर्ति बनाए जम्बू क महाराज गुलाब सिंह कें दिहोन्हि, जे तोहरा भेटौक, लिहें। उक्त महाराज साधारण ठाठ सँ गया जाय अन्वेषण करौलन्हि, कतबो कहल जाइक तँ ओ कारीगर हिनका साधारण महाजन जानि देवे नहिं करन्हि। इहो अपन नामादि नुकौनहि छलाह। जखन ओहि कारीगर कें अदेय द्रव्य कहल गेलैक तखन लोभ में पड़ि दै देलकन्हि। जम्बू लै ऐलाह। ओतै सँ काश्मीर तखन भै गेलन्हि, कोना कोना भेलन्हि एना लिखल नहिं जाय। चतुर्बाहु श्री भगवान् नारायण क दिव्य मूर्ति छोटे प्रायः एक वा डेढ़ हाथ उच्च, परन्तु हिनके प्रति रूप जम्बू में स्थापित छथि, ओ प्रायः पैघ मनुष्यक क आकार क छथि। राजनगरक श्री १०८ तारिणी क प्रसंग चलाय स्वयं श्रीमान् देखैक हेतु कहने छलाह। मन्दिर क बाहर दशदिक्पाल क मूर्ति मन्दिरहिक दिवाल में स्थापित छथि। बाहर में औरो उत्तम उत्तम विचित्र प्रस्तर मूर्ति।

ड्योढ़ीक भीतरे कहि सकैत छी, वितस्ता क तट धरि बहुत उच्च दिवाल सँ आवृत, जकर फाटक पर तथा आनो कैक स्थान में किनारै किनारै उत्तम उत्तम तीनि तीनि महलक मकान ओ मध्य में सघन बदाम, गिलास, नासपाती, सेव, सतावरी इत्यादि क वन देखल, जे नीचाँ स्वच्छ झाड़ल। बहुतो वृक्ष सब पड़ल परन्तु सेव नासपाती क समय नहिं। आनो ठाम बहुतो देखल। एतै आम, वेल, बाँस नारिकेरि, सुपारी, कटहर, केरा ई सब नहिं होइछ। पीपर, बड़ ओ पाकड़ि क गाछ कतहु नहिं एहि स्थल में एतै चनार नामक गाछ होइछ। अत्यन्त शीतल छायादार बहुत विशाल होइछ एकर पात बड़का हाथ जकाँ पाँच टा आँगुर सन बहराएल होइत छैक, एकर प्रसंशा अंग्रेज सब बहुत कैने अछि, सर्वत्र नदी, नहर बाग ओ बगीचा सर्वत्र देखैवला, एकटा चनार क मोटाइ ५४ फीट खोधल छलैक, जाहि में बड़ा बड़ा लाट ओ लाटिनी क लिखल आखर देखल। वितस्ता तथा नहर में उत्तम उत्तम दूइ दूइ महल क नाव सब किनार क चनारक गाछ तर लागल, नाव पर ओकरे छाया में कुर्सी पर बैसल मेम, साहेब क्यौ अखबार पढ़ि रहल। क्यौ किछु लिखैत, क्यौ बाजा बजबैत इत्यादि आमोद विनोद करैत देखल, अतएव चनारक महिमा कतेक कहाँ धरि देखावल जाय।

Scanned by CamScanner

काश्मीरक राजपथ सन सुन्दर राजपथ प्रायः कतहु देखना नहिँ जायत। बहुधा कतेको दूर धरि सोझ देखना आओते, जकर दुनू पार्श्व मेँ 'सफेदा' क गाछ वा वेतहिक गाछ बराबरि देखि पड़त। 'सफेदा' क वकला उज्जर, सोझ ओ पूर्ण लम्बा होइछ। वेत छड़ीवाला नहिँ थिक, संस्कृत मेँ एकर नाम वेतस् वेतसी इत्यादि अछि, एकर बसात बहुत ठंढ़ा बसात बुझि पड़इछ ई सब वृक्ष एतहि होइछ। सड़क पाथर क टुकड़ा सँ ठोकल, सतत देखल जाइछ, दुनू समय मेँ सिचल जाइछ, टाङा, मोटर सतत चलैत रहइछ। बिनु वर्षाक एतेक जल एतहि देखल, परन्तु ताहि जलक विषय मेँ हमर तात्पर्य नहिँ। एतै नदी वितस्ता, अनेक पर्वतक झरना सँ कतेको धार सब बहइछ, नहरो कैक टा, एहि सब सँ अतिरिक्त अन्तः स्रोत सँ बड़े बड़े भारी झील सब अछि जे काश्मीरी भाषा मेँ 'डल' कहवैत अछि। जाहि मेँ कमल, सिघाड़, घेँचुल, सेमार, बड़का मोथा, औरी सन सन अनेक खढ़ सब देखना गेल। कतहु कतहु माछो छोट छोट देखना जाइत छल। एकटा नीलमत पुराणान्तर्गत कश्मीर महात्म्य हमरा श्रीमान्‌हि सँ भेटल अछि। यद्यपि पुस्तक वहुत अशुद्ध, तथापि कोनहु रुपैँ किछु काज चलि जा सकइछ। प्राचीन समय मेँ काश्मीर मध्य बड़े बड़े संस्कृत क विद्वान् कैयट, मम्मट, अमेन्द्र ? प्रभृति किन्तु यवन क आक्रमण सँ सब नष्ट भ्रष्ट भै गेल। किछु वँचल सँचल अछिओ। ब्राह्मण तँ आचार भ्रष्ट। संस्कृतहु क ज्ञाता अछि परन्तु वहुत थोड़ अंग्रेजी क धुरन्धर कतेको।

काश्मीर सँ ६-७ मील पूर्वोत्तर भाग मेँ आइ काल्हि हरिपर्वत नाम सँ प्रसिद्ध स्थान अछि, प्राचीन समय क प्रायः जहाँगीर क वनबावल किला अछि। ओकर दिवाल बड़े उच्च ओ चौडा कतेक जे दुइ रिसाला घोड़ा पर चढ़ि जा सकइछ। पर्वत शिखर पर पैघ किला अछि, एकर उत्तर भाग मेँ नीचाँ मध्य श्री गणेशादि ओ पूर्व भाग मेँ एक माइल पर श्री शारिका नाम्नी भगवती क स्थान अछि। ताहि सँ उपर किछु दूर धरि साहस कै चढ़लहुँ परन्तु आगाँ साहस नहिँ भेल, उतरि आन आन देवालय क दर्शन कैल।

ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी मेँ एतै सँ २२-२४ मीलक दूरि पर एक क्षीर भवानी देवी क स्थान अछि। हमरहु एकटा नाव भेटल। स्वयं श्री ५ मानो विदा भेलाह। सन्ध्या होइत १२-१४ मील पर सरकारी डेरा क हेतु अनेक पटमंडप

Scanned by CamScanner

खसल छल ओतै उतरि सब कृत्य कै १० बजैत राति मे विदा भेलहुँ। अनेको नाव जा रहल छल। ३-४ बजैत अनेक नाव क झुण्ड मे पहुँचलहुँ। अनेक घोल घाल होइत उक्त स्थानक तट पर लागल। भृत्य कैं संग लै एक डेढ़ मील जाय धान पानि सँ भरल स्थान मे एकठाम कनेक शुष्क भूमि भेटल। पश्चात् दन्त धावनादि कै स्नान क हेतु विदा भेलहुँ। अत्यन्त जन संघर्ष बजार, श्रीमान्‌हुक तम्बू, साम्याना, गलीचा ई सब विस्तृत। सर्वत्र सिपाही, पुलिस, इत्यादि घुमैत एतै यवन क गमनागमन नहिँ। झरना में जाय स्थानादि देखै लगलहुँ। चारूकात नहर, मध्यं में हाथ दशेक चौड़ा ओ हाथ पचासेक लम्बा कुण्ड। मध्य में मन्दिर छोट। ताहि में विद्यमान श्रीमान् क स्थापित देवी क मूर्ति। एहि कुण्ड क नाम क्षीर भवानी क स्थान। एकर चतुर्दिक्षु पण्डा सब बैसल। जे जाय से यथाविभव पण्डा क द्वारा पूजनादि कै दूध, मधुर, पुष्पादि कुण्ड मे चढ़ावै। एतै वनपुदीना बहुत होइत छैक, ताहि सँ मह मह करैत बुझि पड़ै किन्तु देखि नहिँ पड़ै। पश्चात् देखल-सिनुआरि सन पात होइछ, जतेक एतद्देशी लोक आबै सब चढ़ैवा लै हाथ में लेने अबै। निरर्थक दनूफ जकाँ सर्वत्र स्वच्छन्द। तकर पात, वनगुलाव; आनो आन पुष्पादि सँ कुण्ड क जल भरले जकाँ, लोक कुण्ड क जल देखै जे केहन छैक। अत्रत्य लोक क कथा कोन, जे श्रीमानो कहने छलाह जे अनेक रंग क होइत छैक, तदनुसार लोक कैं फलो, जँ कारी वा नील जल होइक तँ महामारी जकाँ कोनो उपद्रव होइत छैक।

महामारी जकाँ क तात्पर्य जे कोनहु प्राचीन काल में महामारीओ देवी काश्मीर देखै ऐलाहि, परन्तु अत्रत्य लोक कैं कोनो उक्त देवी क अन्वेषण नहिँ, पश्चात् मलाहिनि बनि माछ वेचै लगलिहि, जे क्यौ लेऐ ओ खाए से छुट्टी, कारण मत्स्य मांस क प्रचार एतहु। पश्चात् एक वृद्ध तान्त्रिक हुनका (मलाहिनि कैं) वजाय कहलथिन्हि जे हमरहु एहि पाथर भरि दैह, शाल ग्राम शिला सन ओ पाथर। कतवौ माछ चढ़ावथि माछ क पलरा उपरे। तखन ओ देवी लज्जित भै कहलथिन्हि जे हम अहाँ कैं न्योत दैत छी, ओ कहलथिन्हि जे हमरा १००० विद्यार्थी छथि। ओहो स्वीकार कै लेलयिन्हि। पश्चात् तान्त्रिक दुइ श्री वटुकभैरव कैं लेने पहुँचैत दुनू वटुक देव—गुरु ! वड़ भूख लागल अछि। ललले ओ मलाहिनि कहलथिन्हि जे घरहि आउ, हे येह लिअ खाउ, कहैत सब सामग्री लगले चाढि बुढ़िया कैं जेना नेना सब खैंवा लै नोचैत छैक तहिना बुढ़िया मलाहिनि कैं नोचि अकच्छ कै देल। तखन अति व्याकुला

भै उक्त तान्त्रिक बाबाक शरण जाय कहै लगलथिन्हि जे हम हारि मानल, जाइत छी। ललले दुनू बटुक आँचर धै किछु खोआउ खोआउ कहि पकड़ि लेलथिन्हि। पश्चात् ओ तान्त्रिक हुनका सँ हस्ताक्षर कराए लेलथिन्हि जे आब हम कहिओ नहिँ आएब। ताहि दिन सँ एतै महामारी नहिँ। यद्यपि मुसलमानी राज्य समय में रतुका तेपहरिया सब काहुंओ कहिओ विसूचिका कँ बजवितहु अछि परन्तु महामारी नहिँए, प्लेग कँ पर्वत खा जाइछ अतएव काश्मीर में एहू रोग क प्रताप नहिँ।

ई क्षीर भवानीक स्थान 'सुदर्शन चक्र' कहवैछ। विद्यमान श्रीमान् जखन पूजा करै क हेतु ऐलाह तखन हमरहु बजाय अपन नित्य पूजा कै क्षीर भवानी क पूजा क हेतु ताहि स्थान क निकट गेलाह, हमरा संगहि कैने छलाह। अनेको घड़ा दूध ओ गोटे क मन मिसरीओ देल गेल। पानिक रंग कनेक उजरे सन छलैक। ओतै एकौटा मुसलमान घेर क बीच में नहिँ आवै, केवल काश्मीरी ब्राह्मण ओ ब्राह्मणीक भीड़ तथा राजकर्मचारी जम्बू प्रान्त क लोक, आन जे क्यो आस्तिक छल हो। काश्मीरी स्त्री अति सुन्दरी गंभीर स्वभाव ओ सबहिक आँखि पैघ पैघ नीचाँ खसल, नाना रंग क वस्त्र ओ आभूषण लगौ ने। ओतै एकौटा चाँइ क नाम नहिँ। की सुन्दर क्षत्रिय राज्य क प्रबन्ध। एकौटा निकृष्ट लोक नहिँ बुझना गेल। ओतै सँ मध्यह्न समय में विदा भै पुनः चल अवैत रही ता एकठाम देखल जे एक स्वच्छ ओ अतिशीतल जल दोसर धार सँ अवैत कतेको दूर धरि द्विधा विभक्त जल देखना गेल नावहि पर सँ स्पर्शादि कैल। पुनः अवैत अवैत संध्याकाल साढ़े आठ बजैत श्रीनगर क समीप अवैत राजभवन क लगहि में पुलिस सँ नाव रोकल, समस्त वितस्ता धार रंग विरंग क नाव सँ भरल ओ दूनू पार्श्व तथा नाव सब अनेक दीपावली सँ चकमक करैत छल। कँक टा नाव आतसवाजी क सामग्री सँ लादल छल, राजभवन क तट पर पलटन ठाढ़, रातें १० बजैत श्रीमान् राजभवन सँ वहरैलाह कि वैण्ड वाजल, आतसवाजी आरंभ भेल। कँक दनसुहिया डेङी दीपावली क सड़क बनि विचित्र ढंग सँ नचैत छल। गुब्बारा, महतापी, फुलझड़ी, बमगोला आदि कतेको छुटल। अनेक अंग्रेज स्कूल कालेज क पढ़निहार ओ उठौनिहार नगर प्रसिद्ध लोक सब नाव पर छल, ११ बजैत समाप्त भेल। १२ बजैत डेरा पर ऐलहुँ ओ भोजन करैत दूइ वाजल।

Scanned by CamScanner

एक दिन श्रीनगर सँ ६-७ मील श्री वालादेवी क स्थान क दर्शन करै गेल छलहुँ। बड़े बड़े विशाल देवदारु ४ गाछ एक में मिलल अछि। ताहि में सटल भग्न अनेक मूर्ति सब देखल। एके प्रस्तर क पटरी में अधोऽधः कैक मूर्ति, लगले देखला सँ निश्चय नहिं होइछ जे कोन देवता क मूर्ति थिकन्हि। तत्रत्य पण्डा कहलक जे एहि गाछ क तर में कुण्ड अछि, एहि कुण्डक जल एतै सँ आध मील (अनुपलब्ध)

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना-८००००१

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

		मूल्य साधारण	— सजिल्द
तुरस्क-कथा (आख्यायिका) श्री विनयगोपाल झा (अनुवादक)	—	५.००	७.००
जीवन-भूमि (उपन्यास) मूल : पर्ल एस० बक अनुवाद : श्यामानन्दन	....	६.००	८.५०
जीवन झा-रचनावली (नाटक) श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (सम्पा०)	....	८.००	१०.००
उमापति (जीवनी) डॉ० रामदेव झा	....	५.००	६.५०
आत्मकथा (जीवनी) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा अनुवाद : श्री सुशील झा	....	७.००	९.००
स्मृति-सन्ध्या (संस्मरण-संग्रह) श्री मोहन भारद्वाज (सम्पा०)	....	७.५०	९.५०
सांख्यशास्त्र (दर्शन) पं० दुर्गाधर झा	—	८.००	११.००
भारतक भाषा-सर्वेक्षण (मैथिली) मूल : जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अनुवाद : श्री कुलानन्द मिश्र श्री मोहन भारद्वाज	—		१६.००
कवीश्वर चन्दा झा (आलोचना) डॉ० अमरनाथ झा	—		१७.५०

Scanned by CamScanner